सत्यमेव जयते

सूचना और प्रसारण मंत्रालय

भाग—I

वार्षिक रिपोर्ट

1994-95

विषय सूची

अध्याय	1	वर्ष—एक दृष्टि में	1
अध्याय	2	योजना निष्पादन	12
अध्याय	3	संगठन	19
अध्याय	4	आकाशवाणी	24
अध्याय	5	दूरदर्शन	38
अध्याय	6	फिल्में	52
अध्याय	7	पत्र सूचना कार्यालय	64
अध्याय	8	भारत के समाचारपत्रों के पंजीयक	67
अध्याय	9	प्रकाशन विभाग	69
अध्याय	10	क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय	72
अध्याय	11	विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय	77
अध्याय	12	फोटो प्रभाग	81
अध्याय	13	गीत और नाटक प्रभाग	83
अध्याय	14	गवेषणा, संदर्भ और प्रशिक्षण प्रभाग	86
अध्याय	15	भारतीय जनसंचार संस्थान	88

परिशिष्ट

I.	मंत्रालय का संगठनात्मक चार्ट	91
II.	1994-95 तथा 1995-96 का योजना और गैर-योजना बजट का विवरण	93
III.	मंत्रालय में बकाया लेखा-परीक्षा रिपोर्टों की सूची	101
IV.	1995-96 की अवधि में सम्भावित नए आकाशवाणी केन्द्रों की सूची	104
V.	विविध भारती और आकाशवाणी के प्राथमिक चैनलों के विज्ञापनों से प्राप्त राजस्व	106
VI.	दूरदर्शन प्रसारण केन्दों की सूची (1994-95)	107
VII.	1994 में प्रमाणित की गई फीचर फिल्मों की सूची	111
VIII.	भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार की गतिविधियों से संबंधित आंकड़े	112
IX.	पत्र सूचना कार्यालय—क्षेत्रीय एवं शाखा कार्यालयों की सूची	113
X.	क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय के प्रादेशिक और क्षेत्रीय कार्यालयों की सूची	114
XI.	विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय द्वारा 1993-94 में समाचार-पत्रों को जारी किए गए विज्ञापनों का ब्यौरा (भाग-II)	117

अध्याय-1

वर्ष—एक दृष्टि में

1.1.1. सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार की नीतियों, योजनाओं और परियोजनाओं पर व्यापक सूचनाएं उपलब्ध कराता है और आकाशवाणी तथा दूरदर्शन नेटवर्क की सेवाओं को संचालित करता है। मंत्रालय की मीडिया इकाइयां विकास की दिशाओं के बारे में लोगों को जागरूक बनाने में लगी हुई हैं ताकि सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों को लागू करने में जनसाधारण का सहयोग सुनिश्चित किया जा सके।

1.1.2. सूचना और प्रसारण मंत्रालय की इलेक्ट्रॉनिक, मुद्रित, फिल्म तथा अंतर्वैयक्तिक मीडिया इकाइयां इस प्रकार है : आकाशवाणी (ऑल इंडिया रेडियो), दूरदर्शन, पत्र सूचना कार्यालय, प्रकाशन विभाग, विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय, भारतीय समाचार पत्रों के पंजीयक, फोटो प्रभाग, क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय, गीत और नाटक प्रभाग, गवेषणा, संदर्भ एवं प्रशिक्षण प्रभाग, फिल्म समारोह निदेशालय और फिल्म प्रभाग। इसके अलावा राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम, राष्ट्रीय फिल्म संग्रहालय, भारतीय जनसंचार संस्थान और केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड भी मंत्रालय से संबद्ध हैं। देश में प्रेस को बेहतर बनाने तथा समाचार-पत्रों में और अधिक व्यावसायिकता लाने के लिए मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में भारतीय प्रेस परिषद नाम की एक स्वायत्त संस्था भी कार्य कर रही है। विभिन्न मीडिया इकाइयों की वर्ष 1994-95 की गतिविधियां आगे के अनुच्छेदों में दर्शाई गई हैं। इसके बाद प्रत्येक मीडिया इकाई के बारे में अध्यायों में विस्तार से चर्चा की गई है। रिपोर्ट के अंत में दिये गये परिशिष्टों में आंकड़ों और सूचियों के रूप में जानकारी दी गई है।

आकाशवाणी

1.2.1. 31 दिसम्बर 1994 तक आकाशवाणी के प्रसारण केन्द्रों की संख्या 175 है। वर्ष के दौरान 13 आकाशवाणी केन्द्र और खोले गये। इनमें से छह एफ.एम. ट्रान्समीटर वाले स्थानीय रेडियो स्टेशन हैं। इसके अलावा आकाशवाणी की विदेश प्रसारण सेवा के विस्तार के लिए बंगलौर में पांच-पांच सौ किलोवाट क्षमता के चार सुपर पावर ट्रान्समीटर भी चालू किये गये हैं। इनके चालू हो जाने से बंगलौर का शार्ट वेव ट्रान्समीटर कॉम्प्लेक्स दुनिया का सबसे बड़ा प्रसारण केन्द्र बन गया है। वर्ष के दौरान कलकत्ता और पणजी से एफ.एम. स्टीरियो प्रसारण सेवा शुरू की गई।

1.2.2. देश में रेडियो प्रसारण में सुधार के लिए वर्ष के दौरान कम शक्ति के मीडियम वेव ट्रान्समीटरों के स्थान पर उच्च शक्ति के ट्रांसमीटर लगाए गए। ईटानगर के एक किलोवाट क्षमता के मीडियम वेव ट्रान्समीटर के स्थान पर 100 किलोवाट का उच्च शक्ति मीडियम वेव ट्रान्समीटर लगाया गया। मद्रास के 2.5 किलोवाट के मीडियम वेव ट्रान्समीटर के स्थान पर 20 किलोवाट का मीडियम वेव ट्रान्समीटर लगाया गया। भोपाल, बम्बई, मद्रास, कलकत्ता, हैदराबाद और शिमला में कम शक्ति के शार्ट वेव ट्रान्समीटरों की जगह 50 किलोवाट क्षमता के उच्च शक्ति शार्ट वेव ट्रान्समीटर लगाए गए। जयपुर, त्रिरूअनंतपुरम में 50 किलोवाट के उच्च शक्ति शार्ट वेव ट्रान्समीटर स्थापित किए गए। इसके अलावा ईटानगर, तूरा, पासीघाट और जबलपुर में स्टूडियो सुविधाओं में सुधार और अनका आधुनिकीकरण किया गया।

1.2.3. अगरतला, गंगटोक और सिलचर में स्थानीय समाचारों के प्रसारण को बढ़ाने के लिए पांच-पांच मिनट के तीन और समाचार बुलेटिन शुरू किये गये। आकाशवाणी चंडीगढ़ केन्द्र से शाम को पांच मिनट की समाचार समीक्षा का प्रसारण शुरू किया गया।

1.2.4. दिल्ली से हर रविवार को हिन्दी में लोकरूचि समाचारों का एक बुलेटिन प्रसारित किया जाता है। आकाशवाणी के 13 क्षेत्रीय समाचार एकांश भी अपने-अपने क्षेत्र की भाषा में लोकरूचि समाचार प्रसारित करते हैं।

1.2.5. आकाशवाणी के दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता और मद्रास केन्द्रों की प्रसारण अवधि में इस तरह से विस्तार किया गया है कि प्रत्येक केन्द्र में सुबह छह बजे से लेकर मध्यरात्रि तक एक-न-एक ट्रान्समीटर से प्रसारण होता रहता है। राष्ट्रीय चैनल के प्रसारणों के रूप में आकाशवाणी की सेवाएं चौबीसों घंटे उपलब्ध होने लगी हैं।

1.2.6. आठवीं योजना के दौरान आकाशवाणी के कुछ चुने हुए केन्द्रों में काम्पैक्ट डिस्क के इस्तेमाल की पहल की गई है। 10 सितम्बर, 1994 को बम्बई में मल्टी ट्रैक रिकार्डिंग स्टूडियो ने काम करना शुरू किया। आकाशवाणी का यह अपनी तरह का पहला स्टूडियो है।

1.2.7. आकाशवाणी के कलकत्ता और पणजी केन्द्रों में निजी निर्माताओं को एफ.एम. चैनल पर कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए टाइम स्लाट आबंटित किए गए। निजी प्रसारण के लाइसेंस वालों को कलकत्ता में नौ घंटे और पणजी में चार घंटे दिए गए।

1.2.8. आकाशवाणी, दिल्ली से 14 जनवरी, 1995 से रेडियो पेज़िंग सेवा शुरू की गई। इस तरह आकाशवाणी एशिया क्षेत्र का ऐसा पहला प्रसारण संगठन बन गया है जिसने एफ.एम. ट्रान्समीटर के जरिए यह सेवा शुरू की है।

दूरदर्शन

1.3.1. वर्ष के दौरान दूरदर्शन ने देश के विभिन्न भागों में एक कार्यक्रम निर्माण केन्द्र और 112 ट्रान्समीटर स्थापित किये। इस तरह दूरदर्शन के देश भर में 32 कार्यक्रम निर्माण केन्द्र और अलग-अलग क्षमता के 692 टेलीविजन ट्रान्समीटर हैं। दूरदर्शन अब इनसेट सैटलाइट अपग्रह के जरिए 13 चैनलों (दूरदर्शन-1 से दूरदर्शन-13) पर कार्यक्रमों का प्रसारण करता है। इसके लिए देश में दूरदर्शन के विभिन्न केन्द्रों पर अपलिंकिंग (यानी उपग्रह संपर्क) सुविधा विकसित की गई है। फिलहाल दूरदर्शन के तीसरे चैनल (डी.डी. 3) के प्रसारण स्थगित हैं लेकिन उनके शीघ्र ही फिर शुरू होने की संभावना है।

1.3.2. दूरदर्शन ने इस वर्ष पूर्वोत्तर क्षेत्र के दर्शकों के लिए अंग्रेजी में राष्ट्रीय समाचार बुलेटिन शुरू किया।

1.3.3. दूरदर्शन के सभी प्रमुख केन्द्रों ने सोमवार से शुक्रवार तक सप्ताह में पांच दिन आधा-आधा घंटे के कृषि तथा ग्रामीण विकास संबंधी कार्यक्रमों का प्रसारण शुरू किया।

1.3.4. दूरदर्शन की क्षेत्रीय भाषा उपग्रह सेवा का पुनर्गठन किया गया और विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में कार्यक्रमों की अवधि बढ़ाई गई। अलग-अलग भाषाओं के लिए स्वतंत्र उपग्रह चैनलों की व्यवस्था की गई और संबद्ध केन्द्रों से सीधे उपग्रह संपर्क सुविधा उपलब्ध कराई गयी।

1.3.5. दूरदर्शन ने डी.डी. 2 चैनल पर रोजाना दस मिनट का उर्दू समाचार बुलेटिन शुरू किया। डी.डी. 1 पर हर रविवार को संस्कृत में 10 मिनट के साप्ताहिक संस्कृत समाचार बुलेटिन का प्रसारण भी शुरू हुआ।

1.3.6. दूरदर्शन के अंतर्राष्ट्रीय चैनल की औपचारिक शुरूआत 14 मार्च, 1995 को हो गई है। इस चैनल पर भारतीय मानक समय के अनुसार सुबह 9 बजे से दोपहर 12 बजे तक सोमवार से शुक्रवार तक कार्यक्रम प्रसारित होंगे। इन्हें दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ (सार्क) के देशों सहित करीब 40 एशियाई देशों में देखा जा सकेगा। खाड़ी देश, मध्य-एशियाई देश और पश्चिम एशिया तथा दक्षिण पूर्व एशिया के देश भी इसमें शामिल हैं। हालांकि यह चैनल इन क्षेत्रों में रहने वाले प्रवासी भारतीयों के लिए है, लेकिन इसके प्रसारण के दायरे में आने वाले देशों के अन्य दर्शकों के लिए भी यह मनोरंजन और सूचना की दृष्टि से काफी उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

फिल्म प्रभाग

1.4.1. फिल्म प्रभाग ने अप्रैल 1994 से नवम्बर 1994 तक समाचारों पर आधारित 16 फिल्में, 29 डाक्यूमेंटरी/लघुफिल्में/ छोटी फीचर फिल्में बनाई। इनमें से 28 फिल्में प्रभाग ने स्वयं बनाई जबकि एक फिल्म उसने स्वतंत्र फिल्म निर्माता से बनवाई।

1.4.2. फिल्म प्रभाग द्वारा बनाई गई फिल्मों में राष्ट्रीय एकता, गैट समझौता, ग्रामीण विकास जैसे राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर फिल्में शामिल हैं। इनका उद्देश्य सरकार के विभिन्न कार्यक्रमों और योजनाओं का समुचित प्रचार करना है। फिल्म प्रभाग ने स्वर्गीय राजीव गांधी और श्री बरद उकील जैसे सुप्रसिद्ध व्यक्तियों के जीवन पर आधारित फिल्में भी पूरी कीं।

1.4.3. स्वर्गीय राजीव गांधी की 50 वीं जयंती के अवसर पर फिल्म प्रभाग ने 45 मिनट की डाक्यूमेंटरी तैयार की। इसे दूरदर्शन पर दिखाया गया। सभी भारतीय भाषाओं में इसे डब किया गया और देश भर के सिनेमाघरों में इसे दो भागों में दिखाया गया। महात्मा गांधी की 125 वीं जयंती के सिलसिले में फिल्म प्रभाग ने उनके बारे में युवा पीढी के लिए 'यूथ इज द साल्ट ऑफ द नेशन' नाम की फिल्म बनाई। प्रभाग गांधी जी पर दो और फिल्में भी बना रहा है। इनके नाम हैं – 'गांधी जी-थ्रू आइज ऑफ द कार्टूनिस्ट' और 'नमक की कंकड़ी' (डांडी यात्रा पर आधारित)।

1.4.4. ग्रामीण विकास पर विभिन्न सूचना माध्यमों के जरिए प्रचार अभियान चलाने के कार्यक्रम के अंतर्गत फिल्म प्रभाग ने ग्रामीण लोगों के कल्याण/उत्थान के लिए ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों के बारे में छह विशेष फिल्मों का निर्माण कार्य शुरू किया है।

फिल्म समारोह निदेशालय

1.5. फिल्म समारोह निदेशालय ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत भारत में विदेशी फिल्मों के अनेक फिल्म सप्ताह आयोजित किए। भारतीय फिल्मों को विदेशों में लोकप्रिय बनाने के अपने उद्देश्य को प्राप्त करने की दिशा में भी निदेशालय ने कदम उठाये और सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम तथा इसके अलावा भी विदेशों में भारतीय फिल्म सप्ताह आयोजित किये। राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त फिल्मों का प्रदर्शन जून, 1994 में आयोजित किया गया। वर्ष के दौरान राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार समारोह भी आयोजित किया गया। इस साल का दादा साहेब फालके पुरस्कार जाने माने गीतकार श्री मजरूह सुल्तानपुरी को दिया गया। भारत का 26 वां अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह बम्बई में 10 से 20 जनवरी 1995 तक आयोजित किया गया।

राष्ट्रीय बाल तथा युवा फिल्म केन्द्र

1.6. राष्ट्रीय बाल तथा युवा चलचित्र केन्द्र का मुख्य उद्देश्य सिनेमा तथा टेलीविजन के जरिए बच्चों तथा किशोरों को स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करना है। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए केन्द्र फिल्मों तथा टेलीविजन धारावाहिकों का निर्माण, वितरण और प्रदर्शन करता है। केन्द्र ने एक फिल्म और टेलीविजन धारावाहिक 'पोटली बाबा की' की 20 और कड़ियां तैयार कर ली हैं। एक अन्य धारावाहिक 'ट्वायज' का निर्माण जारी है और इसके शीघ्र ही पूरा हो जाने की संभावना है। केन्द्र इस वर्ष दो और फिल्मों का निर्माण शुरू करेगा।

भारतीय राष्ट्रीय फिल्म संग्रहालय

1.7.1. सिनेमा और इसके सभी स्वरूपों के संरक्षण का उत्तरदायित्व भारतीय राष्ट्रीय फिल्म संग्रहालय का है। संग्रहालय की स्थापना फरवरी 1964 में सूचना और प्रसारण मंत्रालय की स्वतंत्र मीडिया इकाई के रूप में की गई थी।

1.7.2. अप्रैल से 31 दिसम्बर, 1994 तक संग्रहालय ने 109 नई फिल्में, 43 डुप्लीकेट प्रिंट, 92 निःशुल्क जमा की गई फिल्में, 50 वीडियो कैसेट, 419 पुस्तकें, 541 स्थिर चित्र (स्टिल्स), 172 गीत-पुस्तिकाएं, 96 पैम्फलेट/फोल्डर, 68 पोस्टर, 200 स्लाइड और 40 प्री-रिकार्डेड कैसेट जमा किये।

1.7.3. भारतीय राष्ट्रीय फिल्म संग्रहालय देश में फिल्म संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए देश भर में अपने करीब 100 सक्रिय सदस्यों को अपनी वितरण लाइब्रेरी के जरिए फिल्में उपलब्ध कराता है। इसके अलावा वह फिल्मों के बारे में भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान और अन्य शैक्षिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं के सहयोग से परिचयात्मक तथा शैक्षणिक पाठ्यक्रम चलाता है। इस साल पुणे में पांच सप्ताह का एक पाठ्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें विभिन्न व्यवसायों और क्षेत्रों के 70 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अन्य केन्द्रों पर भी कई अल्पकालीन पाठ्यक्रम आयोजित किए गए।

1.7.4. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी भारतीय राष्ट्रीय फिल्म संग्रहालय ने साल के दौरान प्रमुख फिल्म प्रदर्शन कार्यक्रम के लिए कई श्रेष्ठ पुरानी फिल्में उपलब्ध कराईं। अगस्त में अडूर गोपालकृष्णन की फिल्मों के पुनरावलोकन के लिए लिंकन सेंटर में 'स्वयंवरम्' और 'कोडियात्तम' फिल्में भेजी गई। सत्यजित राय की फिल्मों के पुनरावलोकन के लिए नीदरलैंड के फिल्म म्यूजियम को अक्तूबर में 'तीन कन्या', 'रवीन्द्रनाथ टैगोर' और 'देवी' फिल्में भेजी गई। अक्तूबर में शेक्सपीयर पर अंतर्राष्ट्रीय समारोह के सिलसिले में लंदन के नेशलन फिल्म थियेटर में किशोर साहू की 'हैमलेट' प्रदर्शित की गई। नवम्बर में लंदन फिल्म समारोह के लिए 'विद्यापति', 'अमृत मंथन' और 'दायरा' फिल्में भेजी कई। लेकिन भारतीय राष्ट्रीय संग्रहालय का सबसे महत्वपूर्ण आयोजन इटली के तेरहवें पोरदेनोन मूक फिल्म समारोह में भारतीय मूक फिल्मों का पुनरावलोकन था। इस अवसर पर "लाइट ऑफ एशियाः इंडियन साइलेंट सिनेमा, 1912–1934" नाम की पुस्तिका भी प्रकाशित की गई।

1.7.5. भारतीय राष्ट्रीय फिल्म संग्रहालय में इस दौरान जो जाने माने व्यक्ति आये, उनमें पौलेण्ड के सुप्रसिद्ध फिल्म निर्माता क्रजीताफ ज़ानुसी और हंगरी के फिल्मकार इस्तवान गाल शामिल हैं।

भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान, पुणे

1.8.1. भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान सूचना और प्रसारण मंत्रालय से अनुदान प्राप्त करने वाला एक स्वायत्त संस्थान है। यह फिल्म-निर्माण तथा टेलीविजिन साफ्टवेयर तैयार करने जैसी गतिविधियों का प्रशिक्षण देता है। संस्थान की प्रबंध परिषद, इसके प्रशासन, नियंत्रण, निर्देशन और सामान्य देख रेख के लिए उत्तरदायी हैं। इस समय श्री अडूर गोपालकृष्णन इसके अध्यक्ष हैं।

1.8.2. वर्ष के दौरान 10 विदेशी छात्रों सहित 102 छात्र फिल्म विभाग के अंतर्गत प्रशिक्षण ले रहे थे। टेलीविजन विभाग ने भारतीय सूचना सेवा के प्रोबेशनरों के लिए फिल्म और टेलीविजन के बारे में प्रारंभिक जानकारी देने वाला अल्पकालीन पाठ्यक्रम तथा फिल्म विभाग के अंतिम वर्ष के छात्रों के लिए वीडियो पाठ्यक्रम संचालित किया। साल के दौरान वीडियो संचालन तथा प्रकाश व्यवस्था के बारे में तीन पाठ्यक्रमों पर आधारित कार्यशालाएं आयोजित की गई। लेकिन स्टूडियो की मरम्मत और वातानुकूलन संयत्र तथा उपकरणों आदि को बदलने जैसे कार्यों की वजह से दूरदर्शन कर्मचारियों के लिए टेलीविजन निर्माण और तकनीकी संचालन का नियमित प्रारंभिक पाठ्यक्रम नहीं चलाया जा सका।

राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम (एन.एफ.डी.सी.)

1.9.1. राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम फिल्मों से संबंधित कार्य, जैसे-फिल्मों का निर्माण, उनका आयात-निर्यात, वितरण, वीडियो कैसेटों की बिक्री और कम लागत के सिनेमा थियेटरों के निर्माण के लिए धन की व्यवस्था आदि करता है।

1.9.2. राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम और दूरदर्शन ने अच्छी फिल्में तथा टेली-फिल्में बनाने के लिए जो समझौता किया था उसके अतंर्गत नवम्बर 1994 तक 8 फिल्मों का निर्माण पूरा किया गया। जाने-माने फिल्म निर्देशकों के निर्देशन में अच्छी पटकथाओं पर आधारित फिल्मों के निर्माण की योजना के तहत अपर्णा सेन के निर्देशन में 'उर्मि मुखेर' नाम की बांग्ला फिल्म का निर्माण शुरू किया गया।

1.9.3. वर्ष के दौरान (नवम्बर 1994 तक) निगम ने सात फीचर फिल्मों, 24 वीडियो फिल्मों और टेलीविजन धारावाहिकों की 69 कड़ियों का निर्माण किया। निगम ने 74 लाख रूपये मूल्य की फिल्मों और उनसे संबंधित सामग्री का निर्यात भी किया।

1.9.4. राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम ने टेलीविजन के मैट्रो चैनल पर फीचर फिल्मों के प्रसारण के लिए फिल्में उपलब्ध कराने के उद्देश्य से फिल्म-बैंक बनाया है। वर्ष के दौरान निगम को दूरदर्शन के राष्ट्रीय नेटवर्क पर हर शुक्रवार और महीने के चौथे शनिवार को फीचर फिल्म के लिए स्लाट उपलब्ध कराया गया।

1.9.5. निगम अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से दो फिल्में भी बना रहा है। इनमें से एक है--"मेकिंग आफ ए महात्मा"। यह राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम और दक्षिण अफ्रीकी ब्राडकास्टिंग कार्पोरेशन के सहयोग से बन रही है। दूसरी फिल्म "जय गंगा" भारत और फ्रांस के सहयोग से बनायी जा रही है। इनके शीघ्र पूरा होने की संभावना है।

1.9.6. निगम ने हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य के लिए बम्बई में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की 'नगर राजभाषा क्रियान्वयन समिति' की शील्ड जीती।

केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड

1.10.1. भारत में कोई फिल्म तभी दिखायी जा सकती है जब उसे सिनेमेटोग्राफ अधिनियम, 1952 के अंतर्गत गठित केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड का प्रमाण पत्र हासिल हो। इस बोर्ड में अध्यक्ष और 25 अन्य सदस्य होते हैं। इसका मुख्यालय बम्बई में है। इसके 9 क्षेत्रीय कार्यालय हैं जो बंगलौर, बंबई, कलकत्ता, कटक, दिल्ली, गुवाहाटी, हैदराबाद, मद्रास और तिरूअंनतपुरम में स्थित हैं। (गुवाहाटी कार्यालय ने अभी काम करना शुरू नहीं किया है।)

1.10.2. 1994 में बोर्ड ने कुल 2,880 प्रमाण पत्र दिये। बोर्ड द्वारा प्रमाणित 754 भारतीय फीचर फिल्मों में से 534 को "यू" प्रमाण पत्र, 91 को "यू ए" प्रमाण पत्र और 129 को "ए" प्रमाण पत्र दिया गया। साल के दौरान प्रमाणित विदेशी 177 फीचर फिल्मों में से 26 को "यू" सार्टिफिकेट, 21 को "यू ए" सार्टिफिकेट और 130 को "ए" प्रमाण पत्र दिया गया।

1.10.3. इस साल 22 भारतीय फीचर फिल्मों और 20 विदेशी फीचर फिल्मों को प्रमाण-पत्र नहीं दिए गये। इनमें से 16 को (12 भारतीय तथा चार विदेशी) संशोधित कर लिए जाने के बाद बोर्ड द्वारा प्रमाण पत्र दे दिऐ गये। इसी प्रकार दो भारतीय फीचर फिल्मों को फिल्म प्रमाणन एपैलेट ट्राइब्यूनल की अनुमति के बाद प्रमाण पत्र दिये गये। दिशा निर्देशों के उल्लंघन की वजह से सेल्यूलाइड फिल्मों में से 24384.55 मीटर फिल्में काटी गईं।

1.10.4. वर्ष के दौरान फिल्मों में हिंसा और अश्लीलता के अत्यधिक प्रदर्शन, विशेष रूप से अश्लील गानों के बारे में संसद के दोनों सदनों में बहस हुई। इस बहस में उठाये गये मुद्दों तथा सूचना और प्रसारण मंत्री द्वारा 11 मई, 1994 को माननीया महिला सांसदों और अन्य लोगों के साथ विशेष बैठक में दिए गए सुझावों के अनुसार कुछ महत्वपूर्ण निर्णय किए गए। इनमें फिल्मों को प्रमाण पत्र देने से पहले अनके गानों तथा नृत्य वाले अंशों को टेलीविजन पर प्रसारण के लिए प्रमाण- पत्र देने व बोर्ड और उसकी सलाहकार समिति में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ाने जैसे उपाय शामिल हैं।

पत्र सूचना कार्यालय

1.11.1. वर्ष के दौरान पत्र सूचना कार्यालय ने विभिन्न क्षेत्रों में मुद्रित तथा इलेक्ट्रॉनिक जन संचार माध्यमों के माध्यम से व्यापक प्रचार किया। इनमें आर्थिक उदारीकरण और नये आर्थिक उपायों की दिशा में सरकार की जोरदार पहल और उपलब्धियां, गुजरात और महाराष्ट्र के कुछ इलाकों में अचानक प्लेग के प्रकोप से उत्पन्न स्थिति से निपटने के उपाय, स्काई रेडियो सेवा की शुरूआत, रेडियो पेजिंग सेवा का प्रारंभ और जहाजरानी उद्योग से संबंधित गतिविधियां शामिल हैं। दिसंबर, 1994 में आयोजित विधान सभा चुनावों के परिणामों के बारे में जानकारी देने के लिए पत्र सूचना कार्यालय में निर्वाचन प्रकोष्ठ स्थापित किया गया जिसमें ग्राफिक, निर्वाचन क्षेत्रों के नक्शे जैसी कई नई बातें भी शुरू की गई। इसके अलावा नई औषधि नीति की घोषणा, उर्वरक के क्षेत्र में संयुक्त उपक्रम, खनन क्षेत्र में खोज और विकास कार्यो में विदेशी पूंजीनिवेश पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला, संयुक्त राष्ट्र का 50 वां स्थापना दिवस, महात्मा गांधी की 125 वीं जयंती के बारे में प्रचार पर भी विशेष जोर दिया गया। गैट-समझौते से देश को होने वाले फायदे की ओर ध्यान आकृष्ट करने तथा इस बारे में भ्रामक प्रचार को निष्प्रभावी बनाने के लिए अभियान भी चलाये गये।

1.11.2. पत्र सूचना कार्यालय ने 38,500 प्रेस रिलीज जारी की और समाचारों से संबंधित 1,065 चित्रों के 1,88,092 प्रिंट समाचार माध्यमों को उपलब्ध कराए। विभिन्न भाषाओं में 2,800 विशेष फीचर तथा महत्वपूर्ण विषयों पर 167 विशेष डाइजेस्ट जारी किए गए।

1.11.3. एशिया-प्रशांत (एस्केप) के लिए आर्थिक और सामाजिक आयोग के 50वें वार्षिक अधिवेशन का व्यापक प्रचार किया गया। इसके लिए एक विशेष मीडिया सेंटर बनाया गया। जी—15 शिखर सम्मेलन के लिए भी इसी तरह का मीडिया सेंटर खोला गया था।

भारतीय समाचार-पत्रों के पंजीयक

1.12.1. अप्रैल—नवम्बर, 1994 के दौरान समाचार पत्रों के पंजीयक ने प्रस्तावित समाचारपत्रों/पत्रिकाओं के 14,131 आवेदन पत्रों को निपटाया। इस अवधि में 1,487 समाचारपत्रों को पंजीकरण प्रमाण पत्र जारी किए गए। नवम्बर, 1994 तक भारतीय समाचारपत्रों के पंजीयक ने 1,012 समाचारपत्रों के प्रसार संख्या संबंधी दावों की जांच पूरी कर ली थी।

1.12.2. 30 मार्च, 1994 को आयात नीति की अधिसूचना जारी होने के बाद 27 अप्रैल, 1994 को समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के प्रकाशकों के लिए अखबारी कागज के कोटे के बारे में दिशा-निर्देश जारी किए गए। नवम्बर, 1994 तक 1,732 समाचारपत्रों/पत्रिकाओं को आर्हता प्रमाणपत्र जारी किये जा चुके थे। इनमें से 421 ऐसे थे जिनकी मानक अखबारी कागज की वार्षिक मांग 200 मैट्रिक टन से अधिक थी और 192 को ग्लेज्ड न्यूजप्रिंट के आयात के लिए प्रमाण पत्र जारी किए गए। 200 मैट्रिक टन तक की जरूरत वाले 890 समाचारपत्रों और पत्रिकाओं को स्टैण्डर्ड न्यूजप्रिंट का 88,892.28 मैट्रिक टन कोटा आबंटित किया गया। समाचारपत्रों/पत्रिकाओं के नए आवेदनों के आधार पर करीब 24,220 टन देसी अखबारी कागज आंबटित किया गया।

1.12.3. 1867 के प्रेस तथा पुस्तक पंजीकरण अधिनियम की समीक्षा और भारतीय समाचारपत्रों के पंजीयक के कार्यालय के कामकाज को चुस्त-दुरूस्त करने के लिए मंत्रालय ने 12 अगस्त, 1993 को प्रधान सूचना अधिकारी की उध्यक्षता में एक विशेष समीक्षा दल गठित किया। समीक्षा दल ने समाचारपत्र संगठनों और श्रम जीवी पत्रकारों आदि के प्रतिनिधियों के साथ कई बैठकें कीं। यह दल अपनी रिपोर्ट सरकार को दे चुका है जिसकी जांच की जा रही है।

प्रकाशन विभाग

1.13.1. इस वर्ष की सबसे महत्वपूर्ण बात सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय (अंग्रेजी) के सौवें और अंतिम खंड

का पूरा होना था। सम्भवतया यह कई खंडों में प्रकाशित होने वाली विश्व की सबसे बड़ी प्रकाशन परियोजना थी। 100 वें खंड की भूमिका प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिम्ह राव ने लिखी जिन्होंने 1 अक्तूबर, 1994 को नई दिल्ली में महात्मा गांधी के 125 वीं जयंती वर्ष समारोहों के सिलसिलें में इसका विमोचन भी किया। इसके अलावा प्रकाशन विभाग ने श्री मदन गोपाल की लिखी दयाल सिंह मजीठिया की जीवनी भी प्रकाशित की।

1.13.2. इस साल की एक और महत्वपूर्ण घटना भी प्रकाशन विभाग की प्रतिष्ठित हिन्दी साहित्यिक पत्रिका 'आजकल' का स्वर्ण जयंती वर्ष में प्रवेश। इस अवसर पर प्रकाशन विभाग ने पिछले पचास वर्षों में आजकल में प्रकाशित कुछ चुने हुए लेखों, कहानियों और कविताओं पर विशेषांक निकाला। विशेषांक के विमोचन के लिए प्रकाशन विभाग ने एक समारोह का आयोजन किया और हिन्दी के 40 जाने-माने साहित्यकारों के चित्रों का एलबम भी जारी किया। चित्रों का एलबम, प्रकाशन विभाग का इस तरह का पहला प्रयास था।

1.13.3: इस वर्ष प्रकाशन विभाग ने कई पुस्तक प्रदर्शनियां आयोजित कीं। इनमें नई दिल्ली के आइफैक्स हॉल में 2 से 8 अक्टूबर, 1994 तक लगाई गई प्रदर्शनी सबसे सफल रही। इसमें 5.33 लाख रूपये की बिक्री का कीर्तिमान बना। इसके अलावा विभाग ने नेशनल बुक ट्रस्ट और फैडरेशन ऑफ इंडियन पब्लिशर्स द्वारा आयोजित कई प्रदर्शनियों में भी भाग लिया।

विज्ञापन और दृश्य-प्रचार निदेशालय

1.14.1. विज्ञापन और दृश्य-प्रचार निदेशालय एक बहु-केन्द्रीय माध्यम प्रचार एजेंसी है जो अपने ग्राहक–मंत्रालयों, विभागों, स्वायत्त संस्थाओं और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की जन-संचार संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हिन्दी, अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं में मुद्रित माध्यम, प्रेस-विज्ञापन, दृश्य-श्रव्य प्रचार, बाह्य प्रचार और प्रदर्शनियों का आयोजन करता है।

1.14.2. अप्रैल से दिसम्बर, 1994 तक विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय ने नई आर्थिक नीति, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, ग्रामीण विकास, साक्षरता, मादक पदार्थों के दुरूपयोग की रोकथाम, एड्स तथा रंजित रोगों, नशाबंदी, पर्यावरण संरक्षण, उपभोक्ता संरक्षण, अपारंपरिक ऊर्जा स्रोत, महिला और बाल विकास, और राष्ट्रीय एकता तथा साम्प्रदायिक सद्भाव जैसे विभिन्न सामाजिक-आर्थिक विषयों पर प्रचार अभियान चलाये।

1.14.3. वर्ष के दौरान विभिन्न ग्रामीण विकास कार्यक्रमों पर व्यापक बहु-माध्यम प्रचार अभियान चलाया गया। निदेशालय द्वारा तैयार 'गांव विकास की ओर' नाम की प्रदर्शनी देश भर में ग्रामीण इलाकों में लगाई गयी। लाखों ग्रामीण लोगों ने इसे देखा।

1.14.4. गैट-समझौते के बारे में लोगों में जागरूकता लाने तथा इस संबंध में उनकी आशंकाओं को दूर करने के लिए प्रचार अभियान चलाए गए। गैट-समझौते के नतीजे के बारे में लोगों को समझाने के लिए निदेशालय ने विशेष प्रकाशनों की करीब 50 लाख प्रतियां छपवाई। पिछले तीन वर्षों में योजना कार्यो से प्राप्त प्रमुख उपलब्धियों को 'ए बोल्ड न्यू एरा' नाम की पुस्तिका के रूप में अंग्रेजी, हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में प्रकाशित किया गया।

1.14.5. प्लेग, मलेरिया और डायरिया के प्रकोप के दिनों विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय ने तत्काल कार्रवाई शुरू की जिनमें इन बीमारियों के बारे में सूचनात्मक मुद्रित सामग्री तैयार कर प्रभावित इलाकों को भेजी। इसके अलावा इन बीमारियों से प्रभावित इलाकों में विज्ञापन भी प्रकाशित करवाए गए। हरियाणा, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, उत्तर प्रदेश, पंजाब और दिल्ली में एड्स बीमारी के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिऐ व्यापक प्रचार अभियान चलाया गया।

1.14.6. भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला- 1994 के दौरान नई दिल्ली के प्रगति मैदान में निदेशालय ने स्वास्थ्य और कल्याण मंत्रालय के लिए 'छोटा परिवार, स्वस्थ परिवार' नाम की प्रदर्शनी आयोजित की। इसे सरकारी विभागों के वर्ग में 'शानदार प्रदर्शन के लिए' स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ।

1.14.7. भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह, 1995 के दौरान बंबई में भारत में सिनेमा के सौ वर्ष पूरे होने के बारे में एक विशेष प्रदर्शनी आयोजित की गई। इसमें भारतीय सिनेमा और इसके विकास के विभिन्न पहलुओं को प्रदर्शित किया गया।

1.14.8. हिन्दी, अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं में 568 प्रकाशनों की 1.64 करोड़ प्रतियां छापी गई। विभिन्न समाचारपत्रों और पत्रिकाओं में अनेक सामाजिक-आर्थिक विषयों पर करीब 13,224 विज्ञापन दिये गए। इनमें से 12,883 वर्गीकृत श्रेणी में तथा 341 प्रदर्शन श्रेणी में प्रकाशित हुए।

1.14.9. वर्ष के दौरान विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय ने 2,478 ऑडियो तथा 41 वीडियो स्पाट/अत्यंत लघु फिल्में तैयार कीं। इनका रेडियो पर 13,050 बार और टैलीविजन पर 92 बार प्रसारण हुआ। 48 वें स्वतंत्रता दिवस समारोह के सिलसिले में राष्ट्रीय एकता पर दो-मिनट का वीडियो स्पॉट 'कलम लिखती नहीं इतिहास' तैयार किया गया। 'पंचायती राज-अपना राज' विषय पर निदेशालय द्वारा बनाई गई 3–डी फिल्म का दूरदर्शन से प्रसारण हो रहा है। महिला समृद्धि योजना पर चार वीडियो स्पॉट भी बनाए गए। विज्ञापन और दृश्य प्राचार निदेशालय आकाशवाणी के लिए 6 लोकप्रिय धारावाहिक प्रायोजित कार्यक्रम भी बना रहा है। इनमें परिवार कल्याण पर 'हसीन लम्हे' और उपभोक्ता संरक्षण पर 'अपना अधिकार' प्रमुख है।

1.14.10. बाह्य प्रचार के अंतर्गत 436 होर्डिंग, 3,670 कियोस्क, 237 बैनर, 51,584 सिनेमा स्लाइड, 300 बाल पेंटिंग, 4,750 बस-पैनल, और 730 बस-क्यू-शेल्टर तैयार किए गए और देश भर में विभिन्न स्थानों पर प्रदर्शित किए गए।

1.14.11. विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय की 35 क्षेत्र प्रदर्शन इकाइयों (इनमें सात चलती-फिरती वाहन इकाइयां भी शामिल हैं) ने 400 प्रदर्शनियां लगाई जो कुल 1,700 प्रदर्शन दिवसों तक चलीं।

गवेषणा, संदर्भ और प्रशिक्षण प्रभाग

1.15.1. गवेषणा, संदर्भ और प्रशिक्षण प्रभाग, सूचना-प्रसारण मंत्रालय, उसकी मीडिया इकाइयों तथा उनके क्षेत्रीय कार्यालयों को सूचनाएं उपलब्ध कराने वाली एजेंसी के रूप में कार्य करता है। यह एक सूचना बैंक के रूप में कार्य करता है। यह एक सूचना बैंक के रूप में तो काम करता ही है, मीडिया इकाइयों को प्रोग्राम बनाने तथा प्रचार अभियान चलाने में सूचनाएं उपलब्ध कराने वाली एजेंसी के रूप में भी कार्य करता हैं। प्रभाग जन-संचार माध्यमों के क्षेत्र में नई-नई प्रवृत्तियों का अध्ययन भी करता है और सामयिक विषयों तथा जन-संचार के बारे में संदर्भ एवं प्रलेखन सेवा चलाता है।

1.15.2. अपने इन कार्यो को पूरा करने के लिए प्रभाग समाचारों से संबंधित पृष्ठभूमि सामग्री, सार्वजनिक महत्व के मुद्दों पर संदर्भ पत्र, सुप्रसिद्ध व्यक्तियों के जीवन परिचय, महत्वपूर्ण जयंतियों के सिलसिले में संदर्भ सामग्री, दो महत्वपूर्ण वार्षिक संदर्भ ग्रंथों--'भारत-एक संदर्भ ग्रंथ', और 'मास मीडिया इन इंडिया' के संकलन तथा जन-संचार पर नवीनतम प्रलेखन और संदर्भ सेवा का प्रयोग करता है। जन-संचार और सामयिक मुद्दों पर प्रलेखन सेवा राष्ट्रीय जन संचार पर प्रलेखन केन्द्र द्वारा उपलबध कराई जाती है जो गवेषणा, संदर्भ और प्रशिक्षण प्रभाग का अभिन्न अंग है।

1.15.3. प्रभाग भारतीय सूचना सेवा के अधिकारियों को प्रशिक्षण देने में भारतीय जन-संचार संस्थान

के साथ मिलकर कार्य कर रहा है। इस तरह जन-शक्ति नियोजन तथा विकास के क्षेत्र में मंत्रालय जो जोर दे रहा है उसी के अनुरूप प्रभाग अपने दायित्वों का निर्वाह कर रहा है।

1.15.4. 1994-95 में प्रभाग ने संदर्भ सामग्री की दो श्रृंखलाएं तैयार कीं। इनमें से एक स्वर्गीय राजीव गांधी की 50 वीं जयंती के सिलसिले में और दूसरी 'फोर्टी-एट इयर ऑफ प्रोग्रेस' (प्रगति का 48 वां साल) नाम से थी। बाद की श्रृंखलाओं में संघीय संविधान, बुनियादी ढांचे का विकास, जन-संचार, भूमि सुधार, पंचायती राज जैसे विषयों को शामिल किया गया। वर्ष के दौरान प्रभाग ने हिन्दी में पृष्ठभूमि सामग्री/संदर्भ पत्र तैयार करने के लिए नई इकाई गठित की।

फोटो प्रभाग

1.16. फोटो प्रभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय का एक अधीनस्थ कार्यालय है जो भारत सरकार के आंतरिक तथा बाह्य प्रचार के लिए श्याम-श्वेत और रंगीन-दोनों प्रकार के चित्र तैयार करता है। अप्रैल से नवम्बर, 1994 तक प्रभाग ने विभिन्न समारोहों/आयोजनों के सिलसिले में 2,200 अवसरों पर श्याम-श्वेत और रंगीन चित्र लिए और विभिन्न मीडिया इकाइयों तथा केन्द्र/राज्य सरकारों के विभागों को फोटो सप्लाई कर प्रचार संबंधी आवश्यकताओं को पूरा किया।

क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय

1.17.1. क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय का गठन 1953 में किया गया। उस समय समन्वित प्रचार कार्यक्रम के अंतर्गत जो संगठन बनाया गया था उसका नाम 'पंचवर्षीय योजना प्रचार संगठन' रखा गया और इसे सीधे सूचना और प्रसारण मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में रखा गया। बाद में दिसम्बर, 1959 में इसकी क्षेत्रीय इकाइयों की गतिविधियों पर निगरानी तथा नियंत्रण के लिए इसे पूर्ण निदेशालय के रूप में गठित कर दिया गया। इसका नाम 'क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय' रखा गया।

1.17.2. इस समय क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय के कुल 22 क्षेत्रीय कार्यालय और 258 क्षेत्र प्रचार इकाइयां है। इनमें 72 सीमावर्ती इकाइयां और 30 परिवार कल्याण इकाइयां भी शामिल हैं।

1.17.3. क्षेत्रीय इकाइयों ने राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सद्भाव, लोकतंत्र के प्रति निष्ठा, धर्मनिरपेक्षता, ग्रामीण विकास, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण (इसमें एड्स नियंत्रण भी शामिल है), मादक पदार्थों के दुरूपयोग की रोकथाम, नशाबंदी, दहेज उन्मूलन और बाल-विवाह रोकने जैसे महत्व-पूर्ण सामाजिक विषयों पर विभिन्न प्रचार माध्यमों के जरिए प्रचार अभियान चलाए।

1.17.4. अप्रैल से सितम्बर, 1994 तक क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय की इकाइयों ने 24,648 फिल्म शो, 3,269 गीत और नाटक कार्यक्रम, 15,987 फोटो प्रदर्शनियां और 26,703 मौखिक प्रचार कार्यक्रम जीवन के विभिन्न वर्गों के लोगों के लिए आयोजित किए।

गीत और नाटक प्रभाग

1.18.1. गीत और नाटक प्रभाग राष्ट्रीय महत्व के विषयों के प्रचार को बढ़ावा देता है। इसके अलावा यह सरकार की नीति संबंधी पहल, जैसे नई आर्थिक नीति तथा अर्थव्यवस्था का उदारीकरण, पुनर्गठित सार्वजनिक वितरण प्रणाली, सांप्रदायिक सद्भाव, राष्ट्रीय एकता, मादक पदार्थों के दुरूपयोग की रोकथाम और ग्रामीण तथा सामाजिक विकास के अन्य कार्यक्रमों के प्रचार-प्रसार को भी बढ़ावा देता है। अप्रैल से दिसम्बर, 1994 तक प्रभाग ने देश भर में 28,000 से अधिक कार्यक्रम किये। इनके अंतर्गत गैट संधि, एड्स की रोकथाम, देश में विशेष रूप से पंजाब, जम्मू-कश्मीर और असम जैसे संवेदनशील सीमावर्ती राज्यों में राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के प्रचार पर विशेष जोर दिया गया।

1.18.2. वर्ष के दौरान वड़ी संख्या में कार्यक्रम आयोजित करने और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की सुविधा से वंचित ग्रामीण तथा जनजातीय इलाकों तक महत्वपूर्ण विषयों के बारे में संदेश पहुंचाने

के लिए परम्परागत माध्यमों तथा लोक संस्कृति का सहारा लेने पर विशेष जोर दिया गया। तामिलनाडु कर्नाटक तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र (असम, नागालैंड, त्रिपुरा, अरूणाचल प्रदेश, मिजोरम, मेघालय, मणिपुर, और सिक्किम) में विशेष 'सद्भावना समारोह' आयोजित किए गए। गीत और नाटक प्रभाग सीमावर्ती जिलों तथा अशांत इलाकों में स्थानीय तथा अन्य पंजीकृत नाट्य मंडलियों की अधिक से अधिक सेवाएं ले रहा है। इस संबंध में रक्षा विभाग सहित विभिन्न सरकारी विभागों के साथ कारगार तालमेल रखा गया। पूर्वोत्तर क्षेत्र में साम्प्रदायिक सद्भाव और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए विशेष कार्यक्रम तथा प्रचार अभियान चलाए गए।

1.18.3. गीत और नाटक प्रभाग ने ग्रामीण विकास मंत्रालय के सहयोग से ग्रामीण विकास पर तीन-तीन दिन की कार्यशालाएं और प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये। ये शिविर अप्रैल, 1994 में उत्तर प्रदेश में वाराणसी, आंध्र प्रदेश में विजयनगरम और उड़ीसा में कोरापुट में लगाए गए। प्रभाग ने गैट समझौते पर 13 अलग-अलग स्थानों पर कार्यशालाएं आयोजित कीं। इन कार्यशालाओं के बाद देश भर में 5,000 से अधिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। एड्स की रोकथाम के लिए दिल्ली में एक कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें प्रभाग के सभी कार्यक्रम अधिकारियों ने भाग लिया। इसी तरह प्रभाग ने पोलियो और डायरिया की रोकथाम के बारे में भी कार्यशालाएं आयोजित कीं जिनके बाद देश भर में सघन अभियान चलाया गया।

भारतीय जन-संचार संस्थान

1.19. भारतीय जन-संचार संस्थान, नई दिल्ली ने दो प्रशिक्षण कार्यक्रमों और चार डिप्लोमा पाठ्यक्रमों का आयोजन किया। इसके अलावा संस्थान ने भारतीय सूचना सेवा के अधिकारियों के लिए कई अनेक रिफ्रेशर (पुनश्चर्या) पाठ्यक्रम भी आयोजित किए। साल के दौरान संस्थान ने कुल 300 लोगों को प्रशिक्षण दिया। भारतीय जन-संचार संस्थान की 14 अगस्त, 1993 को ढेंकानाल में खोली गई पहली शाखा ने पत्रकारिता में पहला डिप्लोमा पाठ्यक्रम पूरा किया।

गुट निरपेक्ष समाचार एजेंसी पूल

1.20.1. गुट-निरपेक्ष समाचार एजेंसी पूल गुट् निरपेक्ष देशों की समाचार एजेंसियों के बीच समाचारों के आदान-प्रदान की एक व्यवस्था है। ये देश लम्बे समय से समाचारों के बारे में भेदभाव और पक्षपात के शिकार रहे हैं। पूल का गठन 1976 में किया गया था। भारत पूल का पहला अध्यक्ष (1976-79) रहा। यह पूल पूरे विश्व में सक्रिय है और चार महाद्वीपों एशिया, पूर्वी यूरोप, अफ्रीका और लैटिन अंमरीका के देश इसके दायरे में आते हैं। यह गुट निरपेक्ष देशों के बीच निष्पक्ष समाचारों के सीधे और बिना किसी भेदभाव के प्रेषण को बढ़ावा देता है।

1.20.2. पूल की गतिविधियों में समन्वय के लिए एक निर्वाचित संस्था बनाई गई है जिसका अध्यक्ष भी निर्वाचित होता हैं। इस संस्था को समन्वय समिति कहा जाता है। पूल के संविधान के अनुसार समन्वय समिति का अध्यक्ष समाचार ऐजेंसी से जुड़ा कोई प्रख्यात पत्रकार होता हैं। मेजबान देश की समाचार ऐजेंसी के किसी पत्रकार को अध्यक्ष पद के लिए प्राथमिकता दी जाती हैं। भारत पूल के गठन के समय से ही इसका समस्य है। भारत में समाचार पूल डेस्क की जिम्मेदारी प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया पर है।

1.20.3. पूल में शामिल प्रत्येक समाचार एजेंसी इसके लिए समाचार भेजती है और उनकी उपयोगिता के अनुसार इससे अपने लिए समाचार लेती है। 1994-95 में भारतीय समाचार पूल डेस्क को प्राप्त हुए समाचारों में मामूली बढ़ोतरी हुई और आर्थिक तथा पर्यावरण संबंधी समाचारों पर अधिक जोर दिया गया। भारतीय समाचार पूल डेस्क ने हर रोज औसतन 23,000 शब्द प्राप्त किए और देश के समाचार-पत्रों की आवश्यकताओं के अनुसार उन्हें संपादित कर 16 प्रतिशत समाचार आलेख ग्राहकों

के लिए जारी किये। स्वयं प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया ने पूल के लिए हर रोज औसतन 10,000 शब्दों का योगदान किया।

1.20.4. भारतीय जन संचार संस्थान ने विभिन्न गुट-निरपेक्ष देशों की समाचार एजेंसियों के पत्रकारों को प्रशिक्षण भी दिया।

1.21.1. लेफ्टिनेंट जनरल (अवकाश प्राप्त) के. बलराम की अध्यक्षता में 17 मार्च, 1994 को पाठ्यक्रम समीक्षा समिति गठित की गई। यह समिति उच्च स्तरीय अग्रवाल समिति की उन सिफारिशों को लागू करने के बारे में उपयुक्त उपाय सुझायेगी, जो कर्मचारियों के प्रशिक्षण, मंत्रालय की विभिन्न मीडिया इकाइयों के कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की समीक्षा करने और वर्तमान तथा प्रस्तावित प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के लिए उपयुक्त पाठ्यक्रम सुझाने से संबंधित है।

1.21.2. क्षेत्रीय अंतर्वैयक्तिक परीक्षण और मूल्याकंन के बारे में भारतीय योजना आयोग के भूतपूर्व सलाहकार डॉ. किशनलाल सोंधी की अध्यक्षता में एक समिति 17 जनवरी, 1995 को गठित की गई। यह समिति इलेक्ट्रनिक मीडिया की तकनीकी क्षमता का उपयोग क्षेत्रीय प्रचार, गीत और नाटक तथा विज्ञापन और दृश्य प्रचार जैसे गैर-इलेक्ट्रानिक जन-संचार माध्यमों में अंतर्वैयक्तिक जन-संचार के क्षेत्र में कारगर ढंग से करने की संभावनाओं का पता लगाएगी।

अध्याय-2

योजना कार्य-निष्पादन

2.1.1. मंत्रालय और उसके माध्यम एककों का व्यापक उद्देश्य सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों से सम्बद्ध सूचनाओं का प्रसार करना तथा देश के समग्र विकास के राष्ट्रीय प्रयास में सहभागी बनने के लिये लोगों को प्रेरित करना है। माध्यम इकाइयां अपने उद्देश्यों को हासिल करने के लिए व्यक्ति से व्यक्ति तक सम्प्रेषण के लिए परम्परागत और लोक माध्यमों का उपयोग करने से लेकर जन संचार के अत्याधुनिक इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों का भी इस्तेमाल करती हैं। मंत्रालय के योजना कार्यक्रम इस प्रकार तैयार किये जाते हैं जिससे संगठनात्मक उद्देश्यों को अधिक से अधिक हासिल करने के लिए वर्तमान सुविधाओं को बढ़ाया तथा सुदृढ़ किया जा सके।

2.1.2. योजना आयोग ने आठवीं पंचवर्षीय योजना (1992-97) के लिये 3634 करोड़ रुपये के परिव्यय की स्वीकृति दी है। योजना तथा वार्षिक योजना के क्षेत्रवार विवरण निम्नलिखित हैं :-

(करोड़ रुपये में)

क्षेत्र	आठवीं पंचवर्षीय योजना परिव्यय 1992-97	परिव्यय 1994-95	संशोधित अनुमान 1994-95
दूरदर्शन	2300.00	256.00	256.00
आकाशवाणी	1134.95	132.32	132.32
सूचना मीडिया	75.40	11.45	10.57
फिल्म मीडिया	123.65	25.53	23.40
योग	3634.00	425.30	422.29

2.1.3. 1994-95 और 1995-96 के लिये योजना और गैर-योजना बजट का विवरण परिशिष्ट-2 में दर्शाया गया है।

2.1.4. वर्ष 1994-95 के दौरान माध्यम इकाइयों की उपलब्धियों तथा उनके योजना कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के सम्बंध में जानकारी निम्नलिखित है :

दूरदर्शन

2.2.1. 1994-95 के दौरान दूरदर्शन के 106 सम्प्रेषण केन्द्र और लगाये गये जिसके फलस्वरूप (23.2.95) ट्रांसमीटर केन्द्रों की संख्या बढ़कर 670 तक पहुंच गई जबकि 1993-94 के अंत तक सम्प्रेषण केन्द्रों की संख्या 564 थी। इसके अतिरिक्त मैट्रो चैनल (डी डी-2) कार्यक्रमों के रिले के लिये 24 ट्रांसमीटर तथा संसद की कार्यवाही को रिले करने के लिये दो ट्रांसमीटर चालू किये गये हैं। इस समय (सीमावर्ती क्षेत्रों की आबादी को शामिल करके) देश की लगभग 85.2 प्रतिशत आबादी तक टेलीविजन सेवा की पहुंच होने का अनुमान है। क्षेत्र-वार प्रसारण की पहुंच लगभग 67.8 प्रतिशत है।

2.2.2. 1993-94 के अंत तक तथा 23.2.95 तक दूरदर्शन नेटवर्क की स्थिति इस प्रकार रही–

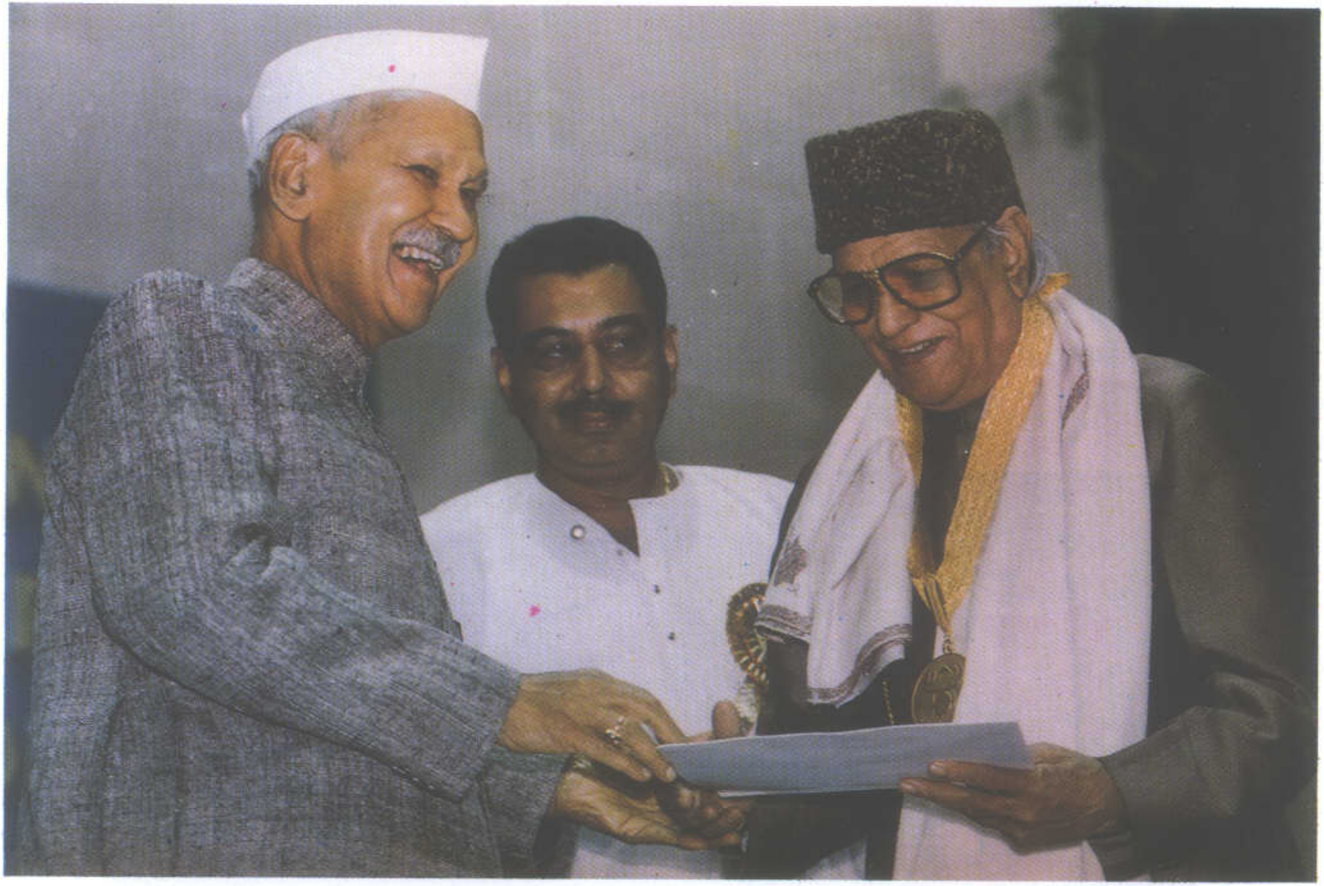

राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा जाने-माने कवि और गीतकार श्री मजरूह सुलतानपुरी को 1993 के दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित करते हुए सूचना और प्रसारण मंत्री श्री के.पी. सिंहदेव भी चित्र में दिखाई दे रहे हैं।

नई दिल्ली में पहली अक्तूबर, 1994 को प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिम्ह राव ने 'राष्ट्रीय प्रेस केन्द्र' की आधारशिला का अनावरण किया। उनके साथ हैं, सूचना और प्रसारण मंत्री श्री के.पी. सिंहदेव, शहरी विकास मंत्री श्रीमती शीला कौल और सुश्री आभाबेन गांधी।

प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिम्ह राव नई दिल्ली में आयोजित राज्यों के सूचना और सिनेमा मंत्रियों के 21वें सम्मेलन के उद्घाटन पर प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए।

बंबई में विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय द्वारा 'भारतीय सिनेमा के सौ वर्ष' पर आयोजित प्रदर्शनी का सूचना और प्रसारण मंत्री श्री के.पी. सिंहदेव ने अवलोकन किया।

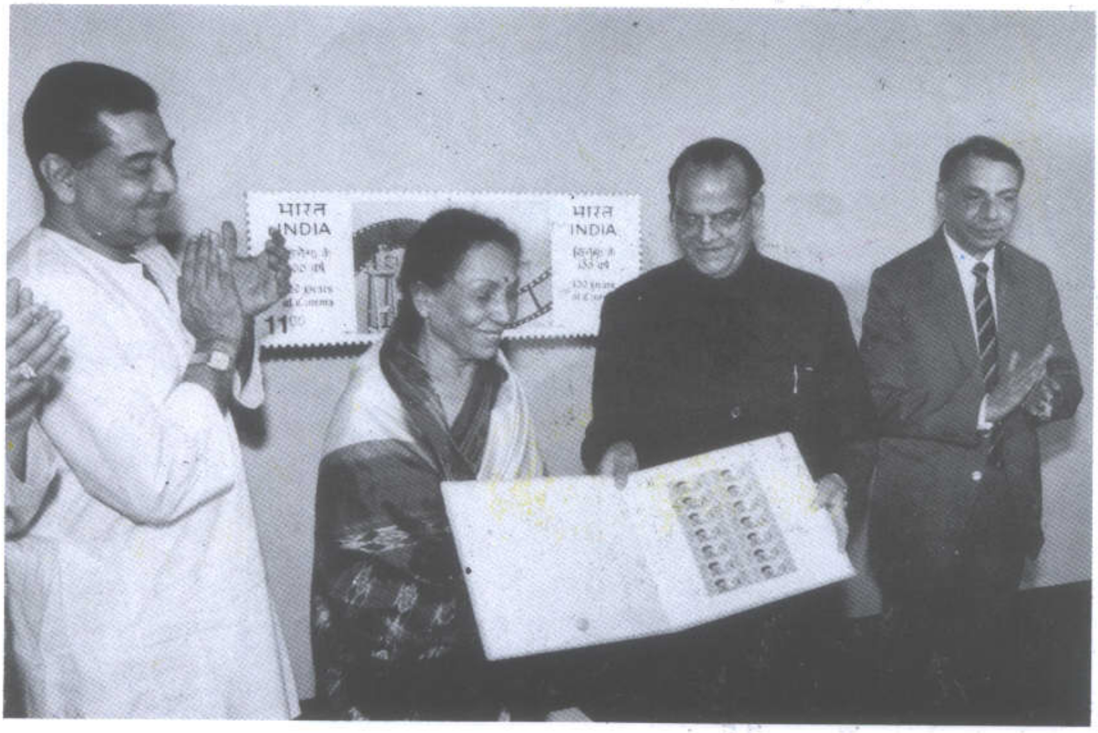

संचार मंत्री श्री सुखराम ने सूचना और प्रसारण मंत्री श्री के.पी. सिंहदेव, श्रीमती ललिता पवार और डाक विभाग के सचिव श्री एस.सी. महालिक की उपस्थिति में बंबई में भारत के अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह, 1995 के अवसर पर 'सिनेमा के सौ वर्ष' की स्मृति में एक विशेष डाक टिकट जारी किया।

हंगरी के जाने-माने फिल्म निर्देशक श्री इस्तवान गाल ने पुणे में फिल्म और टेलीविजन संस्थान के विद्यार्थियों के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया।

नई दिल्ली में आकाशवाणी द्वारा आयोजित संगीत सम्मेलन में पंडित भीमसेन जोशी का गायन।

	1993-94 के अंत तक (31.3.94 तक)	23.2.95 तक
1. प्रसारण केन्द्र (प्राइमरी चैनल -डी.डी-1 के रिले के लिए)		
(अ) उच्च शक्ति ट्रांसमीटर	69	74
(ब) निम्न शक्ति ट्रांसमीटर	390	476
(स) अति निम्न शक्ति ट्रांसमीटर	82	100
(द) ट्रांसपोजर	23	20
योग :	564	670
2. मेट्रो चैनल (डी.डी-2) के रिले के लिये ट्रांसमीटर		
(अ) उच्च शक्ति ट्रांसमीटर	4	6
(ब) निम्न शक्ति ट्रांसमीटर	2	17
(स) अति निम्न शक्ति ट्रांसमीटर	-	1
योग :	6	24
3. अन्य ट्रांसमीटर	4 (सेटेलाइट चैनल कार्यक्रमों को रिले करने के लिए दिल्ली में)	2 (संसद की कार्यवाही को रिले करने के लिए दिल्ली में)
4. प्रसार का दायरा		
(अ) जनसंख्या (प्रतिशत)	84.5	85.2
(ब) क्षेत्र (प्रतिशत)	66.6	67.8
5. कार्यक्रम उत्पादन केन्द्र	30	33
6. चैनलों की कुल संख्या जो इस समय चल रहे हैं।	5	13 (डी.डी.-3 चैनल पर टेलीकास्ट शुरू होना है)

2.2.3. गुलबर्गा और मुजफ्फरपुर में कार्यक्रम उत्पादन सुविधा केन्द्र और मद्रास में दूसरा चैनल चालू हो गया है। सिलीगुड़ी में कार्यक्रम उत्पादन सुविधा केन्द्र से संबंधित संस्थापना कार्य पूरा हो गया है।

2.2.4. शिमला और गंगटोक में उच्च शक्ति (1 किलोवाट) ट्रांसमीटर, मऊ में एच.पी.टी., रामेश्वरम और कालीकट में एच.पी.टी. (अंतरिम स्थापना) 86 स्थानों पर और दस स्थानों पर अत्यंत निम्न शक्ति के ट्रांसमीटर चालू किये गये हैं। भुज में उच्च शक्ति ट्रांसमीटर की क्षमता को एक किलोवाट से बढाकर दस किलोवाट कर दिया गया है। बम्बई, कलकत्ता और मद्रास में प्रस्तावित डी.डी.-3 चैनल सेवा के टेरेस्ट्रियल (पार्थिव) सम्प्रेषण के लिये बम्बई, कलकत्ता और मद्रास में उच्च शक्ति (1 किलोवाट) ट्रांसमीटर स्थापित करने और लेह में उच्च शक्ति ट्रांसमीटर परियोजना से सम्बन्धित संस्थापना कार्य

पूरे कर लिए गये हैं। लोकसभा और राज्यसभा की कार्यवाही को टेलीविजन पर प्रसारित करने के लिये दो निम्न शक्ति के ट्रांसमीटर चालू किये गये हैं।

2.2.5. डी.डी-2 (मेट्रो चैनल) के कार्यक्रमों को रिले करने के लिये ट्रांसमीटर निम्न स्थानों पर चालू किये गये हैं।

(क) कटक और अहमदाबाद में उच्चतर शक्ति (एक कि. वा.) ट्रांसमीटर

(ख) जम्मू, भुवनेश्वर, कोटा, जालंधर, भोपाल, चंडीगढ़, श्रीनगर, तिरूअनंतपुरम, ईटानगर, बंगलौर, जयपुर, गंगतोक, गुवाहाटी, गांधीनगर और शिमला में निम्नशक्ति ट्रांसमीटर (एल.पी.टी)

(ग) कावारती में अति निम्न शक्ति का ट्रांसमीटर

2.2.6. मऊ, बरेली, रामेश्वरम और पोर्ट ब्लेयर में कर्मचारियों के लिए घरों का निर्माण कार्य पूरा कर लिया गया है।

आकाशवाणी

2.3.1. 31 दिसंबर, 1994 तक आकाशवाणी ने कारवाड़, हमीरपुर, नौगांव, धूला, नासिक, पुंछ, कवरत्ती, धर्मशाला, इडुकी, जैसलमेर, आहवा, ऊटकमंड और तूतीकोरिन में प्रसारण केन्द्र चालू किये।

2.3.2. अलोच्य अवधि के दौरान कलकत्ता, पणजी और बम्बई में एफ. एम स्टीरियो ट्रांसमीटर के रूप में अन्य परियोजनायें चालू की गईं। रेडियो प्रसारण की पहुंच और व्यापक बनाने के लिये मीडियम वेव (मध्यम तरंग) के वर्तमान ट्रांसमीटरों की क्षमता बढ़ाई गई जैसे ईटा नगर के ट्रांसमीटर की क्षमता 1 किलोवाट से बढ़ाकर 100 कि.वा. की गई, त्रिचूर ट्रांसमीटर की क्षमता 20 कि.वा. से 100 कि.वा, भोपाल ट्रांसमीटर की क्षमता एक कि.वा. से बढाकर 10 कि.वा., मद्रास ट्रांसमीटर की क्षमता 2.5 कि.वा. (वी.वी.) से 20 कि.वा. और एक कि.वा. (वाई.वी) से 10 कि.वा. और पणजी में पांच कि.वा. से बढ़ाकर 20 कि.वा. की गई। इनके अलावा विशाखापत्तनम् में (100 कि.वा. मीडियम वेव) और भद्रावती (2x10 कि.वा. मी.वे.) में वर्तमान ट्रांसमीटरों के स्थानों पर नये ट्रांसमीटर लगाये गये। ईटानगर, तुरा, जबलपुर और पासीघाट में स्टूडियो की उन्नत सुविधायें उपलब्ध कराई गई हैं। बम्बई में एम.टी.आर (मल्टी ट्रैक रिकार्डिंग) स्टूडियो चालू किया गया है जो आकाशावाणी नेटवर्क में ऐसा पहला स्टूडियो है।

2.3.3. देश में रेडियो की पहुंच के लिये शार्ट वेव यानि लघु तंरगों के सहयोग को बढ़ाने के लिये भोपाल, बम्बई, मद्रास, कलकत्ता, हैदराबाद, शिमला, और त्रिवेन्द्रम् में 50 किलोवाट शा.वे. के 50 ट्रांसमीटर चालू किये गये हैं। इसके अतिरिक्त आकाशवाणी की विदेश सेवा को सुदृढ़ बनाने के लिये बंगलौर में चार ट्रांसमीटर पांच सौ कि.वा. क्षमता वाले शा.वे. पर चालू किये गये हैं और इसके परिणाम स्वरूप बंगलौर विश्व में एक सबसे बड़ा ट्रांसमिशन केन्द्र बन गया है। किन्नौर, उत्तरकाशी, कुल्लू, मसूरी, लुंगलेह, राउरकेला, दमन और कराइकल में प्रसारण केन्द्र तैयार हैं, उन्हें चालू किया जाना है।

2.3.4. श्रीनगर में दस कि.वा. मी.वे., गंगटोक में दस कि.वा. शा.वे., ईटानगर में 50 कि.वा. शा. वे. ट्रांसमीटर और इम्फाल में 50 कि.वा. शा.वे. ट्रांसमीटर तकनीकी दृष्टि से चालू होने के लिये तैयार हैं। परभणी में ए टाइप-1 (आर) स्टूडियो, पणजी में 2x250 कि.वा. शा.वे. ट्रांसमीटर और टाइप-3 (आर) स्टूडियो, गुवाहाटी में अतिरिक्त स्टूडियो सुविधायें और तेजू में दस कि.वा. मी.वे. ट्रांसमीटर और मध्यम क्षमता के स्टूडियो चालू होने के लिये तैयार हैं। भद्रवाह, माउंटआबू, जोआई, मोकोकचुंग, उस्मानाबाद, बीजापुर, पौढ़ी, पिथौरागढ़ और कोकराझाड़ में प्रसारण केन्द्र मार्च, 1995 तक तकनीकी रूप से तैयार हो जाने की आशा है।

2.3.5. इलाहाबाद में 2x5 कि.वा. एफ.एम. ट्रांसमीटर, बम्बई में 2x5 कि.वा. एफ.एम. ट्रांसमीटर (एन सी), त्रिवेन्द्रम् में 2x5 कि.वा. एफ.एम. ट्रांसमीटर (वाई बी) मद्रास में 2x5 कि.वा. एफ ट्रांसमीटर

स्टीरीयो, दिल्ली किंग्सवें कैम्प में 3x50 कि.वा. शा.वे ट्रांसमीटर, इलाहाबाद में 2x10 कि.वा. मी.वे. ट्रांसमीटर, रामपुर में 2x10 कि.वा. मी.वे. ट्रांसमीटर, आगरा में 2x10 कि.वा. मी.वे. ट्रांसमीटर, उदयपुर में 2x10 कि.वा. मी.वे. ट्रांसमीटर, तवांग में 10 कि.वा. शार्ट.वे. ट्रांसमीटर, गंगतोक में टाइप-1 (आर) स्टूडियो और 2x10 कि.वा. मी.वे. ट्रांसमीटर, कोहिमा में 50 कि.वा. मी.वे. ट्रांसमीटर, कर्सियांग में 50 कि.वा. शार्ट वेव ट्रांसमीटर और 1 कि.वा. मी.वे. ट्रांसमीटर, भागलपुर में 2x10 कि.वा. मी.वे. ट्रांसमीटर, संबलपुर में 100 कि.वा. मी.वे. ट्रांसमीटर, अगरतला में 2x10 कि.वा. मी.वे. ट्रांसमीटर, बम्बई में स्टूडियो (फेज-1) की फिर से सज्जा, जगदलपुर में 100 कि.वा. मी.वे. ट्रांसमीटर, ग्वालियर में 20 कि.वा. मी.वे. ट्रांसमीटर, सांगली में 20 कि.वा. मी.वे. ट्रांसमीटर, परभनी में 20 कि.वा. मी.वे. ट्रांसमीटर, कालीकट में 100 कि.वा. मी.वे. ट्रांसमीटर, गुलबर्गा में 2x10 कि.वा. मी.वे. ट्रांसमीटर, मदुरई में 2x10 कि.वा. मी.वे. ट्रांसमीटर, कोयम्बटूर में 20 कि.वा. मी.वे. ट्रांसमीटर, हैदराबाद में टाइप-4 स्टूडियो और मद्रास में मल्टी ट्रैक रिकार्डिंग स्टूडियो मार्च 1995 तक बनकर तैयार हो जाने की आशा है।

सूचना माध्यम

2.4.1. पत्र सूचना कार्यालय 1994-95 के दौरान समाचार की दृष्टि से महत्वपूर्ण कागज-पत्रों के सम्प्रेषण द्वारा सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों के बारे में सूचना का प्रसार करने के लिये तंत्र का सुधार करने के प्रयासों पर अधिक बल देता रहा है। इस प्रक्रिया को क्षेत्रीय और शाखा कार्यालयों में फैक्स मशीनों की संस्थापना के जरिये और तेज किया गया है। लखनऊ, हैदराबाद, और गुवाहाटी के क्षेत्रीय कार्यालयों को वर्ष के दौरान टेलीफोटो रिसीवरों/ट्रांसमीटर उपकरणों से सज्जित कर दिये जाने की आशा है। दो अप्रैल 1994 को नांदेड में पत्र सूचना कार्यालय के एक शाखा कार्यालय ने काम काज करना शुरू कर दिया जबकि ग्वालियर सिलिगुड़ी, विशाखापत्तनम्, रायपुर, रांची और कोणार्क में पत्र सूचना कार्यालय के दफतरों को कायम करने तथा बम्बई में लघु मीडिया केन्द्र कायम करने के बारे में सक्रिय रूप से विचार चल रहा है।

2.4.2. प्रकाशन सामग्री के उत्पादन की बेहतर गुणवत्ता के लिये विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय ने 1993-94 में डी.टी.पी. प्रणाली की व्यवस्था की और रंगीन मानीटर तथा रंगीन लेसर स्कैनर–प्रिन्टर करके व्यवस्था को और मजबूत किया। कम्प्यूटर-स्टेशनरी, साफ्टवेयर, फर्नीचर की खरीद और कम्प्यूटर की व्यवस्था को बेहतर बनाने तथा उपकरणों की खरीद के लिये 14.50 लाख रुपये का प्रावधान किया गया है जबकि मुद्रित प्रचार के जरिये गैट (डंकल समझौता) प्रचार के लिये 89 लाख रुपये की रकम आबंटित की गई है तथा 11 क्षेत्रीय भाषाओं में अंग्रेजी और हिन्दी के तीन पोस्टर और 6 फोल्डर छापे जा चुके हैं और इस निदेशालय द्वारा इसका वितरण किया जा चुका है।

2.4.3. योजना का उड़िया संस्करण 1993-94 के दौरान शुरू किया गया; यह प्रकाशन विभाग के मुख्यालय से नियमित रूप से प्रकाशित किया जा रहा है और इस परियोजना के लिये जब तक अपेक्षित कर्मचारियों की स्वीकृति नहीं मिल जाती तब तक यह क्रम जारी रखा जायेगा। चालू वित्त वर्ष के दौरान योजना (उड़िया) संस्करण के प्रकाशन पर 1.62 लाख रुपये खर्च आया है। भारत के प्रधानमंत्री ने 1 अक्तूबर 1994 को महात्मा गांधी वांड्‌मय के 100 वें तथा अंतिम खंड के प्रकाशन का विमोचन किया और इसके साथ ही महात्मा गांधी की 125 वीं जयंती के समारोहों का शुभारंभ किया गया।

2.4.4. फोटो प्रभाग के आधुनिकीकरण के लिये योजना के तहत कुछ उपकरण खरीदे गये हैं और चालू वित्त वर्ष के दौरान कुछ आयातित उपकरण पहुंच जाने की आशा है। कम्प्यूटरी कृत आटो-प्रोसेसर की सहायता से जब ये उपकरण कार्य-संचालन शुरू कर देंगे तो इससे फोटोग्राफ बड़े पैमाने पर तथा शीघ्रता से निकलने लगेंगे। नई दिल्ली में फोटो प्रभाग के मुख्यालय में फोटो, डाटा बैंक स्थापित किया गया और इसके क्षेत्रीय कार्यालय बम्बई, कलकत्ता, मद्रास और गुवाहाटी में खोले गये हैं। फोटो भेजने से संबंधित कार्य जारी है।

चालू वित्त वर्ष के दौरान भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक यानि 'रजिस्ट्रार ऑफ न्यूजपेपर्स फॉर इंडिया' ने कम्प्यूटरों को लगाने के लिये स्थान तैयार करने के वास्ते आकाशवाणी के सी.सी विंग को काम सौंपा है। एन. आई सी को बम्बई में आर.एन.आई के क्षेत्रीय कार्यालय में कम्प्यूटरीकरण कार्यक्रमों के लिये साफट-वेयर और हार्ड-वेयर प्राप्त करने का काम सौंपा गया है। 1994-95 के दौरान भी यह सारा कार्य पूरा कर लिये जाने की संभावना है।

2.4.6. भारतीय जनसंचार संस्थान ने डी.टी.पी. प्रणाली के लिये कुछ साफ्ट-वेयर तथा अन्य सम्बद्ध सामग्री प्राप्त की है। संस्थान के अनुसंधान तथा मूल्यांकन विभाग ने निर्माणाधीन परियोजनाओं को पूरा कर लिया है और ढेंकानाल स्थित अपनी शाखा ने नये अध्ययन कार्य का काम शुरू किया तथा पत्रकारिता मे प्रथम स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम पूरा किया गया और 1994 के दौरान नया पाठ्यक्रम शुरू किया। नई दिल्ली में 'आफीसर्स होस्टल' के निर्माण का कार्य प्रथम चरण के अंतर्गत लगभग पूरा होने वाला है।

2.4.7. गीत और नाट्य प्रभाग ने संवेदनशील क्षेत्रों में अपनी गतिवधियां तेज करने के लिये ठोस प्रयास किये। चंडीगढ़ क्षेत्रीय कार्यालय ने पंजाब, जम्मू और कश्मीर, चंडीगढ़ (केन्द्र शासित) और हिमाचल प्रदेश में राष्ट्रीय एकता से सम्बन्धित चार हजार कार्यक्रमों का आयोजन किया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अलावा प्रभाग ने सद्भावना समारोहों के भी आयोजन किये और उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में दिसंबर 1994 तक दो हजार से अधिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। रायपुर (मध्य प्रदेश) और खुरदा (उड़ीसा) में उत्कल महोत्सव के सिलसिले में 'मंजिलें और भी हैं' शीर्षक से ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। 23 दिसंबर 1994 को जोधपुर में 17 कार्यक्रमों की श्रृंखला का उद्घाटन किया गया। नई दिल्ली में 'सायरे-गुल फरोशां' के लिये 'फूल वालों की सैर' के बारे में ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रभाग ने आंगुल में भी ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रम आयोजित किये और चालू वित्त वर्ष के दौरान भोपाल (मध्य प्रदेश) झांसी (उ.प्र.) और खम्माम (आन्ध्र प्रदेश) में भी इसी प्रकार के कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाने के लिये तैयार किये गये एड्स नियंत्रण, महिला समृद्धि योजना और ग्रामीण विकास के बारे में प्रचार अभियान के लिये कार्यक्रम राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन, महिला एवं बाल विकास विभाग तथा ग्रामीण विकास मंत्रालय की ओर से क्रमशः आयेजित किये गये। इसके अलावा गीत और नाटक प्रभाग ने सद्भावना समारोहों के सिलसिले में पश्चिम बंगाल और मध्य प्रदेश में पहचान किये गये कुछ जिलों में फरवरी मार्च-1995 के दौरान कार्यक्रमों को प्रस्तुत करने के लिये व्यापक प्रबंध किये हैं।

2.4.8. 1994-95 के दौरान एक करोड़ रुपये का परिव्यय रखा गया था। क्षेत्र प्रचार निदेशालय ने 23 कथा चित्रों के प्रिंट के वास्ते आर्डर किये थे जिस पर 10.40 लाख रुपये की लागत आई थी। 82 वृतचित्रों के लिए करीब 12.49 लाख रुपये की लागत के प्रिंट आर्डर दिये गये। जनमत तैयार करने वाले नेताओं की यात्राओं के लिए सात कार्यक्रम बनाये गये। इनमें से तमिलनाडु से एक तथा मध्य प्रदेश (पूर्वी) क्षेत्र से एक यात्रा का संचालन पूरा कर लिया गया है। क्षेत्र प्रचार इकाईयों को मुद्रित प्रचार सामग्री की आपूर्ति के लिए डी.ए.वी.पी. यानि विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय को 15 लाख रुपये की धनराशि दी गई है। निदेशालय ने क्षेत्र प्रचार इकाईयों के लिए नौ जीपें खरीदने के वास्ते 24 लाख रुपये खर्च किये हैं। मेघालय में तुरा में कार्यालय-निवास परिसर के निर्माण पर लगभग पांच लाख रुपये खर्च किये जा रहे हैं। आधुनिकीकरण के उद्देश्य से क्षेत्रीय कार्यालयों को कम्प्यूटर उपलब्ध कराये जा रहे हैं और ग्यारह क्षेत्रीय कार्यालयों को फोटो कॉपी करने वाली मशीनें तथा क्षेत्र प्रचार की पन्द्रह इकाईयों को वीडियो प्रोजेक्टर दिये गये हैं। हल्के जनरेटरों को बदलकर दस भारी वजन के जनरेटर लगाये गये हैं।

2.4.9. सूचना भवन के फेज-4 के अंतर्गत निर्माण कार्य हाथ में लेने का प्रस्ताव है।

2.4.10. मंत्रालय का मुख्य सचिवालय वेतन और लेखा संगठन को और मजबूत बनाने पर विचार कर रहा है ताकि वह अपने बढ़ते हुए कार्यकलापों को सुचारू रूप से पूरा कर सकें। दूसरे राष्ट्रीय टेलीविजन चैनल के संचालन के लिए संयुक्त क्षेत्र की एक कम्पनी के इक्विटी अंशदान और दक्षिण

अफ्रीकी ट्रस्ट के साथ सहयोग करके एक फिल्म "मेकिंग ऑफ महात्मा" का निर्माण करने का भी प्रावधान किया गया है।

फिल्म मीडिया

2.5.1. 1994 की वार्षिक योजना के दौरान फिल्म प्रभाग का योजना-परिव्यय 300 लाख रुपये (पूंजी 198.00 लाख रुपये और राजस्व 102.00 लाख रुपये) है। प्रभाग ने ग्रामीण दर्शकों को ध्यान रखते हुए खासतौर से सोलह मिलीमीटर की लघु कथा फिल्मों तथा विशेष फिल्मों का निर्माण का कार्य हाथ में लिया। बंबई में तीसरे चरण के निर्माण कार्य और सिनेमेटोग्राफी उपकरणों को बदलने और उनकी वृद्धि करने की योजना हाथ में ली गई। तीसरे चरण के भवन निर्माण के लिए प्रस्तावित स्थल पर वर्तमान ढांचे को ध्वस्त करने का कार्य पूरा कर लिया गया है। सिनेमेटोग्राफी उपकरणों की विस्थापन तथा संवर्धन की योजना के तहत प्रभाग ने 'नगरा' टेपरिकार्डरों की खरीद के लिए आर्डर दिये हैं। नयी दिल्ली में फिल्म प्रभाग में पुनः रिकार्डिंग की व्यवस्था करने के लिए उपकरणों के आयात हेतु निविदा आमंत्रित किये गये हैं। इसके अलावा प्रभाग ने फिल्म लाइब्रेरी के लिए एयर कंडीशनिंग की व्यवस्था कायम करने और विपणन तथा बिक्री-संवर्धन प्रकोष्ठ बनाने का कार्य भी हाथ में लिया है। फिल्म प्रभाग परिसर में गुलशन महल इमारत की मरम्मत करने की योजना को स्वीकृत दी गई है। 1994-95 के दौरान प्रभाग ने ग्रामीण क्षेत्रों में हो रहे पारिस्थितिकी, सांस्कृतिक और सामाजिक परिवर्तनों के कार्यकलापों को प्रदर्शित करने वाली एक लघु फिल्म का निर्माण कार्य पूरा किया है। इस फिल्म के अलावा विभिन्न विषयों पर 12 और फिल्में निर्माणाधीन हैं। प्रभाग को वृतचित्र, लघु-चित्र तथा एनीमेशन फिल्मों के लिए बम्बई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह आयोजन का कार्य सौंपा गया है। चौथा समारोह फरवरी 1996 में कराने का कार्यक्रम है। पिछला द्विवार्षिक समारोह 1994 में आयोजित किया गया था।

2.5.2. भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार के फिल्म संग्रहों में सचल संग्रह प्रणाली स्थापित करने का कार्य मार्च 1995 तक पूरा हो जाने की आशा है। पुणे में एफ.टी. आई.आई. की भूमि पर एन.एफ.ए.आई. के लिए नाइट्रेट फिल्म संग्रह के निर्माण की एक और बड़ी परियोजना पर काम चल रहा है। आकाशवाणी के सी.सी. डब्ल्यू. के क्षेत्रीय वास्तुकार के साथ-प्रारंभिक विचार-विमर्श किया जा चुका है और उसके लिए योजना तथा निर्दिष्ट उपायों के बारे में बातचीत पूरी हो चुकी है। आशा है कि चार हजार भारतीय फिल्मों के अभिलेखागार सम्बंधी आंकड़ों का संगणकीय कार्य शीघ्र ही पूरा हो जायेगा। आलोच्य वर्ग के दौरान भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार ने भारतीय फिल्म और टेलीविजन इंस्टीट्यूट के सहयोग से पुणे मे पांच सप्ताह के नियमित ग्रीष्म-कालीन पाठ्यक्रमों के अलावा विभिन्न केन्द्रों में अनेक अल्पकालिक फिल्म प्रबोध पाठ्यक्रमों का भी आयेजन किया। भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार ने 109 फिल्में, 495 पुस्तकें, 126 पत्रिकायें, 631 स्टिल चित्र, 68 दीवार इश्तहार, 172 गीत पुस्तिकायें, 96 पेंफलेट, 200 स्लाइडें, 46 डिस्क-रिकार्ड और 142 वीडियो कैसेट्स प्राप्त किये। जुलाई 1994 में इसने पुणे में फिल्म सर्किल प्रोग्राम शुरू किया और राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार के नये आडिटोरियम का इस्तेमाल शुरू किया गया। भारतीय फिल्म-चित्रों के प्रकाशन तथा अन्य अनुसंधान परियोजनाओं के प्रकाशन के संदर्भ में आलोच्य वर्ष के दौरान तीन परियोजनाओं को पुरस्कृत किया गया है।

2.5.3. राष्ट्रीय बाल तथा युवा चित्र केन्द्र ने एक कथाचित्र और एक टेलीविजन धारावाहिक का निर्माण पूरा कर लिया है। जबकि दो फिल्मों को अन्य भारतीय भाषाओं में रूपांतरित किया गया है। इसके अतिरिक्त विदेशों से पांच कथाचित्रों और दो लघु 'ऐनीमेशन' फिल्मों का अधिकार खरीद लिया गया है और एक कथाचित्र का निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया है। केन्द्र ने अन्य देशों में आयेजित आठ फिल्म समारोहों में हिस्सा लिया।

2.5.4. फिल्म समारोह निदेशालय ने एशियाई फिल्म समारोहों और एशियाई सिनेमा को प्रमुखता देने वाले समारोहों समेत 55 से अधिक फिल्म समारोहों में हिस्सा लिया। मिस्र में "इंडियन डेज़" के हिस्से

के रूप में सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के तहत काहिरा में ग्यारह भारतीय फिल्में प्रदर्शित की गई। मॉरीशस और ब्राजील में सत्यजीत राय की फिल्मों का पुनरावलोकन कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। इस वर्ग के अंतर्गत 14 भारतीय फिल्में प्रदर्शित की गई। टोरन्टो फिल्म समारोह में 'इंडिया नाऊ' प्रदर्शित किया गया। चीन में भारतीय समारोह के अंतर्गत संघाई में आठ भारतीय फिल्में प्रदर्शित की गई। लंदन में गुरूदत्त की फिल्मों के पुनरावलोकन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। भारतीय फिल्मों ने विदेशों में कई फिल्म समारोह में हिस्सा लिया, जिनमें कॉन, म्यूनिख, प्योंगयांग, सानफ्रांसिस्को, सिडनी, कारलुई वेरी और फुकोका शामिल हैं। नयी दिल्ली में निदेशालय ने राष्ट्रीय फिल्म समारोह तथा राष्ट्रीय पुरस्कार समारोह आयोजित किया। भारतीय पैनोरमा के लिए फिल्मों के प्रदर्शन भी आयोजित किये गये। कज़ाकिस्तान, मोजाम्बिक और घाना में भारतीय फिल्म सप्ताह मनाये गये। सांस्कृतिक आदान-प्रदान के अंतर्गत ब्राजील, श्रीलंका, सीरिया और इटली के फिल्म सप्ताह दिल्ली, भुवनेश्वर और हैदराबाद में आयोजित किये गये। दस से बीस जनवरी, 1995 तक बम्बई में भारत-1995 का अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह आयोजित किया गया।

2.5.5. आशा है कि राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम आठ फिल्मों के निर्माण के लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध करायेगा और 320 लाख रुपये के खर्च से सिनेमा उपकरणों की खरीद तथा सहनिर्माण वर्ग के तहत चौदह फिल्मों का भी निर्माण करेगा। यह भी संभावना है कि 120 लाख रुपये की पूंजी लागत से टेलीविजन और थियेटर-दोनों ही के हितों को ध्यान में रखते हुए छः थियेटरों के निर्माण और 60 फिल्मों के आयात के लिए वित्तीय सहायता भी देगा। निगम 310 लाख रुपये की धनराशि से नयी परियोजनाओं को चालू करने तथा उन्हें आधुनिक रूप देने की परियोजनाओं को हाथ में लेगा। निगम ने बम्बई में लेज़र सबटाइटिल यूनिट तथा दिल्ली में 'ओडियो डिस्प्ले ब्राडकास्टिंग सिस्टम' कायम किया है और इस पर होने वाला खर्च निगम के अपने आई.ई.बी.आर. से दिया जायेगा।

2.5.6. केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड की भी गतिविधियां 1994-95 में पूर्ववत् जारी रही। आठवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान बोर्ड की विभिन्न योजनाओं के लिए कुल आवंटन सौ लाख रुपये रखा गया है। वर्ष 1994 के लिए परिव्यय 12 लाख रुपये था। बम्बई में बोर्ड के कम्प्यूटरीकरण के लिए एक व्यापक योजना राष्ट्रीय इंफोरमेटिक्स केन्द्र को सौंपी गई जिसे उसने पूरा कर लिया है।

2.5.7. भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान (एफ.टी.आई.आई.) पुणे ने फिल्म शाखा के विभिन्न विभागों के लिए मशीनें और उपकरण खरीदें हैं तथा पुर्जों का आयात किया है। 1994-95 की वार्षिक योजना के तहत एक करोड़ रुपये की लागत से आधुनिक सुविधाओं से सज्जित ध्वनि रिकार्डिंग थियेटर का निर्माण किया जा रहा है।

2.5.8. कलकत्ता के सत्यजीत राय फिल्म एंड टैलीविजन इंस्टीट्यूट के निर्माण के लिए योजना सम्बंधी सभी कार्यकलाप निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार पूरे हो चुके हैं। निर्माण स्थल पर कार्य भलिभांति चल रहा है वहां सामग्री तथा श्रमिक समुचित मात्रा और तादाद में पहुंच रहे हैं और आशा है कि 1994-95 के दौरान निर्धारित कार्य के 25 प्रतिशत से अधिक भाग को पूरा कर लिया जायेगा। इस परियोजना को 1996-97 के दौरान पूरी कर लेने का लक्ष्य रखा गया है। संस्थान के लिए एक प्रमुख प्रकोष्ठ बनाया गया है जिसमें एक परियोजना निदेशक (5900-7300) सहित चौदह पदों की स्वीकृति दी गई है। पदों को भरने का कार्य चल रहा है।

2.5.9. फिल्म समितियों को उनके योजनाबद्ध कार्यकलापों के लिए अनुदान सहायता देने के भी प्रावधान रखे गये हैं।

2.5.10. मंत्रालय में विचाराधीन लेखा-परीक्षा तालिका रिपोर्ट परिशिष्ट 3 में दी गई है।

अध्याय-3

संगठन

मुख्य सचिवालय

3.1. सचिव मंत्रालय के मुख्य सचिवालय के प्रमुख होते हैं और अतिरिक्त सचिव, एक वित्त सलाहकार-सह-अतिरिक्त सचिव, तीन संयुक्त सचिव तथा एक मुख्य लेखा नियंत्रक उनके सहायक के रूप में कार्य करते हैं। मंत्रालय के विभिन्न विभागों में निदेशक/उप सचिव स्तर के 15 अधिकारी और 43 राजपत्रित तथा 275 अराजपत्रित कर्मचारी हैं। मंत्रालय का संगठनात्मक चार्ट परिशिष्ट I पर है।

अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति

3.2.1. सरकार की घोषित नीति का पालन करते हुए और इस बारे में जारी आदेशों के अनुसार मंत्रालय अपने नियंत्रण की सेवाओं एवं पदों में अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजातियों को उचित प्रतिनिधित्व प्रदान करने की भरपूर कोशिश करता रहा है। मंत्रालय का निरन्तर प्रयास रहा है कि मंत्रालय की विभिन्न सेवाओं तथा पदों में अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के आरक्षण के निर्धारित लक्ष्य के प्रतिशत और उनके वास्तविक प्रतिनिधित्व के प्रतिशत के अन्तर को कम-से-कम किया जाए। इस दिशा में किये गये निरंतर प्रयासों के फलस्वरूप 1 जनवरी, 1994 को सम्बद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों सहित मंत्रालय के कुछ कर्मचारियों की तुलना में अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के कर्मचारियों का प्रतिशत निम्न प्रकार से हो गया है :

	वर्ग "अ"	वर्ग "ब"	वर्ग "स"	वर्ग "द"
अनुसूचित जाति	10.32	11.46	16.69	32.64
अनुसूचित जनजाति	3.5	3.7	6.76	11.55

3.2.2. कार्मिक तथा प्रशिक्षण विभाग के निर्देशों का पालन करते हुए इस वर्ष भी अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के लिए खाली पड़े पदों को भरने के लिए एक विशेष भर्ती अभियान चलाया गया। इसका उद्देश्य इस मंत्रालय के अन्तर्गत विभिन्न सेवाओं में अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के लिए निर्धारित लक्ष्य और वास्तविक आपूर्ति के अन्तर को कम करना था।

3.2.3. आरक्षण निर्देशों को लागू करने से संबंधित कार्यों में तालमेल रखने तथा उनकी देख-रेख के लिए मंत्रालय में उप-सचिव के स्तर के सम्पर्क अधिकारी के निर्देशन में एक प्रकोष्ठ (सेल) कार्य कर रहा है। इस मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में आने वाले सम्बद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों, स्वायत्त संस्थाओं और सार्वजनिक उपक्रमों द्वारा इस दिशा में किये गये कार्य का लेखा-जोखा भी रखा जाता है।

3.2.4. भारत तथा विदेशों में अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति से सम्बद्ध अधिकारियों के प्रशिक्षण पर पर्याप्त ध्यान दिया जाता है। यह प्रशिक्षण विभिन्न कार्यक्रमों के अन्तर्गत दिया जाता है। मंत्रालय सेवाओं में आरक्षण के बारे में जानकारी तथा अभिरूचि पाठ्यक्रमों के महत्व से पूर्ण रूप से परिचित है और सचिवालय प्रशिक्षण तथा प्रबंधन संस्थान जब इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है तो अधिकारियों को प्रायः उसमें भेजा जाता है।

3.2.5. इस मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण के अधीन कार्यरत कार्यालयों/स्वायत्तशासी संस्थाओं तथा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति संबंधी आरक्षण नीति का सख्ती

से पालन किया जा रहा है। इन संस्थाओं/उपक्रमों में भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान, केन्द्रीय फिल्म प्रमाणपत्र बोर्ड, राष्ट्रीय बाल युवा फिल्म केंद्र, भारतीय प्रेस परिषद तथा राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लिमिटेड शामिल हैं।

सरकारी काम-काज की भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग

मंत्रालय के काम-काज में राजभाषा नीति लागू करने के लिए हरसंभव प्रयास किए गये हैं और गृह मंत्रालय (राजभाषा विभाग) के निर्धारित वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्य को प्राप्त करने की पूरी कोशिश की गई है।

3.3.2. मंत्रालय में एक उच्चस्तरीय हिन्दी सलाहकार समिति है जो कि माननीय प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में गठित केन्द्रीय हिन्दी समिति के निर्णयों के अनुसार परामर्श प्रदान करती है। सलाहकार समिति का पुनर्गठन किया जा रहा है। इस समिति में संसद सदस्यों के अतिरिक्त हिन्दी के विद्वानों को भी शामिल किया जाता है। हिन्दी सलाहकार समिति में मुख्य सचिवालय तथा मंत्रालय की अन्य प्रचार इकाइयों की सरकारी काम-काज में हिन्दी के प्रयोग की स्थिति पर विस्तारपूर्वक समीक्षा की जाती है। राजभाषा नियमों के तहत हिन्दी का ज्यादा-से-ज्यादा प्रयोग करने के बारे में माननीय सदस्यों के विचारों अथवा सुझावों पर कार्रवाई की जाती है।

3.3.3. हिन्दी सलाहकार समिति द्वारा लिये गये निर्णयों और राजभाषा नियमों पर अमल करने के लिए मुख्य सचिवालय और सहायक कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन समितियां कार्य कर रही हैं। आमतौर पर इन समितियों की हर तिमाही बैठकें आयोजित की जाती हैं जिनमें उस अवधि में राजभाषा नियमों को लागू करने की दिशा में किये गये कार्य की समीक्षा की जाती है। इस प्रकार, ये समितियां कार्यालय में राजभाषा नीति लागू करने की स्थिति पर निरंतर निगरानी रखती है। 1994-95 वर्ष के दौरान (दिसम्बर, 1994 तक), मंत्रालय की राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की तीन बैठकें हुई, जिनमें राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) के संवैधानिक प्रावधानों तथा राजभाषा अधिनियम 1976 के अधिनियम 5 को पूर्ण रूप से लागू किये जाने पर संतोष व्यक्त किया गया।

3.3.4. सरकारी काम-काज में हिन्दी के इस्तेमाल को प्रोत्साहन देने के लिए मंत्रालय में 14-28 दिसम्बर, 1994 की अवधि में 'हिन्दी पखवाड़ा' आयोजित किया गया। इस अवधि में, हिन्दी निबंध, टिप्पण, प्रारूप लेखन, हिन्दी टंकण प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थीं। इन प्रतियोगिताओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए प्रतियोगियों को नगद पुरस्कार प्रदान किए गये।

3.3.5. सरकारी कार्य में हिन्दी के प्रयोग की समीक्षा के लिए मंत्रालय के अन्तर्गत कार्यालयों में निरीक्षण किया गया। जो कमियां पाई गई, उन्हें दूर करने के लिए इन कार्यालयों को उन्हें दूर करने का अनुरोध किया गया। मूल रूप से हिन्दी में पत्राचार को प्रोत्साहित करने के लिए इस वर्ष 29 कर्मचारी हिन्दी आशुलिपि तथा टंकण में प्रशिक्षण के लिए चुने गये।

3.3.6. राजभाषा संबंधी संसदीय समिति की विभिन्न उप-समितियों ने भी वर्ष के दौरान हिन्दी के प्रयोग की उपलब्धियों अथवा कमियों की कार्य-स्थल पर ही समीक्षा के लिए मंत्रालय के अधीन कार्यरत 10 कार्यालयों में निरीक्षण किया। निरीक्षण के लिए आयोजित इन बैठकों में मंत्रालय के सम्बद्ध अधिकारियों ने भी भाग लिया। इन उप-समितियों ने जो विचार व्यक्त किए अथवा सुझाव दिए, संबंधित अधिकारियों द्वारा इस संबंध में उपयुक्त कार्यवाही सुनिश्चित करने के लिए मंत्रालय ने समुचित कदम उठाये तथा इसकी सचिवालय को भी जानकारी दी।

आन्तरिक कार्य-अध्ययन इकाई

3.4. आन्तरिक कार्य-अध्ययन इकाई ने कार्यक्षमता में वृद्धि के लिए अपनी महत्वपूर्ण भूमिका बनाए रखी। वर्ष के दौरान जिन महत्वपूर्ण गतिविधियों का आयोजन किया गया, वे निम्न प्रकार से थीं:

1. दो कार्य-मूल्यांकन अध्ययन किए गये। इसके परिणामस्वरूप सार्वजनिक राजस्व की एक वर्ष में लगभग 8 लाख 25 हजार रुपए की प्रत्यक्ष अथवा एहतियाती बचत की गई।

2. कार्य-विधि प्रबंधन के विशेष अभियान के अन्तर्गत 17, 502 फाइलों में कार्य हुआ, 18,030 फाइलों की समीक्षा की गई और दिसम्बर, 1994 तक 9,647 फाइलों का निपटारा किया गया।

3. संगठन तथा कार्यविधि की दृष्टि से मुख्य सचिवालय में 15 डेस्क/अनुभागों के कार्य का निरीक्षण किया गया।

4. प्रचलित फार्मों, नियमों, अधिनियमों तथा कार्यप्रणाली की समीक्षा के लिए बने कार्य-दल के अन्तर्गत एक उप-दल गठित किया गया जिसने इस विषय पर विभिन्न प्रचार-इकाइयों के साथ व्यापक विचार-विमर्श करने के बाद इन सभी विषयों पर अपनी रिपोर्ट तैयार की।

विभागीय लेखा

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के मुख्य लेखा नियंत्रण कार्यालय का गठन सरकारी लेखों (सिविल) के विभागीकरण की योजना पहली अक्तूबर, 1976 को लागू किये जाने के परिणामस्वरूप हुआ। इस योजना के अन्तर्गत यह व्यवस्था की गई कि मंत्रालय का सचिव मुख्य लेखा अधिकारी भी है और अतिरिक्त सचिव (वित्तीय सलाहकार) वित्त संबंधी परामर्श तथा लेखा संबंधी कामकाज देखता है। मुख्य लेखा नियंत्रक मंत्रालय के लेखा संगठन का प्रशासनिक मुखिया होता है जिसकी जिम्मेदारियां निम्न प्रकार की होती हैं :

(अ) महालेखा नियंत्रक द्वारा निर्धारित निर्देशों के अधीन मंत्रालय के हिसाब-किताब का समायोजन।

(ब) सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा नियंत्रित अनुदान मांगों के वार्षिक विनियोग लेखे तैयार करना, केन्द्र सरकार के वित्त लेखों (सिविल) से संबंधित लेन-देन के विवरण महालेखा नियंत्रक को देना।

(स) स्वायत्त निकायों, समाचार एजेंसियों तथा निगमों आदि को ऋण तथा अनुदान की अदायगी।

(द) वेतन एवं लेखा कार्यालयों तथा विभिन्न प्रचार-माध्यमों के प्रमुखों को तकनीकी परामर्श देना और महालेखा नियंत्रक कार्यालय के साथ सम्पर्क बनाये रखना एवं लेखा संबंधी मामलों पर पूर्ण नियंत्रण रखना।

(ई) देश-भर में स्थित धन की निकासी तथा वितरण करने वाले 541 अधिकारियों के वित्तीय लेन-देन पर निगरानी रखना।

3.5.2. उक्त कार्य मुख्य लेखा नियंत्रक, एक लेखा नियंत्रक, दो उप-लेखा नियंत्रकों तथा दिल्ली (7), कलकत्ता (3), बम्बई (3), मद्रास (3), लखनऊ (1) गुवाहाटी (1) तथा नागपुर (1) में स्थित 19 वेतन एवं लेखा अधिकारियों के माध्यम से करता है।

3.5.3. इस संगठन की मुख्य विशेषता यह है कि मंत्रालय तथा इससे सम्बद्ध एवं अधीनस्थ कार्यालयों के लगभग 5,000 राजपत्रित अधिकारियों के वेतन और भत्तों की अदायगी इसी के द्वारा की जाती है। यह कार्य राष्ट्रीय सूचना केन्द्र की सहायता से एक कम्प्यूटरीकृत प्रणाली से किया जाता है। नई दिल्ली में इन्द्रप्रस्थ एस्टेट में स्थित ए.जी.सी.आर. भवन (इरला) में उप-लेखा नियंत्रक की देख-रेख में यह कार्य किया जाता है।

3.5.4. इस वर्ष (अक्तूबर, 1994 तक) वेतन एवं लेखा अधिकारी, इरला द्वारा निपटाये राजपत्रित अधिकारियों के 57,158 दावों सहित सभी वेतन एवं लेखा अधिकारियों द्वारा 2,60,982 बिलों का निपटान किया गया। इसके अतिरिक्त, सेवानिवृत्त सरकारी कर्मचारियों के 994 पेंशन अथवा परिवार-पेंशन संबंधी मामलों और भविष्य निधि के 1419 मामलों का निपटान किया गया।

3.5.5. मंत्रालय ने हाल ही में दायित्वों का जो पुनर्निर्धारण किया है, उसके अनुसार बजट और लेखा तथा संगठन एवं कार्यविधि अनुभाग (ओ एंड एम) को मुख्य लेखा नियंत्रक के अधीन रखा गया है।

मुख्य लेखा नियंत्रक विभिन्न प्रचार इकाइयों को निम्न कार्यों के लिए विशिष्ट सेवायें प्रदान करता है :

(अ) योजनाओं अथवा परियोजनाओं पर निगरानी तथा योजना-समीक्षा के लिए खर्चे।

(ब) सीधे सहायता प्राप्त धनराशि से चलने वाली योजनाओं के मूल्यांकन सहित विभागीय तथा अनुदान प्राप्त निकायों के कार्यों का मूल्यांकन।

(स) प्रबंधन सूचना प्रणाली की स्थापना, रख-रखाव तथा उसका आधुनिकीकरण।

(द) सार्वजनिक संस्थाओं की समितियों की रिपोर्टों पर भारतीय महालेखा नियंत्रक, वेतन एवं लेखा अधिकारियों अथवा आकलन समितियों द्वारा दी गई लेखा परीक्षण रिपोर्टों, आपत्तियों का निपटान अथवा आगे की जाने वाली कार्रवाई।

3.5.6. मुख्य लेखा नियंत्रक के अधीन एक आन्तरिक लेखा-परीक्षण संगठन भी कार्य करता है। इस संगठन की यह जिम्मेदारी है कि प्रशासनिक कार्यालयों द्वारा जो हिसाब रखा जाता है, उसकी आरंभिक जांच करे जिससे हिसाब-किताब तथा वित्तीय मामलों में सभी कार्यालयों में नियमों, कानूनों, कार्य-प्रणालियों का पालन होता रहे। सामान्य आंतरिक लेखा-परीक्षण प्रणाली के अन्तर्गत जिन गंभीर अनियमितता के मामलों का निपटारा नहीं किया जा सकता, उनके लिए विशेष आंतरिक लेखा परीक्षण किया जाता है। इस वर्ष 'सद्‌भावना समारोह' और गीत एवं नाटक विभाग के 'ध्वनि एवं प्रकाश' आयोजन के दो मामलों में इस प्रकार का लेखा परीक्षण किया गया था।

सतर्कता

मंत्रालय का सर्तकता तंत्र पूरी तरह मंत्रालय के सचिव की देखरेख में कार्य करता है। इस कार्य में संयुक्त सचिव के स्तर का एक मुख्य सतर्कता अधिकारी, एक उप-सचिव, एक अनुभाग अधिकारी तथा अन्य अधीनस्थ कर्मचारी उसकी सहायता करते हैं। जबकि मंत्रालय से सम्बद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों की सतर्कता इकाइयों के प्रमुख सतर्कता अधिकारी होते हैं। सार्वजनिक क्षेत्र के संस्थानों तथा पंजीकृत समितियों की सतर्कता इकाइयों की निगरानी उन्हीं के अपने मुख्य सतर्कता अधिकारी करते हैं। सम्बद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्र के संस्थानों और पंजीकृत समितियों की सतर्कता गतिविधियों में समन्वय का कार्य मंत्रालय का मुख्य सतर्कता अधिकारी करता है।

3.6.2. मंत्रालय में शिकायतों के समाधान के लिए एक प्रणाली काम कर रही है जिसमें एक संयुक्त सचिव की शिकायत संबंधी मामलों के निदेशक के रूप में नियुक्ति की गई है। विभिन्न प्रचार इकाइयों में भी कर्मचारी शिकायत समाधान अधिकारियों की नियुक्ति की जाती है। इस कार्य के लिए निश्चित की गई अवधि में कर्मचारीगण तथा आम जनता में से कोई भी व्यक्ति बिना रोकटोक के उनसे मिल सकते हैं। इन मामलों के समाधान की दिशा में हुई प्रगति पर निरंतर निगरानी रखी जाती है।

3.6.3. प्रक्रियाओं को सरल बनाने के प्रयास जारी हैं जिससे कि भ्रष्टाचार में कमी लाई जा सके। संदेह की परिधि में आने वाले लोगों पर कड़ी निगरानी रखी गई। जिन कर्मचारियों की नियुक्ति संवेदनशील स्थानों पर की गई, समय-समय पर वहां दूसरे कर्मचारी नियुक्त किये। नियमों तथा प्रक्रियाओं का ठीक से पालन किया जा रहा है या नहीं, इसे सुनिश्चित करने के लिए वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा जांच-पड़ताल की गई। इस वर्ष के दौरान साठ नियमित और 29 आकस्मिक जांच की कार्रवाईयां की गई तथा 14 व्यक्तियों को निगरानी में रखने के निर्देश दिए गए।

3.6.4. 1994 में अप्रैल से दिसम्बर के महीनों के दौरान मंत्रालय के विभिन्न स्रोतों से 299 शिकायतें प्राप्त हुई थीं। इनकी जांच की गई और 112 मामलों में आरंभिक जांच के आदेश दिये गये जबकि 6 मामले केन्द्रीय जांच ब्यूरो को सौंप गए। इस वर्ष 47 मामलों में आरंभिक जांच रिपोर्ट प्राप्त हुई। 30 मामलों में दण्डात्मक कार्रवाई के लिए नियमित विभागीय कदम उठाए गए और 5 मामलों में मामूली दण्ड दिया गया। 2 मामलों में बड़ी सजाएं दी गई, तीन मामलों में कम और एक मामले में पेंशन में कटौती करने की सजा दी गई। 22 अधिकारियों को बर्खास्त किया गया। 2 मामलों में अधिकारियों को दोषमुक्त घोषित किया गया और 2 अन्य मामलों में कार्यवाही स्थगित कर दी गई। एक अन्य मामले में अस्थायी सेवा नियमों के अन्तर्गत एक अधिकारी की सेवाएं समाप्त कर दी गई। 3 मामलों में प्रशासनिक चेतावनी दी गई। इसके अतिरिक्त, अपील के 7 मामलों पर निर्णय लिया गया, जिनमें से 5 अपीलों को नामंजूर कर दिया गया और एक अन्य मामले में सजा कम की गई। एक अन्य मामले में शामिल अधिकारी को दोषमुक्त कर दिया गया। इसके साथ ही, एक पुनर्विचार याचिका पर भी निर्णय लिया गया। 6 मामलों पर बड़ी सजा के लिए नियमित विभागीय कार्रवाई करने का विचार है।

अध्याय 4

आकाशवाणी

रेडियो तंत्र

4.1.1. आकाशवाणी के अब 175 प्रसारण केन्द्र हैं जिनमें 168 केन्द्र सभी सुविधाओं से युक्त पूरी तरह कार्यरत हैं, 3 प्रसारण केन्द्र हैं, एक सहायक केन्द्र और 3 पूर्णरूप से विविध भारती विज्ञापन केन्द्र हैं। रेडियो तंत्र में 146 मीडियम वेव, 49 शॉर्ट वेव तथा 85 एफ.एम. प्रसारण केन्द्र हैं। वर्तमान में देश की 89.7 प्रतिशत जनसंख्या रेडियो-कार्यक्रम सुन सकती है। विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में इस तंत्र की जो प्रगति हुई है, उसे 4.2.1 अ आलेख में दिखाया गया है। इस क्षेत्र तथा जनसंख्या के हिसाब से रेडियो सुननेवालों की संख्या में वृद्धि को 4.2.1 ब आलेख में दिग्दर्शित किया गया है।

4.1.2. छठी और सातवीं पंचवर्षीय योजनाओं में सीमित क्षेत्र में स्थानीय लोगों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए आरंभ करने की एक प्रमुख योजना बनाई गई थी, जिसमें 73 और ऐसे केन्द्र स्थापित करने का कार्य शामिल किया गया। अब स्थापित स्थानीय रेडियो केन्द्रों की संख्या बढ़कर 64 हो गई है।

4.1.3. इस समय आकाशवाणी सारे देश में रेडियो कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए इनसैट-1 डी और इनसैट-2 ए का इस्तेमाल कर रहा है। उपग्रह इनसैट-1 डी के सी एण्ड एस बैंड से सात रेडियो तंत्र (आर.एन.) संवाहक कार्य कर रहे हैं। इन आर. एन. संवाहकों से जो रेडियो केंद्र जुड़े हुए हैं, वे हैं : (अ) दिल्ली-4 चैनल और, (ब) बम्बई, कलकत्ता-प्रत्येक में एक-एक चैनल और मद्रास। चार आर.एन. चैनल प्रसारण भवन, दिल्ली भू-केन्द्र से उपग्रह इनसैट-2 ए के सी बैंड से जुड़े हैं और ये कार्यक्रम बम्बई, नागपुर, अहमदाबाद, भोपाल, गुवाहाटी, हैदराबाद, राजकोट, मद्रास, बंगलौर, अलीगढ़, गोरखपुर, धारवाड़, अलप्पी और कटक आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित हो रहे हैं।

4.1.4. इनसैट-2 उपग्रह उपलब्ध होने के कारण इनसैट-2 ए के सी एंड एस-1 में 21 आर.एन. चैनलों को चालू कर दिया गया है। इन चैनलों के जुड़ने से कार्यक्रमों के विस्तारण का कार्य दिल्ली-7, बम्बई (वी.डी.), श्रीनगर, अहमदाबाद, भोपाल, कटक, पटना, गुवाहाटी, शिलोंग, त्रिवेन्द्रम, हैदराबाद, बंगलौर, जयपुर, शिमला और लखनऊ प्रत्येक नगर में एक-एक स्थान से होता है। "एस" बैंड के लिए प्रसारण-ग्रहण की सुविधा आकाशवाणी केन्द्रों को सुलभ कराई गई है। (इस समय जिनकी संख्या 178 है) और इसके अतिरिक्त प्रसारण-स्थल से सीधे "डी बी" कार्यक्रमों को दिखाने के लिए चलित सम्पर्क टर्मिनल भी उपलब्ध कराये गये हैं।

4.1.5. आकाशवाणी के आधुनिकीकरण तथा विस्तार की अनेक योजनाएं बनाई गई हैं जिनमें उत्तरी क्षेत्र में इनकी संख्या 81, पूर्वी क्षेत्र में 86, पश्चिमी क्षेत्र में 66 और दक्षिणी क्षेत्र में 61 है। आकाशवाणी के उत्तरी क्षेत्र में 47, पूर्वी में 41, पश्चिमी क्षेत्र में 45 तथा दक्षिणी क्षेत्र में 42 केन्द्र हैं।

समाचार सेवा प्रभाग

4.2.1. आकाशवाणी ने नागपुर में हुई भगदड़ की दुर्घटना के समाचार को तुरंत प्रसारित कर दिया था जिसमें सौ से भी अधिक गावरी जनजातीय लोगों की जानें गई थीं। ये लोग नौकरियों में आरक्षण दिये जाने की मांग को लेकर प्रदर्शन कर रहे थे।

4.2.2. आकाशवाणी द्वारा प्रसारित समाचारों में कश्मीर घाटी में सामान्य स्थिति कायम करने के लिए सरकार की कोशिशें, प्रधानमंत्री के अधीन जम्मू-कश्मीर मामलों के लिए एक अलग विभाग का गठन,

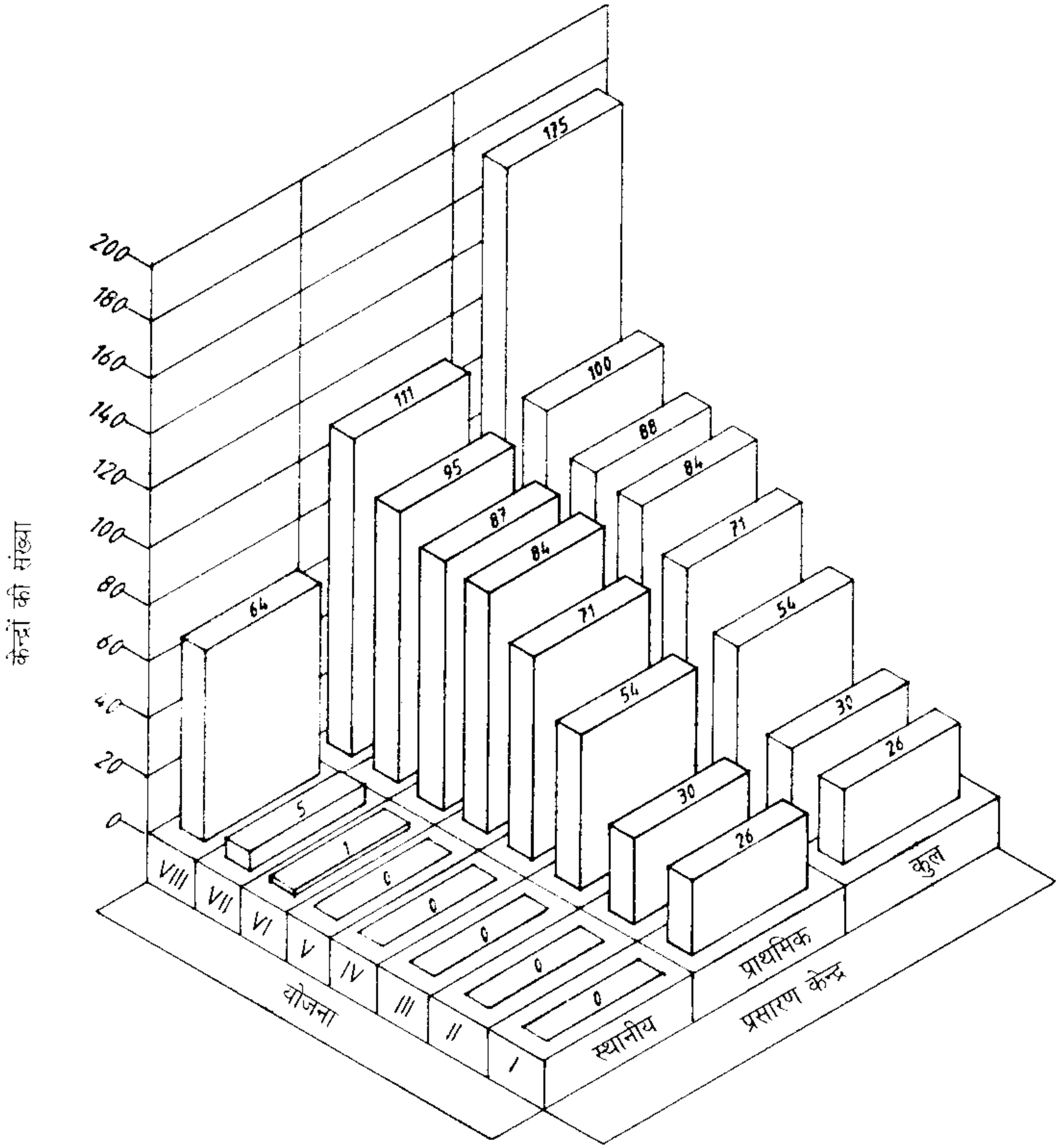

क्रमिक योजनाओं में रेडियो केन्द्रों की वृद्धि

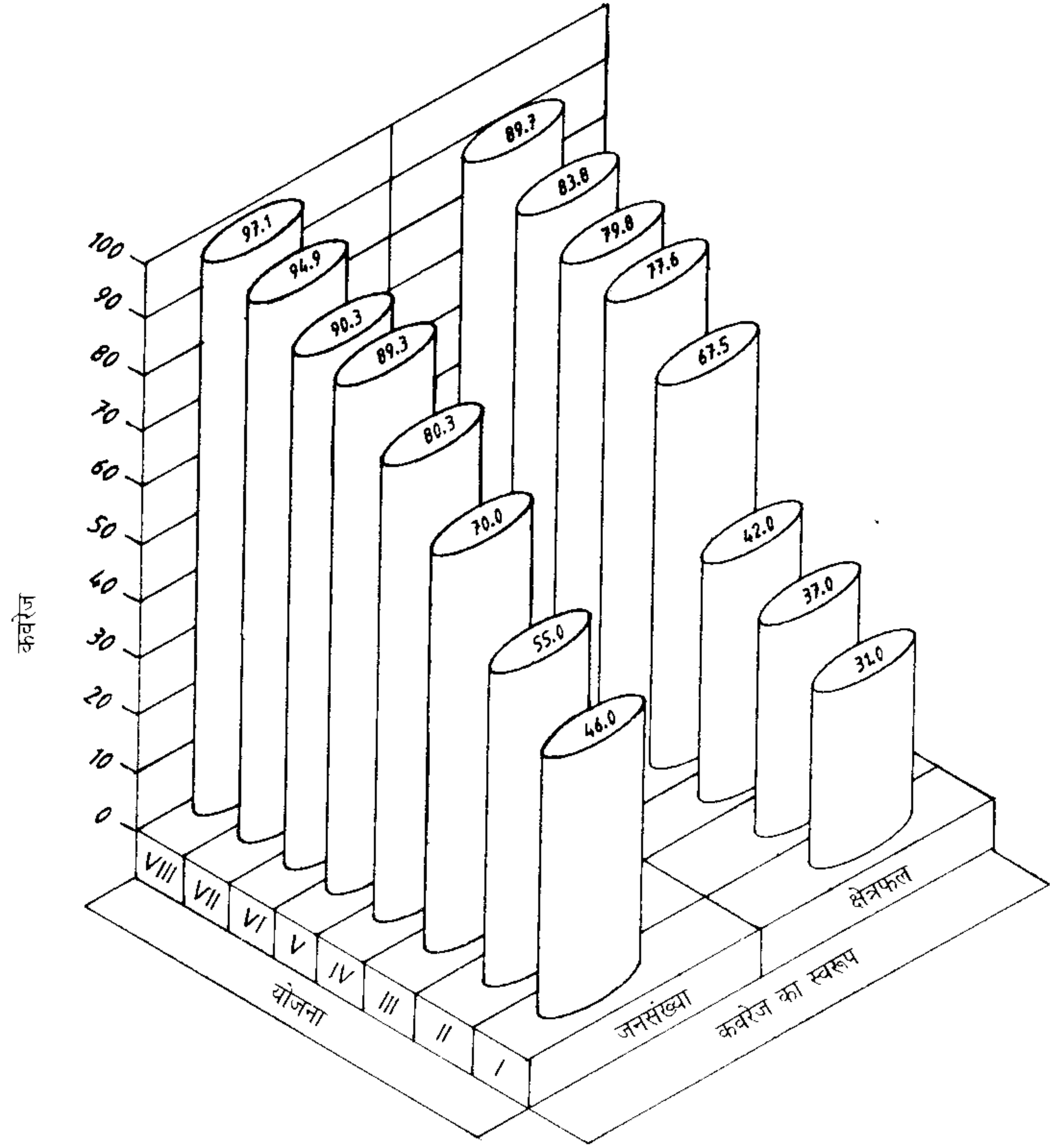

क्रमिक योजनाओं के बाद जनसंख्या व क्षेत्रफल का कवरेज

कुछ देशों के राजनयिकों सहित कुछ प्रमुख लोगों की कश्मीर घाटी की यात्रा जैसे विषयों पर पर्याप्त ध्यान दिया गया।

4.2.3. आर्थिक परिप्रेक्ष्य में, सरकार द्वारा भारतीय अर्थव्यवस्था को उदार बनाने के लिए किये गये उपायों को समाचार बुलेटिनों तथा समाचार पर आधारित कार्यक्रमों में व्यापक रूप से प्रसारित किया गया। इनमें भारत द्वारा मारकश में "गैट" संधि पर हस्ताक्षर, मुद्रा-स्फीति में कमी तथा ऋण देने के लिए बैंकों की दरों का विनियमन, "गैट" संधि के विभिन्न पक्ष तथा दीर्घ अवधि में भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़नेवाला इसका प्रभाव तथा डंकल-प्रस्ताव जैसे विषय शामिल हैं।

4.2.4. समाचार प्रसारणों में वर्ष भर चलने वाले राजीव गांधी की स्वर्ण जंयती समारोह, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का जन्म-दिवस, जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड की 75 वीं वर्षगांठ जैसे विषयों का उल्लेख किया गया। आचार्य विनोबा भावे की जन्मशती पर राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा द्वारा भूदान के संदेश को प्रचारित करने के लिए "जय जगत समारोह" को भी समाचार-प्रसारणों में प्रमुख स्थान दिया गया।

4.2.5. राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा की रोमानिया तथा बल्गारिया की आठ दिनों की यात्रा और उप-राष्ट्रपति श्री के.आर. नारायणन की आठ दिनों की आस्ट्रेलिया तथा चीन की यात्रा की खबरों को भी प्रमुखता से दिया गया। प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिंह राव की अमरीका यात्रा, अमरीकी कांग्रेस में उनके संबोधन, अमरीका के राष्ट्रपति के साथ संयुक्त संवाददाता सम्मेलन, रूस की चार दिवसीय यात्रा तथा वियतनाम और सिंगापुर की पांच दिनों की यात्रा का व्यापक प्रसारण किया गया। राष्ट्रपति, उप-राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री की विदेश यात्रा में आकाशवाणी के विशेष संवाददाता भी उनके साथ गये।

4.2.6. विदेशों से भारत की यात्रा पर आये राजनयिकों के समाचार भी दिये गये। इनमें स्लोवाकिया के प्रधानमंत्री श्री याओजिफ मारविक, संयुक्त राष्ट्र के महासचिव डॉ. बुतरस बुतरस घाली, चीन के उप प्रधानमंत्री एवं विदेश मंत्री श्री कुईआन कुईछेन, पूर्व ब्रिटिश प्रधानमंत्री लेडी मागरिट थैचर तथा चीन के रक्षा मंत्री शामिल हैं।

4.2.7. अन्य जिन प्रमुख राष्ट्रीय घटनाओं के समाचार दिये गये, उनमें आंध्र प्रदेश, गोआ, कर्नाटक तथा सिक्किम के चुनाव, पी.वी. नरसिम्हराव सरकार के तीन वर्ष के कार्य-काल की पूर्ति, पंचायती राज प्रणाली के नये कानून को पास करना, महाराष्ट्र तथा आन्ध्र प्रदेश के भूकंप से विस्थापित लोगों का पुनर्वास, भारत के मुख्य न्यायाधीश के रूप में न्यायमूर्ति श्री ए.एम. अहमदी का शपथ ग्रहण करना, मणिपुर में नागा-कुकी विवाद, प्रतिभूति घोटाले में संयुक्त संसदीय समिति (जे.पी.सी) की सिफारिशें तथा कार्रवाई-रिपोर्ट पर गतिरोध, उत्तराखण्ड मामला और आरक्षण के समर्थन एवं विरोध में आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में उत्तर प्रदेश की स्थिति, चीन में भारत समारोह, जाने-माने गीतकार मजरूह सुलतानपुरी को दादा साहेब फाल्के पुरस्कार की प्राप्ति, श्रीमती किरण बेदी को प्राप्त मेगासेसे पुरस्कार तथा देश के अनेक भागों में अचानक हुई भारी वर्षा तथा बाढ़ की घटनाएं शामिल हैं। अकाशवाणी पर सुश्री सुष्मिता सेन के "मिस यूनिवर्स" और सुश्री एश्वर्य राय के "मिस वर्ल्ड" चुने जाने की घटनाओं को भी प्रमुखता से प्रसारित किया गया।

4.2.8. भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी के नेताओं राजेश्वर राव तथा रेणु चक्रवर्ती, पंजाब के राज्यपाल सुरेन्द्र नाथ, मलयालम लेखक वाइकम मोहम्मद बशीर, सुप्रसिद्ध उड़िया लेखक कनुशरण मोहन्ती, लेखक तथा संगीतकार पुरूषोत्तम दास, जाने-माने स्वतंत्रता सेनानी लक्ष्मी एन.मेनन तथा उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व राज्यपाल सी.पी.एन. सिंह के दिवंगत होने के समाचार प्रमुखता से प्रसारित हुए। इन व्यक्तियों को श्रद्धाजंलि अर्पित करते हुए उनके बारे में राष्ट्रपति, उप-राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री के सम्वेदना-संदेश भी प्रसारित किए गये। आकाशवाणी ने सेना-प्रमुख जनरल बी.सी.जोशी तथा भूतपूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह के देहान्त के समाचार अन्य समाचार ऐजेंसियों द्वारा दिये जाने से काफी पहले अपने बुलेटिनों में दे दिये थे।

4.2.9. आकाशवाणी के कोलम्बो संवाददाता ने एक बम दुर्घटना में श्रीलंका में राष्ट्रपति-पद के लिए विपक्ष के उम्मीदवार श्री जैमिनी दिशानायके तथा 60 अन्य लोगों की मृत्यु का समाचार अन्य एजेंसियों से काफी पहले दे दिया था। नेपाल में संसदीय चुनावों और कम्यूनिस्ट नेता श्री मनमोहन अधिकारी के नये प्रधानमंत्री के रूप में शपथ-ग्रहण करने की खबरों का भी व्यापक प्रचार-प्रसार किया गया।

4.2.10. जिन अन्य महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय समाचारों को प्रसारित-प्रचारित किया गया, उनमें दक्षिण अफ्रीका में पहले बहु-जातीय चुनाव, डॉ. नेलसन मण्डेला का राष्ट्रपति के रूप में चुनाव, यमन का गृह युद्ध, श्री नवाज शरीफ की यह स्वीकारोक्ति कि पाकिस्तान के पास परमाणु बम है, कराची तथा पाकिस्तान के अन्य भागों में हिंसा की वारदातें, मेक्सिको में संसदीय तथा राष्ट्रपति चुनाव, जर्मनी और श्रीलंका में आम-चुनाव, हैती मामले का शांतिपूर्ण समाधान, इराक के कुवैत को मान्यता दिये जाने में खाड़ी देशों में तनाव की कमी, काहिरा में संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या सम्मेलन तथा गुट-निरपेक्ष देशों का मंत्रीस्तरीय सम्मेलन, बम्बई बम विस्फोट अभियुक्तों में से प्रमुख अभियुक्त याकूब मेमन की गिरफ्तारी, चीन में जस्ते की खान में विस्फोट की घटना जिसमें 73 लोगों की मृत्यु हुई, विश्व की सबसे लम्बी "ऑप्टिकल फाईबल केबल" योजना का उद्घाटन और फलस्तीनी मुक्ति मोर्चे के अध्यक्ष यासर अराफात, इजरायल के प्रधानमंत्री यित्जाक राबिन और इजरायल के विदेशमंत्री शिमोन पेरेज को नोबल शांति पुरस्कार संयुक्त रूप से दिये जाने की घोषणा जैसे समाचार प्रमुख हैं।

4.2.11. समाचार सेवा प्रभाग ने विश्व फुटबॉल कप, विम्बलडन टेनिस प्रतियोगिताओं तथा हिरोशिमा एशियाई खेलों के नवीनतम समाचार आकाशवाणी से प्रसारित करने के विशेष प्रबंध किये। जिन अन्य खेल-कूद की घटनाओं को प्रसारित किया गया, उनमें फ्रेंच ओपन टेनिस प्रतियोगिता, विक्टोरिया में राष्ट्रमण्डल खेल, यू.एस. ओपन टेनिस प्रतियोगिता, आस्ट्रेलिया क्रिकेट कप, महिलाओं की राष्ट्रीय शतरंज प्रतियोगिता, महिलाओं की विश्व बास्केट बाल चैम्पियनशिप, डूरण्ड कप फुटबॉल, नेहरू गोल्ड कप हॉकी, इन्दिरा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय गोल्ड कप हॉकी तथा विभिन्न क्रिकेट श्रृंखलाएं शामिल हैं।

4.2.12. समाचार प्रसारणों में संसद के दोनों सदनों की दैनिक कार्यवाही को प्रमुखता दी गई और महत्वपूर्ण परिचर्चाओं का आयोजन किया गया। "टुडे इन पार्लियामेंट" (दैनिक) तथा "दिस वीक इन पार्लियामेंट" (शनिवार साप्ताहिक) के सार-संक्षेप संसद-सत्र के दौरान हिन्दी तथा अंग्रेजी में दिए गए। राज्य विधानसभाओं की कार्यवाही की समीक्षा "आर.एन.यू." चैनलों पर राज्य की राजधानी केन्द्रों से उपलब्ध कराई गई।

4.2.13. हज यात्रा के दौरान यात्रियों के लाभ के लिए प्रति-दिन पांच मिनट के समाचार प्रसारित किये गये।

4.2.14. इस समय आकाशवाणी के भारत में 101 और विदेशों में 7 नियमित संवाददाता हैं। इसके अतिरिक्त, 246 अंशकालिक (पार्ट-टाइम) संवाददाता हैं, जो 293 समाचार प्रसारणों के लिए रोजाना कार्य करते है और कुल 39 घंटे 20 मिनट प्रसारण-कार्य करते हैं। इसमें से 89 प्रसारण घरेलू सेवाओं के लिए एवं 41 क्षेत्रीय इकाइयों के लिए होते हैं। विदेश सेवा में प्रतिदिन 65 समाचार प्रसारण किय जाते हैं।

घरेलू सेवाएं

आकाशवाणी के राष्ट्रीय चैनल की शुरूआत 18.5.88 को हुई थी। इससे देश की 70 प्रतिशत जनसंख्या तक कार्यक्रम पहुंचते हैं और यह ज्ञान तथा मनोरंजन के कार्यक्रम प्रस्तुत करता है। इन कार्यक्रमों में हिन्दुस्तानी, कर्नाटक तथा पश्चिमी जगत के उच्च कोटि के संगीत, खोज-परक रिपोर्टों, रूपक, पत्रिका, नाटक, खेल, उर्दू तबसरा, एवं विविधा जैसे कार्यक्रम सम्मिलित है। इनका प्रसारण समय सायं 6.50 से प्रातः 6.10 का है। कलकत्ता का उच्च शक्ति का ट्रांसफार्मर भी रात्रि 23.00 से प्रातः 6.00 पर यह प्रसारण जारी रखता है। राष्ट्रीय चैनल अपने दैनिक कार्यक्रमों में रात 1.00

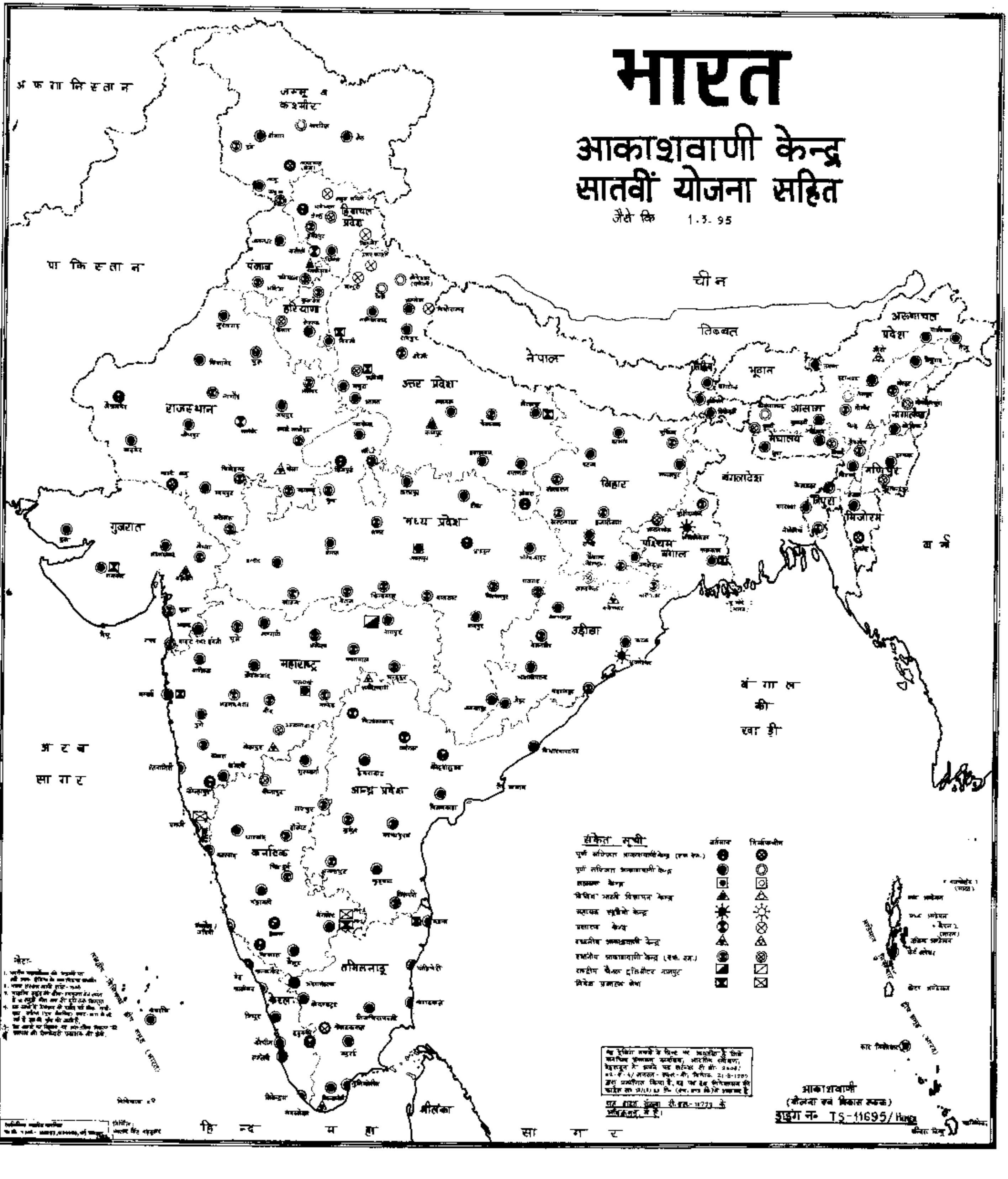
भारत
आकाशवाणी केन्द्र
सातवीं योजना सहित
जैसे कि 1-3-95
अफगानिस्तान
पाकिस्तान
चीन
तिब्बत
नेपाल
भूटान
बंगलादेश
बर्मा
जम्मू व कश्मीर
हिमाचल प्रदेश
पंजाब
हरियाणा
राजस्थान
उत्तर प्रदेश
बिहार
गुजरात
मध्य प्रदेश
पश्चिम बंगाल
उड़ीसा
महाराष्ट्र
आन्ध्र प्रदेश
कर्नाटक
तमिलनाडु
केरल
असम
मेघालय
अरुणाचल प्रदेश
मणिपुर
त्रिपुरा
मिजोरम
अरब सागर
बंगाल की खाड़ी
हिन्द महासागर
श्रीलंका
संकेत सूची
वर्तमान
निर्माणाधीन
आकाशवाणी
(योजना एवं विकास एकक)
ड्राइंग नं. TS-11695/Hindi

बजे से अतिरिक्त समाचार बुलेटिन हर एक घंटे बाद प्रसारित करता है। इससे संसद के "प्रश्न काल" को भी प्रसारित किया जाता है।

4.3.2. आकाशवाणी ने भारतीय संगीत (शास्त्रीय, सुगम, लोकसंगीत और ऑरकेस्ट्रा निर्मितियों, समूह गानों) तथा पश्चिमी संगीत के प्रति जागरूकता लाने और उसको समझने के लिए अपना अप्रतिम योगदान दिया है। कुल प्रसारण कार्यक्रमों का 39.2 प्रतिशत संगीत कार्यक्रम होता है। सभी शनिवारों को राष्ट्रीय संगीत कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है। इनमें प्रमुख आकाशवाणी संगीत सम्मेलन में उच्च कोटि के तथा प्रतिभाशाली कलाकारों के कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते हैं, जबकि प्रत्येक रविवार को क्षेत्रीय चैनल पर नये उभरते कलाकारों के कार्यक्रम दिये जाते हैं।

4.3.3. 1994 में महात्मा गांधी की 125वीं जयंती पर क्षेत्रीय तथा लोक संगीत के राष्ट्रीय कार्यक्रम में केरल, असम और उत्तरी बंगाल का संगीत, बिहार के होली तथा वसंत गीत और बापू के प्रिय भजन प्रसारित किये गये। विभिन्न आकाशवाणी केन्द्रों पर 20 कार्यक्रम-निर्माण इकाइयां स्थापित की गई हैं जो देश के दूरस्थ इलाकों के लोक तथा आदिवासी संगीत को संरक्षित करने का कार्य करती हैं।

4.3.4. इस वर्ष 46वें आकाशवाणी संगीत सम्मेलन का प्रसारण किया गया। इसमें जिन प्रमुख कालाकारों ने हिस्सा लिया, उनमें भीमसेन जोशी, डॉ एन.राजम, के.जे. येशुदास, विश्व मोहन भट्ट, हरिप्रसाद चौरसिया, राजन मिश्र, साजन मिश्र, एस.आर.डी. मुत्थुकुमार स्वामी और एस.आर.डी. वैद्यनाथन तथा देवव्रत चौधरी प्रमुख हैं। इस सम्मेलन की उल्लेखनीय विशेषता यह है कि देश के भिन्न-भिन्न क्षेत्र के संगीत प्रेमियों को अलग-अलग प्रान्तों के कलाकारों के संगीत का रसास्वादन कराया गया।

4.3.5. आकाशवाणी प्रतिवर्ष युवा प्रतिभाओं के लिए संगीत प्रतियोगिता का आयोजन करता है। इन्हें हिन्दुस्तानी तथा कर्नाटक संगीत श्रेणियों में आयोजित किया जाता है तथा भिन्न वर्गों में 45 पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। इस वर्ष ये प्रतियोगिताएं विजयवाड़ा, जमशेदपुर और इन्दौर में आयोजित की गई।

4.3.6. राष्ट्रीय समूहिक संगीत "वाद्यवृंद" की दो इकाइयां दिल्ली तथा मद्रास में कार्यरत हैं। आकाशवाणी सारे देश में अपने स्वीकृत समूह-गान ग्रुपों की मारफत इस विद्या को प्रोत्साहन प्रदान करता है।

4.3.7. आकाशवाणी समूह-गान सैल समस्त देश में विभिन्न भाषाओं में समूह-गान के प्रसारण का आयोजन तथा समन्वय करता है।

4.3.8. आकाशवाणी ने "रामचरित मानस" योजना के अन्तर्गत शास्त्रीय संगीत रचनाओं के निर्माण का कार्य भी अपने हाथ में लिया है। इस श्रेणी में त्यागराज के संगीत "दिव्य नाम संकीर्तनम्" और रवीन्द्रनाथ टैगोर के संगीत "रवीन्द्र संगीत" पर कार्य हो रहा है।

खेल-प्रसारण

4.4.1. आकाशवाणी के भिन्न-भिन्न कार्यक्रमों में खेल प्रसारण का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि इनको सुननेवालों की संख्या विशाल है। आकाशवाणी के खेल-प्रसारण देश में विभिन्न खेल-आयोजनों के बारे में सूचनाएं देने और खेल-चेतना जाग्रत करने में सहायक होते हैं।

4.4.2. विभिन्न खेलों तथा खेल-प्रतियोगिताओं के बारे में निरन्तर जानकारी देने के लिए, आकाशवाणी रोजाना हिन्दी तथा अंग्रेजी में खेल-समाचार प्रसारित करता है जिसकी अवधि पांच-पांच मिनट की होती है। इसके अतिरिक्त हिन्दी और अंग्रेजी में मासिक 30-30 मिनट का खेल-पत्रिका कार्यक्रम होता है ताकि युवकों में खेल-कूद लोकप्रिय बने।

4.4.3. 1994 के दौरान, आकाशवाणी ने भारत तथा विदेशों की महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय खेल-कूद प्रतियोगिताओं का प्रभावपूर्ण प्रसारण किया। इनमें विम्बलडन और डेविस कप प्रतियोगिता, भारत-श्रीलंका

क्रिकेट श्रृंखला, भारत-वेस्ट इण्डीज प्रतियोगिता और त्रिकोणीय विश्व क्रिकेट श्रृंखला, अमरीका के विश्व कप फुटबॉल टूर्नामेंट, अन्तर्राष्ट्रीय एथलेटिक्स परमिट प्रतियोगिता, विश्व बिलयर्ड चैंपियन शिप, हिरोशिमा (जापान) के 12वें एशियन खेल और सिडनी (आस्ट्रेलिया) का 8वां विश्व कप हॉकी टूर्नामेंट का राष्ट्रीय प्रसारण शामिल हैं। सभी प्रमुख खेलों, राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के आयोजन के अवसर पर परिचर्चाएं, पुनर्प्रसारण, खेल-स्थल से संवाददाता द्वारा सीधी जानकारी तथा भेंट—वार्ताएं प्रसारित की गई।

4.4.4. उपर्युक्त प्रसारण के अलावा, आकाशवाणी ने जमशेदपुर में सीनियर नेशनल बेडमिंटन चैंपियनशिप, कलकत्ता में भारत तथा हांगकांग के बीच एशिया ओसीनिया ग्रुप-1 डेविस कप टाई, तथा न्यूजीलैण्ड में चार देशों की क्रिकेट प्रतियोगिता का भी प्रसारण किया। आकाशवाणी खो-खो, कबड्डी आदि पारंपारिक खेलों का आंखों-देखा हाल प्रसारित करके उन्हें प्रोत्साहन देता है।

परिवार कल्याण

4.5.1. आकाशवाणी हर महीने अपने सभी प्रसारण केन्द्रों से लगभग सभी भाषाओं तथा बोलियों में परिवार कल्याण के 9,000 से अधिक कार्यक्रम प्रसारित करता है। छोटे और सुखी परिवार का मुख्य रूप से प्रचार किया जाता है। इसके अलावा, एड्स, टी.बी, संक्रामक रोगों, दूषित जल पीने से होने वाले रोगों, मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम आदि से संबंधित कार्यक्रम भी स्वास्थ्य कार्यक्रमों के तहत दिये जाते हैं। रोगों से प्रभावित क्षेत्रों में उपयोगी सलाह तथा स्वास्थ्य निर्देश चौबीसों घंटे प्रसारित किए जाते हैं। आकाशवाणी का प्रत्येक केन्द्र 15 मिनट का "हैल्थ फोरम" साप्ताहिक कार्यक्रम देता है। "गर्ल चाईल्ड" के महत्व को व्यक्त करने वाले कार्यक्रमों के अतिरिक्त "यूनिसेफ" के सहयोग से मां तथा शिशु के स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए जाते हैं। संयुक्त राष्ट्र बाल अधिकार सम्मेलन के प्रचार पर काफी ध्यान दिया गया। 22 केन्द्रों की परिवार कल्याण इकाइयों में परिवार कल्याण समितियां हैं जो इन इकाइयों को कार्यक्रम संबंधी मार्ग-दर्शन करती हैं।

4.5.2. युववाणी-कार्यक्रम युवाओं के लिए, युवाओं का और युवाओं द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम हैं। यह मंच सही दिशा में अपनी ऊर्जा लगाने के लिए उन्हें प्रेरित करता है, और विभिन्न सृजनात्मक कार्यो में आगे आने के लिए उनको प्रोत्साहित करता है। यह उन्हें विभिन्न विषयों पर अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का अवसर भी देता है। आकाशवाणी ने कुछ केन्द्रों पर अलग-से युववाणी चैनलों को आरंभ किया है। आकाशवाणी के अधिकांश केन्द्र मुख्य चैनल पर युववाणी कार्यक्रमों का प्रसारण करते हैं जिससे कि स्थानीय युवा वर्ग को उसमें शामिल होने के अवसर प्राप्त हों। सामान्य कार्यक्रमों में भी युवकों के भाग लेने पर कोई प्रतिबंध नहीं है।

4.5.3. वयोवृद्ध लोगों के लिए 17 राजधानी केन्द्रों से कार्यक्रम प्रस्तुत किए जा रहे हैं। प्रति सप्ताह इसकी अवधि 30 मिनट की है। इन प्रसारणों में वृद्धावस्था में स्वास्थ्य की देखरेख, पेंशन-समस्याएं, टैक्सों की देनदारी, कानूनी सलाह, प्राचीन ग्रंथों का पाठ, सामयिक विषय, वृद्ध आश्रय अथवा विश्राम स्थल, पुराने लोकप्रिय गीत, प्रहसन, चुटकुले, बीते समय की स्मृतियां तथा ऐसी अन्य रोचक सामग्री शामिल की जाती है।

4.5.4. अनेक आकाशवाणी केन्द्रों से क्षेत्रीय भाषाओं में औद्योगिक कामगारों के लिए कार्यक्रम प्रस्तुत किए जा रहे हैं जिनकी अवधि 20 से 30 मिनट की होती है। ये कार्यक्रम सप्ताह में दो से सात दिन तक प्रसारित होते हैं। इनके विषय लघु उद्योगों, सार्वजनिक क्षेत्र के संस्थानों में कल्याण कार्य, श्रमिकों के लिए लागू होने वाले कानून, मजदूर संघ, न्यूनतम मजदूरी आदि अथवा इसी प्रकार के अन्य विषय होते हैं।

4.5.6. सरकार की नई आर्थिक नीति का आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों द्वारा आम जनता के तथा विशेष श्रोता कार्यक्रमों में व्यापक प्रसारण किया जा रहा है। राष्ट्रीय नेटवर्क पर प्रसारण के लिए हिन्दी तथा अंग्रेजी में 10 विशेष रूपक तैयार किये गये हैं जिनका उद्देश्य गैट-संधि पर हस्ताक्षर किए जाने के परिणाम-स्वरूप देश में उत्पन्न उत्पादों की निर्यात-वृद्धि की संभावनाओं को उजागर करना है।

4.5.7. राजीव गांधी स्वर्ण जयंती समारोहों, जलियांवाला बाग की 75वीं वर्षगांठ, विनोबा भावे जन्मशती तथा प्रधानमंत्री की रोजगार योजना के बारे में परिचर्चाओं तथा कार्यक्रमों का प्रसारण किया गया।

4.5.8. जिन राज्यों में विधानसभा चुनाव हुए, वहां राजनीतिक दलों के प्रसारण किये गये। ये प्रसारण दो बार हुए और प्रत्येक मान्यता प्राप्त दल को प्रसारण की सुविधा उपलब्ध कराई गई। मतदाताओं को मतदान के अधिकार की जानकारी देने के लिये मतदाता जागरूकता अभियान भी शुरू किया गया।

कृषि और गृह

4.6.1. आकाशवाणी के सभी केन्द्रों से कृषि और गृह कार्यक्रमों को रोजाना प्रसारित किया जाता है जिनकी अवधि प्रतिदिन 40-60 मिनट होती है। किसान समाचार अथवा "कृषि चर्चा" के प्रातः प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों का आधार विशिष्ट कृषि-कार्य होता है, जिसके पश्चात् मौसम की खबर दी जाती है। दोपहर और शाम के कार्यक्रम सभी ग्रामीण विकास योजनाओं के बारे में होते हैं, जिनमें बैंकों, ग्रामीण कृषि उद्योगों के साथ बाजार-भाव भी होते हैं। खेत और घर कार्यक्रमों में मातृत्व के कार्यक्रम, बाल कल्याण तथा समाज कल्याण के भी कार्यक्रम होते हैं जिनके प्रस्तुतिकरण में "यूनिसेफ" सहयोग करता है। इन कार्यक्रमों में से 40 प्रतिशत कार्यक्रम कृषि पर आधारित होते हैं।

4.6.2. "पर्यावरण संरक्षण" कार्यक्रमों, महिला समृद्धि योजना, आई.आर. डी.पी., जे.आर.वाई., डी.डब्ल्यू.सी. आर.ए., पंचायत राज आदि पर अधिक ध्यान दिया गया है और जल-विभाजन प्रबंध के साथ ही ''फॉर्म स्कूल ऑन एअर'' कार्यक्रम भी अधिकांश राज्यों में प्रसारित किये जा रहे हैं। ग्रामीण कार्यक्रम सलाहकार समिति की सलाह से कार्यक्रमों की योजना अग्रिम रूप से तैयार कर ली जाती है।

शैक्षिक कार्यक्रम

4.7.1. वर्तमान में 48 केन्द्र स्कूलों के लिए प्रसारण करते हैं और 29 केन्द्र इन्हें रिले करते हैं। जो सेवाएं पूर्ण रूप से क्षेत्रीय हैं, उनके कार्यक्रम ऐसे होते हैं जो अधिकांश पाठ्यक्रमों पर आधारित हों और कुछ कार्यक्रम ज्ञानवृद्धि के लिए भी हों। आकाशवाणी "प्रौढ़ शिक्षा" पर 45 केन्द्रों तथा "विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी" पर 21 केन्द्रों से कार्यक्रम प्रसारित कर रहा है।

4.7.2. विश्वविद्यालयों में पत्राचार शिक्षा की शुरूआत से दिल्ली विश्वविद्यालय, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, डॉ. बी.आर.अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय, हैदराबाद, मदुरई कामराज मुक्त विश्वविद्यालय, मदुरई को आकाशवाणी केन्द्र दिल्ली, जालंधर, हैदराबाद तथा तमिलनाडु के सभी केन्द्रों ने अपना सहयोग दिया। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय को प्रायोगिक तौर पर हैदराबाद और बम्बई से दिसंबर, 1994 तक आकाशवाणी ने सहयोग दिया। आकाशवाणी शिलोंग को भी अक्तूबर, 1994 से मार्च, 1995 तक इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के लिए आकाशवाणी का सहयोग दिया गया।

4.7.3. केन्द्रीय शिक्षा योजना इकाई की स्थापना 7वीं योजना के दौरान की गई थी और इसने "विज्ञान विधि", "निसर्ग समाधि", "रेडियो डेट", "पर्ल", (प्रोजेक्ट फॉर रेडियो एजुकेशन फॉर एडल्ट लिट्रेसी), "एवोल्यूशन ऑफ मैन" और "दहलीज" की अनेक कार्यक्रम-श्रृंखलाएं निर्मित की थी। आकाशवाणी से स्कूल प्रसारण की सुनी जाने वाली सामग्री का हिस्सा 7.5 प्रतिशत है।

4.7.4. फेमिली प्लानिंग फाउण्डेशन (अब फेमिली प्लानिंग फाउण्डेशन ऑफ इंडिया) के सहयोग से कैशोर्य तथा आबादी का समाजीकरण की समस्या पर आधारित "दहलीज" श्रृंखला को आरंभ में 26 कड़ियों में प्रसारित करने की योजना थी, लेकिन बाद में श्रोताओं की मांग पर इसका प्रसारण बढ़ाकर 52 कड़ियों तक कर दिया गया। इस श्रृंखला को 30 केन्द्रों से 24 अक्तूबर 1993 से 16 अक्तूबर, 1994 तक प्रसारित किया गया। दो रेडियो-ब्रिज कार्यक्रम 26 अगस्त तथा 9 दिसम्बर को आयोजित

किये गये जबकि एक संवाददाता सम्मेलन 6 दिसम्बर 1994 को हुआ था जिसमें करीब 50 पत्रकारों और आकाशवाणी के वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया।

4.7.5. इस वर्ष आकाशवाणी ने तीन मूर्ति, नई दिल्ली में आयोजित विज्ञान प्रदर्शनी में 14 से 28 नवम्बर, 1994 तक भाग लिया। इस प्रदर्शनी का आयोजन बाल-दिवस के उपलक्ष्य में किया गया था। इसमें सी.ई.पी.यू. ने भाग लिया।

4.7.6. आर्थिक दृष्टि से पिछड़े लोगों के अभी स्कूल न जाने वाले छोटे बच्चों के लिए निर्मित कार्यक्रम "चीर" राज्य सरकार के अधिकारियों के अनुरोध पर कटक केन्द्र से पुनः प्रसारित किया जा रहा है। इसके पहले हरियाणा में इसके प्रसारण का एक वर्ष और विस्तार किया गया था। इस परियोजना को अन्य क्षेत्रीय प्रसारणों में विस्तृत किया जा रहा है।

विज्ञापन प्रसारण सेवा

4.8.1. आकाशवाणी की लोकप्रिय विविध-भारती सेवा श्रोताओं को सप्ताह के दिनों में रोजाना 13 घंटे 15 मिनट तथा रविवार और छुट्टी के दिनों में 13 घंटे 45 मिनट के मनोरंजन कार्यक्रम उपलब्ध कराती है। विविध भारती के कार्यक्रम बम्बई, मद्रास, दिल्ली तथा गुवाहाटी के चार शॉर्ट-वेव प्रसारण केन्द्रों सहित कुल 35 केन्द्रों पर उपलब्ध है। हालांकि फिल्मी तथा गैर फिल्मी सुगम संगीत विविध भारती कार्यक्रमों का मुख्य आकर्षण है, लेकिन यहां से प्रसारित प्रहसन, लघु नाटक, रूपक और वार्ताएं भी काफी लोकप्रिय हैं। शॉर्ट-वेव विविध भारती सेवा एक ही समय सिंगल फ्रिक्वेंसी पर भी उपलब्ध है।

4.8.2. विज्ञापन प्रसारण सेवा विविध भारती चैनल पर नवम्बर 1967 में शुरू की गई थी और केवल इसी चैनल से 1993-94 में 36.96 करोड़ रुपये की आय हुई। प्रमुख चैनलों पर विज्ञापन सेवा 26 जनवरी, 1985 में आरंभ की गई थी और हाल ही में इसे 7 और केन्द्रों से जोड़ा गया। 30 विविध भारती केन्द्रों के अलावा आकाशवाणी के कुल 61 केन्द्रों से विज्ञापन प्रसारण होता है। वाराणसी की विविध भारती सेवा अभी पूर्ण रूप से विज्ञापन प्रसारण सेवा नहीं हुई है। 1993-94 में विविध भारती तथा मुख्य चैनलों से विज्ञापनों से कुल आय 64.35 करोड़ रुपयों की हुई जो कि पिछले वित्त वर्ष से 5.44 करोड़ रुपये अधिक थी। विविध भारती और प्राइमरी चैनलों पर प्राप्त राजस्व परिशिष्ट-V में दिया गया है।

विदेश सेवा प्रभाग

4.9.1. एक इलैक्ट्रोनिक राजदूत के रूप में कार्य करने वाला विदेश सेवा प्रभाग (ई.एस.डी.) विश्व के विभिन्न क्षेत्रों के साथ एक महत्वपूर्ण संपर्क सूत्र है, विशेषकर उन देशों के साथ जहां बड़ी संख्या में भारतीय रहते हैं। विदेश सेवा प्रभाग प्रतिदिन 24 भाषाओं में कुल 71 घंटे कार्यक्रम प्रसारित करता है। इनमें से 16 विदेशी भाषा हैं तथा 8 भारतीय। विदेशी भाषाएं अरबी, बलूची, बर्मी, चीनी, दरी, फ्रेंच, इण्डोनेशियन, नेपाली, पर्शियन (फारसी) रूसी, सिंहल, स्वैली, थाई, तिब्बती और अंग्रेजी हैं, जबकि शेष भारतीय भाषाएं हिन्दी, तमिल, तेलगू, गुजराती, पंजाबी, सिंधी तथा उर्दू हैं।

4.9.2. जो प्रसारण होते हैं, उनमें समाचार बुलेटिन, परिचर्चाएं, सामयिकी और भारतीय समाचारपत्रों की समीक्षा के साथ-साथ समाचार-पत्रिका तथा खेलों एवं साहित्य कार्यक्रम शामिल हैं। इसके अतिरिक्त सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विषयों पर वार्ताएं-परिचर्चाएं, विकास संबंधी गतिविधियों, महत्वपूर्ण घटनाओं और संस्थाओं की रूपकात्मक प्रस्तुति, भारत के विभिन्न क्षेत्रों का शास्त्रीय लोक संगीत और आधुनिक संगीत भी प्रस्तुत किए जाने वाले कार्यक्रमों का महत्वपूर्ण अंग है।

4.9.3. विदेश सेवा प्रभाग के उर्दू प्रसारण में एक ऐसे आधुनिक, प्रगतिशील तथा उदीयमान भारत का चित्र प्रस्तुत किया जाता रहा है जिसमें लोकतंत्र, समाजवाद, अन्तर्राष्ट्रीय शांति और सह-अस्तित्व

जैसे आदर्शों की भावनाएं झलकती हैं। पाकिस्तान में मानवाधिकारों का उल्लंघन, सिंध की स्थिति, जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी गतिविधियों को उकसाने में पाकिस्तान की भूमिका और नशीले पदार्थों की तस्करी में पाकिस्तान की संलग्नता जैसे विषयों पर भी विश्व समुदाय का ध्यान आकर्षित किया गया। इसी प्रकार सामान्य विदेश सेवा प्रसारण (जी.ओ.सी.) के हिन्दी तथा अंग्रेजी कार्यक्रमों को और भी अधिक प्रभावपूर्ण बनाते हुए विशेष रूप से प्रवासी भारतीय तथा बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए उदारीकरण की नई आर्थिक नीति का व्यापक प्रचार किया गया तथा सरकारी योजनाओं और भारत में नया निवेश वातावरण में दिये जाने वाले प्रोत्साहनों की जानकारी दी गई। 31 मई, 1994 को तूतिकोरिन में एक नया प्रसारण केन्द्र शुरू होने से सिंहल भाषा के प्रातः प्रसारण में आधे घंटे की और वृद्धि हो गई।

4.9.4. विदेश सेवा प्रभाग मूल रूप से गृह सेवाओं के लिए प्रसारित होने वाले रात्रि के 9 बजे के अंग्रेजी समाचार बुलेटिन को "सार्क" देशों, पश्चिम एशिया, दक्षिण पूर्व एशियाई देशों को जारी रखे हुए है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के तहत विदेश सेवा प्रभाग लगभग सौ देशों तथा विदेश प्रसारण संगठनों को संगीत, वार्त्ताओं-भाषणों एवं अन्य कार्यक्रमों की भी रिकाडिंग उपलब्ध करा रहा हे। साथ ही वह प्रत्येक शनिवार को संयुक्त राष्ट्र समाचार विश्व के अनेक भागों के लिए प्रसारित कर रहा है।

4.9.5. प्रभाग स्वतंत्र रूप से एक मासिक कार्यक्रम पत्रिका "इंडिया कॉलिंग" अंग्रेजी में प्रकाशित कर रहा है जिसमें कार्यक्रमों की पूर्व-सूचना दी जाती है। इसके साथ ही महत्वपूर्ण भाषाओं में त्रैमासिक सूचना-पत्रक भी प्रकाशित किये जाते हैं।

आकाशवाणी वार्षिक पुरस्कार

4.10. आकाशवाणी प्रति वर्ष विभिन्न श्रेणियों तथा विषयों पर उत्कृष्ट प्रसारणों पर पुरस्कार प्रदान करता हैं। इनमें नाटक, वृत्तचित्र, रूपक, संगीत रचनाएं, नवीन कार्यक्रम, श्रेष्ठ खेत और घर कार्यक्रम, परिवार कल्याण पर आधारित कार्यक्रम तथा युववाणी के कार्यक्रम शामिल हैं। राष्ट्रीय एकता पर विशेष "लासा कौल पुरस्कार" और रिपोर्टिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए "वर्ष का श्रेष्ठ संवाददाता" पुरस्कार भी प्रदान किया जाता है। विशिष्ट विषय वृत्तचित्र पुरस्कार भी है जिसमें इस वर्ष का विषय "परिवार" है। बच्चों के लिए समूह-गान प्रतियोगिता विभिन्न आकाशवाणी केन्द्रों पर आयोजित होती है। जिसमें सर्वश्रेष्ठ समूह-गान को राष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार दिया जाता है। आकाशवाणी सर्वोत्कृष्ट संचालन तथा रख-रखाव के लिए केन्द्र को पुरस्कृत करने के अतिरिक्त श्रेष्ठ विज्ञापन प्रसारण सेवा केन्द्र और अनुसंधान तथा विकास को प्रोत्साहित करने के लिए तकनीकी श्रेष्ठता के पुरस्कार प्रदान करता है। आकाशवाणी पुरस्कार योजना में प्रतिभाशाली कार्यक्रम निर्माताओं और उद्घोषकों को भी उनकी रचनात्मक प्रतिभा के लिए सम्मानित किया जाता है।

आकाशवाणी ध्वनि अभिलेखागार

4.11.1. 1994 में इस अभिलेखागार में 350 टेप शामिल थे जिनमें आकाशवाणी संगीत सम्मेलन, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद स्मारक भाषण, पटेल स्मारक भाषण की संग्रहणीय रिकार्डिंग शामिल हैं। संग्रहालय ने संयुक्त राष्ट्र विकास परियोजना (यू.एन.डी.पी.) द्वारा प्रायोजित आकाशवाणी के 459 टेपों की आपूर्ति की, 50 संगीत के टेप तथा महात्मा गांधी के भाषणों के 30 टेप "कॉम्पेक्ट डिस्क" पर पुनर्मुद्रण (डबिंग) के लिए दिये। टैगोर की कविता-पाठ के छः टेप भी दिए गए। राष्ट्रीय महत्व के जो महत्वपूर्ण कार्यक्रम इस संग्रहालय में सुरक्षित रखे गये हैं, उनमें राष्ट्रपतियों, प्रधानमंत्रियों तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों के भाषण, रेडियो आत्मकथाएं, विचार तथा संगीत-रचनाएं शामिल हैं।

4.11.2. इस वर्ष के दौरान कई प्रमुख संगीतकारों की अभिलेखागार में रिकार्ड करके सुरक्षित रखी गयी सामग्री एच.एम.वी. और टी.सीरिज, और अन्य ग्रामोफोन कम्पनियों को जारी की गई। इनमें

श्रीमती पद्मावती शालिग्राम, उस्ताद बड़े गुलाम अली खां, श्रीमती एम.एस. सुब्बालक्ष्मी, श्रीमती अनुराधा पोडवाल, इद्राणी सेन, सुमन चट्टोपाध्याय, श्री राघी बनर्जी, वाणी जयराम, चन्दनदास, आरती मुखर्जी, अहमद हुसैन, मोहम्मद हुसैन, श्री यशवंत बुआजोशी, श्रीमती नलिनी राजुरकर, विनायक राव पटवर्द्धन, पं. नारायण राव व्यास, पं. रसिकलाल अंधारिया, पं. अमरनाथ मिश्र, उस्ताद अहमद जान थिरकवा, सरदार भाई करदगेकर, शरद चन्द्र अरोलकर, उस्ताद अल्ताफ हुसैन खान तथा कलकत्ता एवं सिलीगुड़ी में रिकार्ड किये गये पूजा-गीत भी शामिल है।

यू.एन.डी.पी. परियोजना

4.11.3. यह परियोजना पी. एण्ड डी.एकांश, महानिदेशालय, आकाशवाणी की देख-रेख में संयुक्त राष्ट्र संगठन (यू.एन.ओ.) की मदद से चलाई जा रही है। इस परियाजना के अन्तर्गत जो प्रयोगशाला स्थापित की गई है और उसमें जिस प्रकार की आधुनिक टेक्नोलॉजी उपलब्ध है, एशिया महाद्वीप में जापान को छोड़कर इस प्रकार की प्रयोगशाला केवल भारत में ही है। प्रायोगिक आधार पर रवीन्द्रनाथ टैगोर की 55 रिकॉर्डिंगों के एक दुर्लभ संग्रह को फिर से निर्मित किया गया है।

ध्वनि प्रति-लिपि एकांश

4.12. यह एकांश राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री के भाषणों की रिकॉर्डिंग को सुरक्षित रखता है। इसने इस वर्ष की अवधि में भाषणों के अनुवाद सहित उनके भाषणों के 275 ध्वनि-प्रतिलिपियां (ट्रांस क्रिप्शंस) तैयार की। इसके अतिरिक्त, भावी पीढ़ियों के लिए यह एकांश इन भाषणों की पक्की जिल्द के खण्ड भी तैयार करता है।

कार्यक्रम विनिमय एकांश

4.13.1. कार्यक्रम विनिमय एकांश (पी.ई.यू.) संग्रहालय सभी केन्द्रों से उच्च कोटि के कार्यक्रम प्राप्त करता है तथा उनका विनिमय भी करता है। सभी महत्वपूर्ण अवसरों पर जैसे, वर्षगांठ, त्यौहार आदि पर आवश्यकतानुसार उपग्रह के माध्यम से आकाशवाणी केन्द्रों तक पहुंचाया जाता है। 1994 में केन्द्रों के संभावित प्रयोग के लिए 275 कार्यक्रम उपलब्ध कराये गये। कार्यक्रमों के आदान-प्रदान के वास्ते एक द्विमासिक पत्रिका "विनिमय" का प्रकाशन शुरू किया गया है। केन्द्रीय टेप बैंक के 75,000 टेप 175 आकाशवाणी केन्द्रों को परस्पर विनिमय के लिए वितरित किये गये।

4.13.2. सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत 1994 में अमरीका, जर्मनी, दक्षिण कोरिया, चीन, नीदरलैंड, आस्ट्रेलिया, फ्रांस, विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.), संयुक्त राष्ट्र रेडियो तथा सार्क देशों को 325 कार्यक्रम प्राप्त हुए। आवश्यकतानुसार इन कार्यक्रमों को आकाशवाणी केन्द्रों के बीच वितरित किया गया।

कर्मचारी प्रशिक्षण

4.14.1. दिल्ली में 1948 में संस्थापित कर्मचारी प्रशिक्षण (कार्यक्रम) संस्थान प्रशासनिक कर्मचारियों सहित विभिन्न श्रेणियों के कार्यक्रमों से जुड़े कर्मचारियों को सेवा कालीन प्रशिक्षण प्रदान करता है। इसके अलावा, क्षेत्रीय आकाशवाणी केन्द्रों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए हैदराबाद, शिलांग, अहमदाबाद, कटक, तिरूअनन्तपुरम, और लखनऊ में छः क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान है। विभिन्न प्रबंधन संकायों तथा कार्यक्रम संबंधी प्रशिक्षण देने वाले संस्थान ने अप्रैल-नवम्बर, 1994 की अवधि में 19 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये।

4.14.2. दिल्ली में स्थित कर्मचारी प्रशिक्षण संस्थान (तकनीकी) आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के इंजीनियर कर्मचारियों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं को पूरा करता है। इस वर्ष के दौरान इस संस्थान ने आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के 1,500 कर्मचारियों के लिए 112 पाठ्यक्रम संचालित किये। इस वर्ष संस्थान ने

घाना ब्रोडकास्टिंग कॉर्पोरेशन तथा भूटान ब्राडकास्टिंग सर्विस के इंजीनियरी कर्मचारियों को भी प्रशिक्षित किया। इसके अतिरिक्त, आई.एस.ई.एस, के अधिकारियों और सहायक इंजीनियरों को प्रशिक्षण देने के लिए रेडियो एवं टेलीविजन संयत्र संबंधी अनेक पाठ्यक्रम चलाये गये। वरिष्ठ इंजीनियरों के लिए "प्रसारण की आधुनिक प्रवृत्तियां तथा प्रबंध पाठ्यक्रम" जैसे पाठ्यक्रम भी आयोजित किये गये। प्रसारण संबंधी नवीनतम टेक्नोलॉजी को संस्थान में शामिल कर उसे और उत्कृष्ट बनाने के लिए यू.एन.डी. पी. की सहायता से एक योजना पर अमल किया जा रहा है। श्रव्य-दृश्य (ऑडियो-विजुअल) प्रशिक्षण कार्यक्रम-निर्माण के लिये नया स्टुडियो बनाया गया है।

श्रोता अनुसंधान एकांश

4.15.1. श्रोता अनुसंधान एकांश विज्ञापन प्रसारण सेवा तथा विदेश सेवा प्रभाग सहित आकाशवाणी के समस्त तंत्र की अनुसंधान और प्रतिक्रियाओं के आकलन संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। यह श्रोताओं की संख्या तथा स्वरूप, कार्यक्रमों की गुणवत्ता के बारे में श्रोताओं की प्रतिक्रिया, और जिन श्रोताओं के लिए कार्यक्रम बनाया गया, उन पर पड़े प्रभाव का मूल्यांकन करता है। यह कार्यक्रम-योजना और प्रसारण में सुधार का आधार होता है। आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों पर 43 श्रोता अनुसंधान एकांश हैं और दिल्ली, इलाहाबाद, शिलांग, बम्बई, कलकत्ता तथा मद्रास के क्षेत्रीय केन्द्रों पर 6 चल-वाहन इकाइयां कार्य कर रही हैं। साथ ही, बम्बई में एक अलग विज्ञापन प्रसारण सेवा भी है। वर्ष (1994-95) के दौरान श्रोता अनुसंधान एकांश ने 9 प्रमुख सर्वेक्षण किये : 14 स्थानों पर ग्रामीण विकास सर्वेक्षण, 5 स्थानों पर युववाणी कार्यक्रमों पर सर्वेक्षण, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय प्रसारणों का 2 स्थानों पर सर्वेक्षण, नौगांव (असम) फीड फॉरवर्ड अध्ययन, बराक घाटी (असम) में क्षेत्र सर्वेक्षण, कलकत्ता में बाल कार्यक्रम का सर्वेक्षण, 9 स्थानों पर "दहलीज" श्रृंखला का सर्वेक्षण, कोटा (राजस्थान) स्थानीय आकाशवाणी केन्द्र का अध्ययन और 15 स्थानों पर स्कूल प्रसारण का सर्वेक्षण।

4.15.2. अन्य प्रमुख अध्ययन जैसे, फूलबनी में "फील्ड फॉरवर्ड स्टडी" का सर्वेक्षण, और कियोंझार (दोनों उड़ीसा में) में आम श्रोताओं के सर्वेक्षण-कार्य किये जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त, स्थानीय कार्यक्रमों के कुछ अध्ययन भी श्रोता अनुसंधान एकांशों ने पूरे किये हैं तथा कार्यक्रमों के गुणात्मक पक्षों पर 6 तुरन्त प्रतिक्रिया परिणामों का अध्ययन भी किया है।

अनुसंधान तथा विकास गतिविधियां

4.16.1. आकाशवाणी का अनुसंधान विभाग रेडियो तथा दूरदर्शन गतिविधियों के क्षेत्र में व्यावहारिक तथा अनुसंधान और विकास संबंधी कार्य करता है। अनुसंधान तथा विकास का मूल होने के कारण इसकी गतिविधियां विशेष रूप से प्रसारण आवश्यकताओं में केंद्रित हैं।

4.16.2. इस विभाग की महत्वपूर्ण गतिविधियों में से एक है रेडियो पेजिंग कार्य के लिए मशीनी उपकरणों तथा कार्यक्रम संबंधी विकास। यह रेडियो डाटा प्रणाली (आर.डी.एस.) के विस्तार के रूप में की गई है जिसका विकास विभाग ने पहले किया था। रेडियो पेजिंग प्रणाली का सफलतापूर्वक बहिर्सूचीकरण किये जाने के बाद, आकाशवाणी ने प्रथम चरण में अपने 17 एफ.एम. प्रसारणों का इस्तेमाल करते हुए रेडियो पेजिंग प्रणाली आरंभ करने का निर्णय लिया। इस ऐतिहासिक फैसले से पहली बार आकाशवाणी डाटा प्रसारण के नये युग में प्रवेश करेगी। यह एक रोचक बात है कि एफ.एम. ट्रांसमीटर के द्वारा रेडियो पेजिंग सेवा शुरू होने से ट्रांसमीटर से प्रसारित होने वाले प्रमुख रेडियो कार्यक्रमों में कोई बाधा नहीं पहुंचेगी।

4.16.3. क्रिकेट और टेनिस खेलों के आंकड़ों को बोर्ड पर प्रदर्शित करने की जिस प्रणाली को विभाग ने विकसित किया था, उसका विकास कर इसे हाल ही में विभाग ने वॉलीबाल, कुश्ती, तैराकी, बैडमिंटन, गोताखोरी आदि अन्य खेलों के लिए इस्तेमाल किया है। इससे इन खेलों में इस कार्य के लिए खर्च होने वाली 70 लाख रुपयों की राशि की बचत हुई है।

4.16.4. अनुसंधान विभाग ने उपग्रह टी.वी. बेस बैंड टी.वी. स्पैक्ट्रम का रेडियो कार्यक्रमों के अतिरिक्त प्रसारण के लिए प्रयोग किया। यह पाया गया कि एक-दूसरे के कार्यक्रमों को बाधा पहुंचाये बिना चार भिन्न रेडियो कार्यक्रम उपग्रह टेलीविजन चैनलों से चलाये जा सकते हैं। शुरूआत में, पांच टेलीविजन चैनल थे जो कि दिल्ली से जुड़े थे। क्षेत्रीय भाषाओं को प्रसारित करने वाले ये टी.वी. चैनल उपग्रह के माध्यम से दिल्ली में एकत्र किये जाते थे और फिर देश-व्यापी प्रसारण के लिए उन्हें उपग्रह टी.वी. चैनलों में समाहित किया जाता था। इस आकाशीय रेडियो सेवा का अनुसंधान और विकास विभाग ने खूब अच्छी तरह से परीक्षण किया तथा 1 अप्रैल, 1994 से आकाशवाणी ने इसे आरंभ किया। इस प्रसारण सेवा ने भारत की बहुभाषी जनसंख्या को देश के किसी भी कोने से उच्च कोटि के रेडियो कार्यक्रम ग्रहण करने की नई सुविधा प्रदान की।

4.16.5. दो वर्षों के निरंतर प्रयासों से 32 इनपुट और आउटपुट को जोड़ने वाले नये माइक्रोप्रोसैसर आडियो स्विच का निर्माण किया गया। यह उपकरण आयातित उपकरण के स्थान पर इस्तेमाल होगा। स्टूडियो स्वचालित यंत्र में एक नई चीज होगी जिसका भारतीय प्रसारण में शीघ्र ही इस्तेमाल किया जाने वाला है। अक्तूबर, 1994 में बम्बई के आकाशवाणी प्रसारण भवन में "स्विचर" लगाया गया। इस वर्ष विभाग ने तीन मूर्ति भवन, नई दिल्ली में 14 से 28 नवम्बर, 1994 की अवधि में इलैक्ट्रोनिक विभाग द्वारा आयोजित "राष्ट्रीय विकास में इलैक्ट्रॉनिक्स" विषय पर आयोजित प्रदर्शनी में भाग लिया। अपनी अनुसंधान तथा विकास संबंधी विभिन्न गतिविधियों में उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए उसे पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

4.16.6. आकाशवाणी के अनुसंधान विभाग ने "टी" बैण्ड में एक छोटा 3 वाट का ट्रांसमीटर (मोड्यूलेशन रहित) लगाकर संचरण-अध्ययन आरंभ किया। इस आरंभिक परिक्षण के परिणाम अत्यंत उत्साहजनक तथा यूरोप और कनाडा जैसे अन्य विकसित देशों के अध्ययन के अनुसार थे। इस विभाग के उत्पादन एकांश ने इस वर्ष रेडियो एवं टेलीविजन से संबद्ध अनेक उपकरण लगाये जिनकी अनुमानित कीमत लगभग 70 लाख रुपए थी।

4.17.1. इस वर्ष का पटेल स्मारक भाषण नई दिल्ली में दिनांक 28 अक्तूबर, 1994 को राजीव गांधी फाउण्डेशन के उपाध्यक्ष श्री आबिद हुसैन ने दिया जिसका विषय "विजन ऑफ ए गुड सोसायटी" था। 1994 का डॉ. राजेन्द्र प्रसाद स्मारक भाषण 30 नवम्बर और 1 दिसम्बर, 1994 को डॉ. विद्या निवास मिश्र ने दिया। इसका विषय था "साधुमत और लोकमत"।

4.17.2. गैट-संधि किये जाने के बाद जिन विविध उत्पादों के निर्यात में वृद्धि होने की संभावना है, उनसे जुड़े विषय पर राष्ट्रीय नेटवर्क पर हिन्दी तथा अंग्रेजी में 10 विशेष फीचर प्रसारित किये गये। इन कार्यक्रमों को राष्ट्रीय नेटवर्क तथा विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में भी प्रसारित किया गया। गैट-संधि के परिणामस्वरूप गांवों की प्रगति पर नजर रखने के लिए आकाशवाणी ने विभिन्न राज्यों में 12 गांवों का चयन किया है।

4.17.3. गणतंत्र दिवस की पूर्व-संध्या पर हर वर्ष प्रसारित होने वाले सर्वभाषा कवि सम्मेलन के प्रसारण में इस वर्ष तीन और भाषाओं, नेपाली, कोंकणी और मणिपुरी को शामिल किया गया जिसके कारण भाषाओं की संख्या बढ़कर 18 हो गई है।

4.17.4. कार्यक्रम विकास के अन्तर्गत दो योजनाओं (1) विशेष रूप से निर्मित "दिव्यनाम संकीर्तनम" का अभिनय (2) रवीन्द्र संगीत के साथ-साथ जो योजनाएं 1993-94 में पहले ही शुरू की जा चुकी थी, उन्हें 1992-97 की 8वीं पंचवर्षीय योजना में मंजूरी दी गई है।

4.17.5. आकाशवाणी, प्रसारण के विभिन्न क्षेत्रों में आये परिवर्तनों तथा विकास गतिविधियों का ज्ञान प्राप्त कर कार्यक्षमता का विकास करने के लिए ए.आई.बी.डी., ए.बी.यू., सी.सी.आई.आर., ई.बी.यू., सी.बी.ए., ए.एम.आई.सी., बी.ओ.एन.ए.सी. आदि विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों और प्रसारण संगठनों में अपने अधिकारियों को प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों, गोष्ठियों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं, बैठकों आदि में भाग लेने के लिए विदेशों में भेजता रहा है। इस वर्ष 22 अधिकारियों को विदेश भेजा गया।

अध्याय-5

दूरदर्शन

5.1. दूरदर्शन की गिनती विश्व के सबसे बड़े प्रसारणकर्ता संगठनों में होती है। दूरदर्शन में इस समय विभिन्न क्षमताओं के 692 प्रसारण केन्द्र, 32 कार्यक्रम निर्माण केन्द्र और लगभग 21 हजार कर्मचारी हैं। 31 जनवरी 1995 की स्थिति के अनुसार इसके प्रसारण देश के 67.8 प्रतिशत भूभाग तक पहुंचते हैं तथा 85.1 प्रतिशत जनसंख्या इन प्रसारणों को देख सकती है। वर्तमान वित्त-वर्ष दूरदर्शन के लिए अत्यंत ही उपलब्धिदायक रहा।

नेटवर्क

5.2.1. दूरदर्शन नेटवर्क के 692 प्रसारण केन्द्रों में से 667 ट्रांसमीटरों से प्राइमरी चैनल के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं, 23 से दूरदर्शन के मेट्रो चैनल के कार्यक्रम प्रसारित होते हैं तथा 2 ट्रांसमीटर संसद की कार्यवाही का प्रसारण करते हैं। प्राइमरी चैनल के कार्यक्रम प्रसारित करने वाले ट्रांसमीटरों का ब्यौरा इस प्रकार है :–

1. उच्च शक्ति के ट्रांसमीटर : 74
2. कम शक्ति के ट्रांसमीटर : 473
3. अत्यंत कम शक्ति के ट्रांसमीटर : 100
4. ट्रांसपोंडर : 20

मेट्रो चैनल के कार्यक्रमों के स्थलीय प्रसारण के लिए बड़े शहरों में 23 ट्रांसमीटर कार्यरत् हैं, जिनमें 5 उच्च शक्ति के ट्रांसमीटर शामिल हैं।

5.2.2. कार्यक्रमों के व्यापक प्रसारण के लिए शिमला, गंगटोक, मऊ, रामेश्वरम् और कालीकट (अंतरिम व्यवस्था) में उच्च शक्ति के ट्रांसमीटर चालू किए गए हैं। इसके अतिरिक्त, भुज-स्थित उच्च शक्ति ट्रांसमीटर की शक्ति एक किलोवाट से बढ़ाकर 10 किलोवाट कर दी गई है। अहमदाबाद से मैट्रो चैनल कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए कम शक्ति के ट्रांसमीटर की शक्ति बढ़ाकर उच्च शक्ति ट्रांसमीटर (10 किलोवाट) कर दी गई है, तथा कम शक्ति के 108 और अत्यंत कम शक्ति वाले 21 ट्रांसमीटर चालू किए गए। वर्ष 1994-95 की शेष अवधि में लेह, जैसलमेर, बाड़मेर (अंतरिम व्यवस्था) लुंगलेई और मोकोकचुंग में उच्च शक्ति के ट्रांसमीटरों के चालू होने की आशा है। कम शक्ति तथा अत्यंत कम शक्ति वाले कई अतिरिक्त ट्रांसमीटरों के भी चालू होने की उम्मीद है।

5.2.3. प्रस्तावित डीडी-3 चैनल सेवा के स्थलीय प्रसारण के लिए दिल्ली, बंबई, कलकत्ता और मद्रास में उच्च शक्ति के ट्रांसमीटर लगाए गए हैं जो चालू होने वाले हैं। अहमदाबाद के मेट्रो चैनल के कार्यक्रमों को रिले करने के लिए कम शक्ति वाले ट्रांसमीटर के स्थान पर एक उच्च शक्ति के ट्रांसमीटर के चालू हो जाने की आशा है। उच्च शक्ति के 174 ट्रांसमीटरों और कम शक्ति/अत्यंत कम शक्ति के 373 ट्रांसमीटरों को स्थापित किया जा रहा है या स्थापित किए जाने का प्रस्ताव है। इन ट्रांसमीटरों के चालू हो जाने से देश की 92 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या दूरदर्शन कार्यक्रम देख सकेगी, जबकि अभी इन कार्यक्रमों की पहुंच लगभग 55 प्रतिशत जनसंख्या तक है। साथ ही वर्तमान की अपेक्षा अधिक व्यापक क्षेत्र तक कार्यक्रम पहुंच सकेंगे।

5.2.4. दूरदर्शन द्वारा कार्यक्रमों की निर्माण-व्यवस्था को मजबूत करने के लिए सातवीं पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत 39 स्टूडियो कार्यक्रम निर्माण सुविधा परियोजनाएं क्रियान्वयनाधीन प्रस्तावित हैं। इसके अलावा, दिल्ली के राष्ट्रीय स्टूडियो परिसर डीडी भवन के निर्माण का काम चल रहा है जिसमें 11 मंजिल

भवन में 50 से लेकर 425 वर्गमीटर क्षेत्रफल के अलग-अलग आकर के 7 स्टूडियो और सम्बद्ध तकनीकी सुविधाएं बनाई जाएंगी। गुलबर्गा और मुजफ्फरपुर में कार्यक्रम निर्माण केन्द्रों और मद्रास में दूसरे चैनल के स्टूडियो ने काम करना आरंभ कर दिया है। रायपुर, डाल्टनगंज, पोर्टब्लेयर तथा बरेली में कार्यक्रम केन्द्रों के शीघ्र चालू होने की आशा है। जलपाईगुडी में कार्यक्रम निर्माण केन्द्र की स्थापना का काम पूरा हो चुका है तथा शिमला, पटना (स्थायी), ऐजल, ईटानगर और कलकत्ता (दूसरा चैनल) में स्टूडियो केंद्रों का काम प्रगति पर है तथा इनके शीघ्र पूरे हो जाने की आशा है। सम्बलपुर और मऊ में प्रस्तावित कार्यक्रम निर्माण केंद्रों के लिए भवन निर्माण का काम शुरू कर दिया गया है। बंबई में दूरदर्शन केंद्र के विस्तार से संबंधित विभागीय निर्माण कार्य के भी शीघ्र शुरू किए जाने की आशा है।

5.2.5. वर्ष 1994-95 की एक प्रमुख उपलब्धि 13 नए उपग्रह चैनलों की शुरूआत रही। ये प्राइमरी चैनल, मेट्रो चैनल और मलयालम, तमिल, उडिया, बंगला, तेलुगू, कन्नड, मराठी, गुजराती, पंजाबी और कश्मीरी तथा असमिया और उत्तर-पूर्वीय भाषाओं के क्षेत्रीय भाषा चैनल हैं। फिलहाल डीडी-3 के प्रसारण बंद हैं, लेकिन शीघ्र ही इन्हें पुनः चालू किया जाएगा। इस समय दूरदर्शन सेवाओं के प्रसारण के लिए तीन भारतीय उपग्रह - इन्सैट-1 डी, 2 ए और 2 बी का प्रयोग किया जा रहा है। इन्सैट 1 डी के एस-बैंड के ट्रांसपोंडरों के साथ समूचे स्थलीय ट्रांसमीटर नेटवर्क पर राष्ट्रीय टेलीविजन सेवाएं उपलब्ध हैं।

5.2.6. 14 मार्च 1995 को दूरदर्शन के अंतर्राष्ट्रीय चैनल ने विधिवत रूप में प्रसारण शुरू कर दिया। इस चैनल के द्वारा सुबह 9 बजे से दोपहर 12 बजे तक (भारतीय मानक समय के अनुसार) सोमवार से शुक्रवार तक एशिया सेट-I उपग्रह के ट्रांसपोंडर द्वारा कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। इन कार्यक्रमों को लगभग 40 एशियाई देशों–सार्क देशों, खाड़ी देशों, मध्य एशियाई देशों, पश्चिमी एशियाई देशों और दक्षिण-पूर्वी एशिया में देखा जा सकेगा। वैसे तो यह चैनल मुख्य रूप से अप्रवासी भारतीयों को लक्ष्य कर शुरू किया गया है किन्तु दर्शाए गए इलाकों के अन्य दर्शक भी इसके द्वारा पर्याप्त मनोरंजन तथा जानकारी से संबंधित कार्यक्रम देख सकेंगे। कार्यक्रमों में समाचार, बिजनैस समाचार, सामयिक कार्यक्रम, फिल्मों पर आधारित कार्यक्रम, सुगम संगीत, भारत के लोक गीत और प्रादेशिक संगीत, शास्त्रीय संगीत और नृत्य, पारिवारिक सीरियल इत्यादि शामिल हैं। इन कार्यक्रमों का चयन सावधानीपूर्वक लक्ष्य दर्शकों की पसंद को और प्राथमिकता को ध्यान में रखकर किया जाता है। आगे चलकर इसकी सेवाओं अर्थात् इसके प्रसारण समय में तथा प्रसारण क्षेत्र में विस्तार विचाराधीन है।

5.2.7. मध्य प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और बिहार राज्यों में 6 उपग्रह-आधारित क्षेत्रीय सेवाएं शुरू की जा रही हैं/प्रस्तावित हैं। उपरोक्त राज्यों में स्थित विभिन्न ट्रांसमीटरों को क्षेत्रीय सेवा कार्यक्रमों को रिले करने के लिए उपग्रह के जरिए राज्यों के संबद्ध मुख्य केंद्रों से जोड़ा जा रहा है।

5.2.8. इसके अतिरिक्त, अंकीय सम्पीडन तकनीक "डिजिटल कम्प्रैशन" की मदद से एकल ट्रांसपोंडर के जरिए 5 कार्यक्रम चैनलों के प्रसारण की एक योजना, प्रयोग के तौर पर शुरू की जा रही है। वर्ष 1995 के उत्तरार्ध में इन्सैट-2 सी उपग्रह के चालू हो जाने की आशा है। उक्त उपग्रह में दूरदर्शन की व्यापक बीम कवरेज वाले सी-बैंड के दो ट्रांसपोंडर, एक्स-सी-बैंड वाले दो और के-यू-बैंड वाला एक ट्रांसपोंडर उपलब्ध हो जाएगा। इसके उपयोग से अतिरिक्त सेवाओं के प्रसारण की योजना है।

कार्यक्रम व्यवस्था

5.3.1. देश के सभी भागों में रात्रि साढ़े आठ बजे से अर्धरात्रि 12.00 बजे तक राष्ट्रीय कार्यक्रम देखे जा सकते हैं। शुक्रवार और शनिवार को फिल्मों के प्रसारण को देखते हुए प्रसारण अवधि अर्धरात्रि 12 बजे के बाद बढ़ा दी जाती है। कभी-कभी सामयिक रुचि के कार्यक्रमों के लिए भी प्रसारण अवधि बढ़ा दी जाती है। राष्ट्रीय कार्यक्रमों में रात्रि 9 बजे से 10 बजे तक एक घण्टे की

भारत
प्रेषित्र केन्द्रों सहित दूरदर्शन केन्द्र
(13 फरवरी 1995 की स्थिति)
पाकिस्तान
जम्मू और कश्मीर
हिमाचल प्रदेश
पंजाब
हरियाणा
उत्तर प्रदेश
नेपाल
भूटान
अरुणाचल प्रदेश
असम
नागालैंड
मेघालय
मणिपुर
त्रिपुरा
मिजोरम
बांग्ला देश
राजस्थान
गुजरात
मध्य प्रदेश
बिहार
उड़ीसा
महाराष्ट्र
कर्नाटक
आंध्र प्रदेश
तमिलनाडु
दमन और दीऊ
लक्षद्वीप (भारत)
अण्डमान और निकोबार (भारत)
श्री लंका
संकेत चिन्ह
मौजूदा कार्यक्रम निर्माण केन्द्र
प्रस्तावित कार्यक्रम निर्माण केन्द्र
राज्यों में मौजूदा दूरदर्शन प्रेषित्रों की संख्या
राज्यों में क्रियान्वयनाधीन/प्रस्तावित प्रेषित्रों की संख्या
भारतीय सर्वेक्षण विभाग के मानचित्र पर आधारित
निर्मित:- महेश कुमार
दूरदर्शन महानिदेशालय
नई दिल्ली

प्राइम अवधि में मनोरंजनपूर्ण कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं जिनमें हिंदी व अंग्रेजी दोनों में धारावाहिक, विज्ञान पत्रिकाएं, सांस्कृतिक पत्रिकाएं, क्विज, फिल्म आधारित कार्यक्रम और लोक रुचि के अन्य ऐसे ही कार्यक्रम शामिल होते हैं। राष्ट्रीय प्रसारण में हिंदी और अंग्रेजी दोनों ही के समाचार और सामयिक विषयों के कार्यक्रमों, राष्ट्रीय संगीत तथा नृत्य कार्यक्रमों, वृत्त चित्रों, टेली फिल्मों, टेलीविजन नाटकों, बैले-नृत्य और आर्थिक नीति, साम्प्रदायिक सद्भाव, राष्ट्रीय एकता, परिवार कल्याण, पर्यावरण तथा विकास के कार्यक्रमों का समावेश किया जाता है। इसमें सुगम संगीत, टेलीविजन शो, लोक संगीत नृत्य, कवि सम्मेलन, मुशायरों आदि का प्रसारण भी किया जाता है। संसद-अधिवेशन के दौरान कार्यदिवसों पर रात्रि 9 बजकर 45 मिनट और 10 बजकर 45 मिनट पर क्रमशः 'संसद समाचार' और 'टुडे इन पार्लियामेण्ट' का प्रसारण किया जाता है।

5.3.2. नेटवर्क का प्रातः कालीन प्रसारण सुबह 5 बजकर 55 मिनट से प्रारंभ होकर प्रातः 9 बजे तक चलता है तथा सामान्यता इसमें हल्के-फुल्के कार्यक्रम, कम अवधि वाले धारावाहिक, प्रसिद्ध व्यक्तियों के साथ साक्षात्कार, लघु वृत्त चित्र, स्वास्थ्य संबंधी सलाह, संगीत, कार्टून, फिल्म संगीत, आर्थिक पत्रिका और सामयिक विषयों के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। इस प्रसारण में 8 बजकर 20 मिनट पर व्यापार समाचारों और 8 बजकर 30 मिनट पर विश्व समाचारों के अतिरिक्त 7 बजे हिंदी में और 7 बजकर 10 मिनट पर अंग्रेजी में समाचार-प्रसारण भी शामिल हैं। जब संसद का अधिवेशन होता है, तब सुबह 7 बजकर 10 मिनट से एक घंटे के लिए 'यस्टरडे इन पार्लियामेण्ट' शीर्षक से 'प्रश्नकाल' की रिकार्डिंग प्रसारित की जाती है। रविवार को प्रातः साढ़े आठ बजे से नौ बजे तक क्षेत्रीय केन्द्र अपने कार्यक्रमों का प्रसारण करते हैं। प्रातः 9 बजे से लेकर दोपहर 12 बजे तक प्रसारित होने वाले नेटवर्क कार्यक्रमों में धारावाहिक, एनिमेटेड सीरीज/धारावाहिक तथा संगीत/नृत्य कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है।

5.3.3. नेटवर्क के दोपहर के प्रसारण सोमवार से शनिवार तक दोपहर एक बजे से सायंकाल 5 बजे तक दिखाए जाते हैं। इस प्रसारण की शुरुआत विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के कार्यक्रम से होती है। रविवार को इसमें दोपहर एक बजे बधिरों के लिए समाचार और एक बजकर 15 मिनट पर संस्कृत समाचार प्रसारित किए जाते हैं। इसके बाद क्षेत्रीय भाषा की फीचर फिल्म दिखाई जाती हैं। दोपहर के प्रसारण सामान्यता इस समय घर पर ही रहने वाले बच्चों, महिलाओं और वृद्धों की रुचियों को ध्यान में रखकर किए जाते हैं। मंगलवार को दोपहर 2 बजकर 20 मिनट से हिंदी फीचर फिल्म का प्रसारण किया जाता है, जो सामान्यता सायं 5 बजे तक चलता है। दोपहर के प्रसारण में 10-10 मिनट की अवधि के दो समाचार बुलेटिन भी शामिल होते हैं। हिंदी में 2 बजे और अंग्रेजी में 2 बजकर 10 मिनट से समाचार प्रसारित किए जाते हैं। मंगलवार को छोड़कर सोमवार से शनिवार तक दोपहर 2 बजकर 20 मिनट से एक दैनिक धारावाहिक का प्रसारण किया जाता है।

5.3.4. नेटवर्क के सायंकालीन प्रसारण में साढ़े आठ बजे तक का समय क्षेत्रीय भाषाओं में अलग-अलग केंद्रों के कार्यक्रमों के लिए निर्धारित रहता है। हिंदी और अंग्रेजी के प्रमुख समाचार बुलेटिन क्रमशः रात्रि 8 बजकर 30 मिनट और दस बजे प्रसारित किए जाते हैं। संसद अधिवेशन के दिनों में सप्ताह दिवसों पर रात्रि 8 बजकर 45 मिनट पर हिंदी में 'संसद समाचार' और रात्रि 10 बजकर 15 मिनट पर अंग्रेजी में 'टुडे इन पार्लियामेण्ट' का प्रसारण किया जाता है। ये बुलेटिन 15-15 मिनट के होते हैं।

5.3.5. दूरदर्शन के कार्यक्रमों में आरंभ से ही फिल्मों का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इस समय दूरदर्शन से राष्ट्रीय नेटवर्क पर शनिवार को सायं 4 बजकर 45 मिनट से और मंगलवार को दोपहर 2 बजकर 10 मिनट से हिंदी फीचर फिल्में, शुक्रवार रात्रि 9 बजे से सफल व्यावसायिक फिल्में और रविवार दोपहर डेढ़ बजे से क्षेत्रीय भाषा की फिल्में प्रसारित की जाती हैं। महीने के चौथे मंगलवार को दोपहर दो बजकर 20 मिनट पर बच्चों की फिल्में दिखाई जाती हैं। हर रविवार शाम को दिल्ली और रिले केंद्रों से हिंदी फीचर फिल्म प्रसारित की जाती है। क्षेत्रीय केंद्र भी रविवार शाम पांच बजकर 30 मिनट पर अपनी-अपनी भाषाओं में फीचर फिल्में प्रसारित करते हैं। दूरदर्शन द्वारा राष्ट्रीय नेटवर्क

पर हिंदी फीचर फिल्मों के चुने हुए गीत व नृत्यों का 'चित्रहार' और 'रंगोली' कार्यक्रमों में प्रसारण किया जाता है तथा क्षेत्रीय भाषाओं के गीत व नृत्य 'चित्रमाला' कार्यक्रम में प्रसारित किए जाते हैं। क्षेत्रीय केंद्रों द्वारा अपनी-अपनी क्षेत्रीय भाषाओं की फिल्मों के गीत व नृत्य-दृश्यों का प्रसारण भी किया जाता है।

5.3.6. बढ़िया कार्यक्रमों को प्रोत्साहन देने तथा अपने निर्मित कार्यक्रमों के पूरक के रूप में दूरदर्शन विशेष साफ्टवेयर योजनाओं के अंतर्गत बाहर के निर्माताओं से कार्यक्रम बनवाता है तथा उन्हें धन उपलब्ध कराता है। ये कार्यक्रम समाचारों व सामयिक विषयों से लेकर राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सद्भाव, समाज कल्याण, लोकतंत्र व धर्म निरपेक्षता, महिलाओं, बच्चों, युवाओं और वृद्धों की रुचि के विषयों, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, खेलकूद, संगीत व नृत्य, समाज में सांस्कृतिक प्रवृत्तियों, जनजातियों व सामाजिक रूप से पिछड़ों के कल्याण, स्वास्थ्य, स्वच्छता और परिवार कल्याण, जयंतियों, त्योहारों व शताब्दी समारोहों के साथ-साथ विशेष अभियानों तक के विषयों पर होते हैं। ये कार्यक्रम टेलीफिल्मों, धारावाहिकों, फीचर फिल्मों, वृत्तचित्रों, समाचार-फीचरों, फील्ड आधारित कार्यक्रमों, साक्षात्कारों आदि के रूप में होते हैं। उपग्रह क्षेत्रीय भाषा सेवा की शुरुआत के बाद 14 प्रमुख केंद्रों के निदेशकों से क्षेत्रीय भाषाओं में कार्यक्रम बनवाने के लिए कहा गया है तथा उन्हें ऐसा कर सकने के लिए अधिक वित्तीय अधिकार दिए गए थे।

5.3.7. दूरदर्शन द्वारा 1990 में शुरू की गई नई प्रायोजक योजना के अंतर्गत कार्यक्रम के निर्माण का खर्च निर्माता को उठाना पड़ता है तथा समय-समय पर स्वीकृति दर-सूची के अनुसार दूरदर्शन को दिए जाने वाले प्रसारण-शुल्क के बदले उसे विज्ञापनों आदि के प्रसारण के लिए निःशुल्क व्यापारिक समय दिया जाता है। स्वीकृत 400 धारावाहिकों में से 63 धारावाहिकों के पायलटों को समय-निर्धारण के लिए मंजूरी दी जा चुकी है। निर्धारित-समय वाले कुछेक धारावाहिक प्रसारित किए जा रहे हैं। प्रायोजक-श्रेणी के अंतर्गत आस्कर 1994, मिस यूनीवर्स 1994, मिस वर्ल्ड 1994, ग्रेटेस्ट फैशन शो, जैसी महत्वपूर्ण राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं और हिरोशिमा एशियाई खेलों, अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट मैचों, टेनिस (विम्बलडन/फ्रेंच ओपन आदि) जैसे खेलों का प्रसारण भी किया गया। इस श्रेणी के अंतर्गत धारावाहिकों के अलावा एक/दो एपीसोड वाली टेलीफिल्मों का भी प्रसारण किया गया है, जैसे कि शिक्षक दिवस के अवसर पर 5 सितम्बर 1994 को 'हैडमास्टर' फिल्म प्रसारित की गई थी।

विशेष दर्शकों के लिए कार्यक्रम

5.4.1. महिलाओं की स्थिति तथा स्त्री/पुरुष के आधार पर भेदभाव, पुरुषों पर निर्भरता, कम आयु में विवाह, बेरोजगारी और आजीविका अर्जन, यौन-शोषण, महिलाओं पर अत्याचार आदि जैसे मुद्दों पर दूरदर्शन विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम धाराविक, वृत्तचित्र, टेलीफिल्म, स्पॉट वीकली, लघु चित्र आदि का प्रसारण करता है। ये कार्यक्रम भारतीय समाज की नकारात्मक सामाजिक प्रथाओं, सामाजिक बुराइयों, महिलाओं के प्रति अपमानजनक रिवाजों व धारणाओं के खिलाफ संदेश देते हैं। वर्ष 1994 में महिलाओं पर प्रसारित कुछ लोकप्रिय उद्देश्यपूर्ण व प्रेरणादायक कार्यक्रम थे–'पद्मा', 'पद्मजा', 'पहचान', 'अधिकार', 'बेसहारा', 'अर्द्धांगिनी', 'चौखट', 'संवेदना', 'लेडीज कम्पार्टमेण्ट', 'रूरल वूमैन ऑफ सूरतगढ़', 'थंगम', आदि। सफल विकलांग स्त्री-पुरुषों पर 'रीचिंग फार दि स्काई', 'वूमैन इन पालिटिक्स', 'करवटें', 'प्रथम महिला' (विभिन्न व्यवसायों में प्रथम महिलाएं) आदि कुछ कार्यक्रम बाहर से बनवाए जाने वाले कार्यक्रमों की श्रेणी में स्वीकृत किए गए हैं।

5.4.2. दूरदर्शन कुछ ऐसे कार्यक्रम प्रसारित करता है जो मूलतः बालिका शिशु से सम्बद्ध होते हैं तथा जो रुढ़िवादी भारतीय समाज में बालिकाओं को दी गई भूमिकाओं पर ध्यान आकर्षित करते हैं। सफल कहानियों तथा बालिका शिशु के रचनात्मक विकास के चित्रण के जरिए लिंग-आधारित समानता का संदेश प्रसारित किया जाता है। 'रधिया की बुलबुल', 'दौर', 'मन्ने', 'रस्सी का बल', 'शकुंतला', शांभवी', 'अनुभूति', आदि कुछ ऐसी ही फिल्में हैं, जो प्रसारित की गई। ये फिल्में मनोरंजक तो थी हीं प्रेरणादायक भी थीं। बाहर से बनवाए जाने वाले कार्यक्रमों की श्रेणी में ऐसे विषयों पर

कई और कार्यक्रमों को मंजूरी दी गई है। 'बंद कलियां', 'इंदु' आदि कुछ ऐसे ही कार्यक्रम हैं जो या तो निर्माणधीन हैं या जिनका उनकी बारी से प्रसारण होना है।

5.4.3. बच्चों के कार्यक्रमों को इस प्रकार से तैयार किया जाता है कि उनमें सूचनात्मक और शिक्षाप्रद संदेशों को मनोरंजक रूप में समाविष्ट किया जाए ताकि उनसे बच्चों में स्वस्थ मानसिक और शारीरिक विकास के लिए रचनात्मक मूल्य स्थापित हो सकें। इस बात की विशेष सावधानी बरती जाती है कि बच्चों के कोमल मस्तिष्क में नकारात्मक प्रभाव डालने वाले कार्यक्रमों से बचा जाए। धारावाहिक कार्टून फिल्में, एनीमेशन फिल्में, लघु फिल्में आदि ऐसे समय पर तैयार व प्रसारित की जाती हैं जब बच्चे टेलीविजन देख सकते हैं। ये कार्यक्रम प्रायः शनिवार और रविवार को प्रसारित किए जाते हैं। दूरदर्शन द्वारा प्रसारित किए जाने वाले उल्लेखनीय कार्यक्रमों में 'बहादुर टॉम', 'हीरा', 'चंदन', 'मां', 'पिंकी', चांद सितारे', 'बंद कलियां', 'झूठा सच', 'मुन्ना', 'ताक धिना धिन', आदि शामिल हैं। प्रोफेसर नार्लीकर द्वारा बनाई गई सीरीज 'ब्रह्मांड', विशेष रूप से चर्चित रही। इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त अन्य एजेंसियों/संगठनों द्वारा प्रदत्त/प्रायोजित बाल फिल्में, जैसे कि एन.सी.वाई.पी. द्वारा तैयार की गई 'जंगल बुक' प्रत्येक रविवार को डीडी-2 पर प्रसारित की जाती रही। 'फुटबाल की वापसी', 'प्रिया', जैसे कुछ कार्यक्रमों को बाहर से तैयार करवाने वाले कार्यक्रमों की योजना के अंतर्गत मंजूरी दी गई है।

5.4.4. युवाओं की रुचि के कार्यक्रम दूरदर्शन द्वारा तैयार और प्रसारित किए जाते हैं, जिनमें युवाओं की समस्याओं, अहिंसा के सिद्धांतों, व्यवसाय संबंधी मार्गदर्शन, राष्ट्रीय व देशभक्ति के मूल्यों के प्रचार, नशीले पदार्थों व शराब की लत छुड़ाने के लिए उपचारात्मक उपायों, वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने तथा सामान्य जागरूकता आदि के विषयों को लिया जाता है। इस श्रेणी में प्रसारित होने वाले कुछ ऐसे कार्यक्रम 'मुक्ति', 'प्रेरणा' आदि हैं। 'कैरियर पाथ', 'स्पाइस', ब्रेक फ्री', 'किट्टी', 'नींव' आदि कुछ ऐसे ही कार्यक्रम निर्माणाधीन हैं।

5.4.5. जनसामान्य को पर्यावरण संरक्षण की जरूरत के प्रति जागरूक बनाने के लिए दूरदर्शन ने इस विषय पर बाहर से बनवाए जाने वाले कार्यक्रमों की योजना के अंतर्गत कुछ कार्यक्रम स्वीकृत किए गए हैं। इनमें 'लीविंग आन दि ऐज', 'आज भी खरे हैं तालाब', 'फॉरेस्ट ऑफ इंडिया', 'प्रयास', 'नेचर प्लस', 'सेव भीतरकणिका' शामिल हैं। 'लीविंग आन दि ऐज' नामक पर्यावरण पत्रिका हर सप्ताह प्रसारित की जाती है तथा दर्शकों में अत्यंत लोकप्रिय है।

5.4.6. भयावह रोग 'एड्स' की रोकथाम और नियंत्रण के उद्देश्य से सरकार द्वारा चलाए गए राष्ट्रीय कार्यक्रम की मदद के लिए स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्रालय ने दूरदर्शन को 176 लाख रुपए की राशि आवंटित की है ताकि सुरक्षित संभोग नियमों, रक्त सुरक्षा, एड्स के प्रति जागरूकता, परामर्श सेवाओं आदि विषयों पर कार्यक्रम बनाए जा सकें।

5.4.7. जनसंख्या की समस्या के प्रति जागरूकता पैदा करने और छोटे परिवार के संदेश को प्रसारित करने के लिए दूरदर्शन विषय से संबंधित कई कार्यक्रम प्रसारित कर रहा है, जिनके लिए स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा वित्तीय सहायता दी जा रही है। 'धुरी', 'नई राह पर', 'मुसाफिर जाएगा कहां', 'उत्पीड़न' आदि ऐसे ही कार्यक्रम हैं, जो प्रसारित किए जा चुके हैं। कई कार्यक्रमों को मंजूरी दी गई है जिनमें 'भगवान की देन', 'महापाप', 'अनुश्री', 'नजमा', 'भोर', 'आस्था', 'कुछ तो नया करो', 'सैलाब', आदि शामिल हैं। इसके अलावा राष्ट्रीय नेटवर्क पर 9 बजे रात्रि और दिल्ली के कम शक्ति वाले ट्रांसमीटरों पर सायं 7.30 बजे परिवार कल्याण के नियमित स्पाट प्रसारित किए जा रहे हैं।

5.4.8. विकलांगों के प्रति सकारात्मक भावनाएं पैदा करने और विकलांगों को आत्मविश्वास व आत्मसम्मान से जीने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से दूरदर्शन विशेष रूप से बनाए गए कार्यक्रमों का प्रसारण

करता है। कुछ ऐसे कार्यक्रम, जो 1994 में प्रसारित किए गए, इस प्रकार हैं : 'हमारी बेटी', 'मेरे अंग तेरे संग', 'बैसाखियां' आदि।

5.4.9. प्राथमिक स्कूलों के बच्चों के लिए दूरदर्शन की शैक्षिक टेलीविजन सेवा का प्रसारण जारी रहा। ये कार्यक्रम केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान और राज्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थानों द्वारा तैयार किए जाते हैं। प्रत्येक कार्यक्रम की अवधि 45 से बढ़ाकर 60 मिनट कर दी गई है। शैक्षिक टेलीविजन सेवा के कार्यक्रम पाठ्यक्रम-आधारित नहीं होते, बल्कि इनमें सामान्य रुचि के सभी विषयों का सूचना स्तरों पर समावेश होता है। इन कार्यक्रमों में पाठ्यक्रम-परक दृष्टिकोण से हटाकर सीधे शिक्षण पर जोर दिया जाता है तथा इनका उद्देश्य कक्षाओं में पढ़ने वाले बोझ को कम करना होता है। विद्यालय टेलीविजन कार्यक्रम पाठ्यक्रम-आधारित होते हैं तथा शिक्षा विभागों के परामर्श से इनका निर्माण दूरदर्शन द्वारा किया जाता है। विश्वविद्यालय छात्रों के लिए दूरदर्शन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा दिए गए उच्चतर शिक्षा संबंधी सामान्य संवर्द्धन के एक घंटे के कार्यक्रमों का प्रसारण जारी रखे हुए हैं। इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय के शैक्षिक कार्यक्रमों का भी दूरदर्शन द्वारा प्रसारण किया जाता है।

5.4.10. विज्ञान-क्षेत्र की उपलब्धियों के बारे में दूरदर्शन नियमित रूप से जानकारी देता रहता है। विज्ञान पत्रिका 'टर्निंग प्वाइंट' का प्रसारण हर सप्ताह किया जाता है तथा दूरदर्शन के दर्शक अनुसंधानों के अनुसार यह पत्रिका काफी लोकप्रिय है। इस कार्यक्रम को फ्रांस में अक्टूबर 1994 में प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार ग्रां प्रि जूल्स वर्न से सम्मानित किया गया था। इस कार्यक्रम में पर्यावरण संबंधी विषयों, विज्ञान/प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों की नई-नई उपलब्धियों और दैनिक जीवन में प्रौद्योगिकी के उपयोग को शामिल किया जाता है। प्रख्यात वैज्ञानिक के परामर्श से तैयार किए जाने वाले इस कार्यक्रम में भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की ओर ध्यान केंद्रित किया जाता है। महीने में एक बार 'क्यों और कैसे' नामक एक अन्य कार्यक्रम भी प्रसारित किया जाता है। इसके अलावा दूरदर्शन के क्षेत्रीय केंद्र भी पाक्षिक और मासिक आधार पर विज्ञान के कार्यक्रम तैयार कर रहे हैं। कलकत्ता, दूरदर्शन केंद्र द्वारा 'क्वेस्ट' और 'साइंस क्विज' का निर्माण किया जाता है। हिंदी के अलावा अब दूरदर्शन 10 क्षेत्रीय भाषाओं में 'टर्निंग प्वाइंट' को तैयार करवाता है।

5.4.11. आशा है कि 1994 के दौरान दूरदर्शन के राष्ट्रीय नेटवर्क पर प्रसारित किए जाने वाले कुछ कार्यक्रमों में खेलों की कवरेज और सीधे प्रसारण का हिस्सा 20 प्रतिशत से अधिक रहेगा। सभी प्रमुख केंद्र/क्षेत्रीय केंद्र क्षेत्रीय भाषाओं तथा हिंदी व अंग्रेजी में विभिन्न शीर्षकों के अंतर्गत 30-30 मिनट की अवधि के साप्ताहिक खेल कार्यक्रमों का प्रसारण कर रहे हैं। दूसरे चैनल वाले प्रमुख दूरदर्शन केंद्र भी अपनी-अपनी क्षेत्रीय भाषाओं में खेल कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं, जबकि छोटे केंद्र मासिक/पाक्षिक आधार पर खेल कार्यक्रमों का प्रसारण कर रहे हैं।

5.4.12. दूरदर्शन ने 1994 के दौरान भारत द्वारा खेले गए सभी डेविस कप टेनिस मैचों, फ्रेंच ओपन, अमरीकी ओपन व विम्बलडन टेनिस टूर्नामेंटों, श्रीलंका में चार देशों के क्रिकेट टूर्नामेंट, शारजाह में आस्ट्रेलेशिया कप क्रिकेट टूर्नामेंट, और भारत-वेस्ट इंडीज, भारत श्रीलंका तथा भारत-आस्ट्रेलिया महिला क्रिकेट श्रृंखला जैसे विभिन्न राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं का सीधा प्रसारण किया। दूरदर्शन ने सिडनी में खेले गए विश्व कप हाकी के सभी 52 मैचों तथा राष्ट्रमंडल व गुडविल गेम 1994 का भी प्रसारण किया। भारत में हुए, राजीव गांधी अंतर्राष्ट्रीय स्वर्ण कप फुटबाल, राष्ट्रमंडल टेबल टेनिस चैम्पियनशिप और विश्व शतरंज चैम्पियनशिप (सभी हैदराबाद में), मद्रास में एशियाई बीच वालीबाल टूर्नामेण्ट, चंडीगढ़ में जूनियर एशियाई नौकायन प्रतियोगिता, विजयवाडा में अंतर्राष्ट्रीय कबड्डी टूर्नामेण्ट और नई दिल्ली में एशिया-प्रशांत तैराकी प्रतियोगिता जैसे अंतर्राष्ट्रीय खेलों के प्रसारण को प्रमुख स्थान दिया गया।

5.4.13. उपलब्ध 'टाइम स्लाट' के आधार पर दूरदर्शन ने विभिन्न खेलों की राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं को सीधे या प्रस्तावित आधार पर कवर किया। गोल्फ, पोलो, तीरंदाजी, बिलियर्ड, स्नूकर, स्क्वैश, वालीबाल, फुटबाल, जूडो, कबड्डी, खो-खो, मल्लखंभ, टेनिस, टेबल टेनिस आदि जैसे विभिन्न खेलों

को कवर किया गया। पुणे में हुए 1994 के राष्ट्रीय खेलों और गुवाहाटी के पूर्वोत्तर खेल समारोह जैसी महत्वपूर्ण राष्ट्रीय खेल घटनाओं को भी राष्ट्रीय नेटवर्क पर सीधे प्रसारित किया गया। खो-खो, तीरंदाजी, कबड्डी और मल्लखंभ जैसे देसी खेलों के प्रसारण पर विशेष बल दिया गया।

5.4.14. खेलों से संबंधित घटनाओं की कवरेज और खेल-कार्यक्रमों के प्रसारण में दूरदर्शन का प्रयास सदैव यही रहा है कि अधिकाधिक कार्यक्रम प्रायोजक श्रेणी में प्रसारित कर आमदनी बढ़ाई जाए।

5.4.15. खेलों के सीधे प्रसारण के अतिरिक्त निम्नलिखित का भी सीधा प्रसारण किया गया--

1. पुरी की रथ यात्रा
2. जुबिन मेहता द्वारा संचालित इसराइल के फिलहार्मोनिक आर्केस्ट्रा का कार्यक्रम
3. पूर्वाह्न 11 बजे से दोपहर 12 बजे तक संसद का 'प्रश्नकाल'
4. बंबई में अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह 1995 का उद्‌घाटन

डीडी-2 'मैट्रो चेनल'

5.5.1. दूरदर्शन ने 26 जनवरी 1993 को एक प्रायोगिक योजना के रूप में मेट्रो आवर की शुरुआत की थी। इस योजना में सभी चार महानगरों में दूरदर्शन के दूसरे चैनल के लिए एक घंटे का समय निजी पार्टियों द्वारा मनोरंजन कार्यक्रम प्रसारित करने के लिए निर्धारित किया गया। (स्वयं के कार्यक्रम/प्रायोजक कार्यक्रम) इस प्रसारण के लिए दो आधे-आधे घंटे के स्लाटों में रात्रि 8 बजे से 9 बजे तक का समय निर्धारित किया गया था।

5.5.2. पहली अप्रैल 1993 से दूरदर्शन ने मनोरंजन के स्लाट की अवधि में एक घंटे की वृद्धि कर दी। यह अवधि रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक कर दी गई। मेट्रो नेटवर्क के कार्यक्रमों की अवधि 15 अगस्त 1993 से और बढ़ा दी गई। अब ये कार्यक्रम सुबह 8 बजे से 10 बजे तक और सायं प्रसारण दोपहर 2 बजे से अर्धरात्रि 12 बजे तक किए जाने लगे। 2 अक्तूबर 1993 से क्षेत्रीय उपग्रह चैनल की शुरुआत के साथ मेट्रो चैनल को डीडी-2 कहा जाने लगा और अब यह ऐसे चैनल के रूप में स्थापित हो चुका है, जो दर्शकों के मनोरंजन के लिए तरह-तरह के कार्यक्रमों का प्रसारण करता है।

5.5.3. मेट्रो चैनल पर सुबह का समय पर्यावरण संबंधी कार्यक्रमों और बच्चों के लिए, जीव जगत, भक्ति संगीत, फिटनेस कार्यक्रमों, शेयर बाजार संबंधी जानकारी और 'ब्रेकफास्ट शो' कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए होता है। 'ब्रेकफास्ट शो' में स्वस्थ मनोरंजन के साथ-साथ सामयिक रुचि के ज्ञानवर्द्धक कार्यक्रम शामिल होते हैं। प्रातः कालीन प्रसारणों में अब सप्ताह में तीन बार रोजगार के अवसरों के बारे में जानकारी देने वाले एक कार्यक्रम का भी प्रसारण होता है।

5.5.4. दोपहर का प्रसारण दो घंटे के एकल मेट्रो कार्यक्रम के साथ आरंभ होता है। यह समयावधि अपनी-अपनी क्षेत्रीय भाषाओं में अलग से कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए मेट्रो केंद्रों को दिया गया है। दोपहर 2 बजे से मेट्रो नेटवर्क प्रसारण आरंभ होता है। रात्रि 10 बजे एकल मेट्रो प्रसारण के लिए 40 मिनट की अवधि निर्धारित की गयी है, जिसमें क्षेत्रीय भाषाओं में समाचार और धारावाहिक प्रसारित किए जाते हैं। नेटवर्क के कार्यक्रम रात्रि 10 बजकर 40 मिनट पर फिर शुरू होकर अर्धरात्रि 12 बजे तक चलते रहते हैं। डीडी-2 द्वारा दोपहर 2 बजकर 30 मिनट से अर्धरात्रि 12 बजे तक औसतन 10 घंटे के कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है।

5.5.5. निश्चित बिंदु चार्ट इस तरह से तैयार किया गया है कि दर्शकों को मनोरंजक कार्यक्रमों के व्यापक विकल्प उपलब्ध हो सके। चैनल के निश्चित बिंदु चार्ट को तैयार करते समय उस समय टेलीविजन देखने वाले दर्शक वर्ग की रुचियों को ध्यान में रखकर कार्यक्रमों के चयन व समय निर्धारण का प्रयास किया जाता है। दोपहर को पारिवारिक धारावाहिक और सायंकाल के आरंभ में

बच्चों के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। हाल ही में सायं 4 बजकर 30 मिनट से 7 बजे तक ढाई घंटे के एम टीवी कार्यक्रमों का प्रसारण शुरू किया गया है। 'प्राइम टाइम' में जब अधिकतम संख्या में दर्शक उपलब्ध होते हैं, किए जाने वाले प्रसारणों में सभी वर्गों के दर्शकों की रुचि के कार्यक्रमों, जैसे कि सोप आपेरा, सिटकाम, समाचार पत्रिकाएं, फैशन शो, गेम शो, क्विज, जासूसी धारावाहिक और फिल्म आधारित कार्यक्रमों का समावेश किया जाता है। शनिवार और रविवार की दोपहरों में हिंदी फीचर फिल्मों और शुक्रवारों व शनिवारों को देर रात की अंग्रेजी फीचर फिल्मों का प्रसारण किया जाता है। शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम भी डीडी-2 पर नियमित रूप से प्रसारित किए जाते हैं।

क्षेत्रीय भाषा की उपग्रह सेवा

5.6.1. पहली अक्तूबर 1993 को पहली बार आरंभ किए गए क्षेत्रीय भाषाओं के उपग्रह चैनलों को 15 अगस्त, 1994 से पुनर्गठित किया गया। अब प्रत्येक प्रमुख भाषा का एक अलग उपग्रह चैनल है, जिससे 7 से 13 घंटे दैनिक प्रसारण किया जाता है तथा डिश ऐंटना की मदद से इन्हें देश के किसी भी हिस्से में देखा जा सकता है। उदाहरणार्थ - देश के किसी भी हिस्से में रहने वाला तमिल भाषी व्यक्ति मद्रास से प्रसारित किए जाने वाले तमिल कार्यक्रमों को देख सकता है। 15 अगस्त, 1994 से की गई नई व्यवस्था के अंतर्गत प्रत्येक चैनल के लिए एक अलग ट्रांसपोंडर उपलब्ध है तथा कार्यक्रमों को राज्य की राजधानियों से अपलिंक किया जाता है। ये पृथक चैनल इस प्रकार हैं :

डीडी-4 मलयालम

डीडी-5 तमिल

डीडी-6 उड़िया

डीडी-7 बंगला

डीडी-8 तेलुगु

डीडी-9 कन्नड़

डीडी-10 मराठी

डीडी-11 गुजराती

डीडी-12 पंजाबी और कश्मीरी

डीडी-13 असमिया तथा पूर्वोत्तर भाषाएं

5.6.2. बिहार के लिए मैथिली और भोजपुरी के एक नए चैनल के पहली जनवरी 1995 से चालू होने की आशा है। पंजाबी और कश्मीरी के लिए एक ही ट्रांसपोंडर है जिसकी अपलिंकिंग दिल्ली में पीतमपुरा से ही है। पूर्वोत्तर क्षेत्र के चैनल (डीडी-13) को छोड़कर इसमें से प्रत्येक चैनल के लिए इन्सैट-2बी के ट्रांसपोंडर का इस्तेमाल किया जाता है। इस व्यवस्था में इन्सैट-2बी की दिशा में घूमी हुई एक ही डिश से सभी चैनलों के कार्यक्रमों को देश के किसी भी हिस्से में देखा जा सकता है।

व्यावसायिक सेवा

5.7.1. दूरदर्शन से व्यावसायिक सेवा का श्रीगणेश 1976 में किया गया था। राष्ट्रीय नेटवर्क कार्यक्रमों के अलावा, 16 केंद्रों से स्पाट और प्रायोजित कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। ये केंद्र हैं : 1. दिल्ली चैनल 1 और 2, 2. कलकत्ता चैनल 1 और 2, 3. मद्रास चैनल 1 और 2, 4. बंबई चैनल 1 और 2, 5. हैदराबाद, 6. बंगलौर, 7. जालंधर, 8. लखनऊ, 9. श्रीनगर, 10. तिरूअनंतपुरम, 11. अहमदाबाद, 12. जयपुर, 13. भोपाल, 14. भुवनेश्वर, 15. क्षेत्रीय भाषा उपग्रह चैनल, 16. मेट्रो चैनल।

5.7.2. दिल्ली में दूरदर्शन की व्यावसायिक सेवा द्वारा राष्ट्रीय नेटवर्क के उपग्रह चैनलों और सभी क्षेत्रीय केंद्रों के लिए बुकिंग की जाती है। क्षेत्रीय केंद्रों के लिए दूरदर्शन कार्यक्रमों के प्रायोजन का काम भी दूरदर्शन व्यावसायिक सेवा द्वारा किया जाता है। दूरदर्शन केंद्रों में अपने केंद्रों के कार्यक्रमों सहित स्पाटों और प्रायोजन की बुकिंग की सुविधा उपलब्ध है। सामान्यतया राष्ट्रीय नेटवर्क से विज्ञापन हिंदी और अंग्रेजी में प्रसारित किए जाते हैं, जबकि केंद्रों से क्षेत्रीय भाषाओं में विज्ञापन प्रसारित होते हैं।

5.7.3. दूरदर्शन से सामानों व सेवाओं के विज्ञापन प्रसारित किए जाते हैं, लेकिन विज्ञापन, व्यावसायिक विज्ञापन संबंधी आचार संहिता के अनुसार स्वीकार किए जाते हैं। सिगरेट, तम्बाकू उत्पादों, शराब तथा अन्य नशीले पदार्थों, आभूषणों, पान मसाला आदि के विज्ञापन स्वीकार नहीं किए जाते हैं।

5.7.4. विज्ञापनों के जरिए दूरदर्शन की आमदनी में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। संदर्भ के लिए पिछले पांच वर्षों के लिए सकल राजस्व के आंकड़े नीचे दिए जा रहे हैं :

सकल राजस्व संकलन (करोड़ रुपयों में)

1990-91	:	253.85
1991-92	:	300.61
1992-93	:	360.23
1993-94	:	372.98
1994-95	:	380.00 (लक्ष्य)

कार्यक्रमों का विपणन और प्राप्ति

5.8.1. विदेशी टेलीविजन नेटवर्कों पर भारतीय कार्यक्रमों की बढ़ती मांग को देखते हुए तथा भारतीय रचनात्मक प्रतिभा को विश्वव्यापी मान्यता दिलाने के लिए, दूरदर्शन की विपणन इकाई कार्यरत है। कार्यक्रमों की बिक्री से यह इकाई विदेशी मुद्रा का भी अर्जन करती है। विपणन के लिए आकर्षक पुस्तिकाओं, महत्वपूर्ण टीवी समारोहों में भागीदारी और भावी क्रेताओं के साथ सम्पर्क का सहारा लिया जाता है। अब तक दूरदर्शन इंग्लैंड, फ्रांस, नीदरलैंड्स, आस्ट्रेलिया, इटली, सिंगापुर, बेल्जियम, श्रीलंका, हालैंड, मारीशस और खाड़ी की देशों के टीवी नेटवर्कों तथा इंग्लैंड, अमरीका और कनाडा के केबल नेटवर्कों को कई कार्यक्रम बेच चुका है जिनमें फीचर फिल्में और धारावाहिक, शास्त्रीय संगीत व नृत्य, वृत्तचित्र, खेलों व समाचार अंश आदि शामिल है।

5.8.2. इस इकाई की अन्य गतिविधियों में विदेशी कार्यक्रम प्राप्त करना और विदेशी नेटवर्कों के साथ कार्यक्रमों का निर्माण शामिल है। हाल ही में बनाई गई फिल्म 'बोधि धन' भारत और चीन की दो महान सभ्यताओं के प्राचीन सांस्कृतिक संबंधों को उजागर करती है।

कार्यक्रम सलाहकार समिति

5.9.1. विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञों की सलाह प्राप्त करन के उद्देश्य से दिल्ली, कलकत्ता, बंबई, मद्रास, बंगलौर, तिरूअनंतपुरम, श्रीनगर, जालंधर, कटक (भुवनेश्वर), जयपुर, गुवाहाटी, लखनऊ, अहमदाबाद और हैदराबाद के दूरदर्शन केंद्रों में कार्यक्रम सलाहकार समितियां गठित की गई हैं। नृत्य, लोककला और संस्कृति, महिला एवं बाल कल्याण, युवा कल्याण, समाज कल्याण, विज्ञान, हास्य, फिल्म/नाटक, खेलकूद, साहित्य, अनुसूचित जाति/जनजाति, भाषाई अल्पसंख्यक वर्गों (केंद्र द्वारा बनाए जाने वाले कार्यक्रम की भाषा के संदर्भ में) के विभिन्न क्षेत्रों व हित-वर्गों के विशेषज्ञों को इन समितियों में लिया जाता है। गैर-सरकारी सदस्यों के रूप में इन विशेषज्ञों की नामजदगी, सम्बद्ध राज्यों के सूचना विभाग के परामर्श से की जाती है। कार्यक्रम सलाहकार समिति क्षेत्र की कार्यक्रम संबंधी आवश्यकताओं

के बारे में केंद्रों को महत्वपूर्ण सलाह प्रदान करती है। समिति कार्यक्रमों के प्रसारण की समीक्षा करती है और कार्यक्रमों के नियोजन व निर्माण संबंधी मामलों में सुधार की सलाह देती है। इसके अलावा, राज्य में विभिन्न प्रचार माध्यमों के साथ कार्यक्रमों के समन्वय और संबंधित प्रगति पर नजर रखने के लिए दूरदर्शन केंद्र अंतर-मीडिया प्रचार समन्वय समितियों के साथ संबद्ध भी रहते हैं।

दर्शक अनुसंधान

5.10.1. दूरदर्शन के दर्शक अनुसंधान एकांश का प्रमुख काम कार्यक्रम नियोजकों और निर्माताओं को कार्यक्रमों पर प्रतिक्रियाएं उपलब्ध कराता है ताकि सूचना, शिक्षा व मनोरंजन को दर्शकों तक विभिन्न बोध-स्तरों पर अत्यधिक प्रभावशाली व कुशल रूप से पहुंचाया जा सके। दर्शक अनुसंधान राष्ट्रीय नेटवर्क और प्रमुख क्षेत्रीय नेटवर्कों द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों को साप्ताहिक आधार पर श्रेणीबद्ध करता है, जो 30 शहरों में स्थापित पैनलों से प्राप्त डायरियों पर आधारित होता है। पैनल के सदस्यों को शहरों के दर्शक समुदाय के विभिन्न वर्गों से लिया जाता है। इस वर्गीकरण को प्रमुख समाचार पत्रों में प्रकाशित किया जाता है।

5.10.2. दर्शक अनुसंधान एकांश दूरदर्शन महानिदेशालय और केंद्रों के लिए डाटा बैंक का काम भी करता है। विभिन्न केंद्रों में एकांश, केंद्रों की गतिविधियों के बारे में वार्षिक आधार पर आंकड़ों का संकलन करती है। 'दूरदर्शन-94' एक दृष्टि में देश में प्रचार माध्यमों की स्थिति की जानकारी प्रदान करता है जिसमें दूरदर्शन की गतिविधियों को प्रमुखता दी जाती है। इसका प्रकाशन इस वर्ष दर्शक अनुसंधान एकांश द्वारा प्रकाशित किया गया था।

5.10.3. दर्शक अनुसंधान एकांश दर्शकों से प्राप्त पत्रों के रूप में प्राप्त दर्शकों की स्वैच्छिक प्रतिक्रियाओं, समाचार-पत्रों की टिप्पणियों आदि के विश्लेषण का काम भी करता है। अधिकांश दूरदर्शन केंद्रों को प्रति माह हजारों पत्र प्राप्त होते हैं। दर्शक अनुसंधान एकांश विश्वविद्यालयों, शोध संगठनों, बाजार अनुसंधान एजेंसियों आदि से विचार विनिमय भी करता है तथा मीडिया के बारे में उनके द्वारा किए गए अनुसंधान पर निगरानी भी रखता है।

लोक सेवा संचार परिषद

5.11.1. राष्ट्रीय एकता, पर्यावरण/उपभोक्ता जागरुकता और नशीले पदार्थों के सेवन जैसे सार्वजनिक महत्व के मसलों पर अति लघु (क्विकीज), लघु फिल्मों और संदेशों के निर्माण को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से लोक सेवा संचार परिषद 'काउंसिल फार पब्लिक सर्विस कम्यूनिकेशन' का गठन किया गया था। परिषद एक गैर-सरकारी संस्था है, जिसके सभी सदस्य स्वेच्छा से सेवा करते हैं। कार्यक्रमों/क्विकीज के निर्माण का खर्चा सामान्यतया इंडियन सोसाइटी ऑफ एडवर्टाइजर्स के जरिए विज्ञापनों से निकलता है। रचनात्मक योगदान और तकनीकी देखरेख का काम विज्ञापन एजेंसियों द्वारा निःशुल्क किया जाता है। दूरदर्शन ये संदेश बिना किसी शुल्क के प्रसारित करता है।

5.11.2. लोक सेवा संचार परिषद के प्रतीक चिन्ह के अंतर्गत कई क्विकीज प्रसारित की गई हैं। इनमें 'टार्च कैप्सूल', 'फ्रीडम रन', 'गांधी जी', 'हैल्प दि म्यूनिसिपैलिटी हैल्प यू', 'एंटी बर्न्स', 'वाटर कन्जरवेशन', 'वन ट्यून' (एकसुर), 'हैलमेट सेफ्टी', 'नेशनल एंथम', 'राग देश', 'स्टिक यूनिटी', 'कार एक्सीडेंट', आदि शामिल हैं। कई अन्य क्विकीज भी निर्माणाधीन है तथा शीघ्र ही प्रसारित की जाएंगी। परिषद, शीघ्र ही सामाजिक दायित्व पर एक अभियान शुरू करने जा रही है। अच्छे नागरिक आचरण, विनम्रता और मिलजुलकर काम करने (टीम वर्क) पर इस अभियान में जोर दिया जाएगा।

केंद्रीय निर्माण केंद्र

5.12.1. उच्च स्तरीय व्यावसायिक कार्यक्रमों को बढ़ावा देने के लिए दूरदर्शन ने नई दिल्ली के एशियाई खेलगांव परिसर में एक केंद्रीय निर्माण केंद्र स्थापित किया है। यह केंद्र अत्याधुनिक उपकरणों से

सज्जित है, जिनकी तुलना अंतर्राष्ट्रीय मानकों से की जा सकती है। इस केंद्र में दो बड़े स्टूडियो है, जिसमें से प्रत्येक में 400-400 वर्गमीटर का क्षेत्र है तथा उसमें कम्प्यूटर आधारित कैमरे, प्रकाश नियंत्रण प्रणाली, ध्वनि नियंत्रण प्रणाली व अंकीय रिवरबरेशन एकांश और अंकीय वीडियो प्रभाव लगे हुए हैं। अन्य सुविधाओं में बाहर की रिकार्डिंग 'फील्ड कवरेज' के लिए बीटाकम और एक इंच के यू-फारमेट रिकार्डर, सीसीडी-टेलीसाइन, स्टूडियो-फ्लोर समेत इन्फ्रारेड संचार, वीडियोग्राफिक्स के लिए क्वांटेल पैंटबाक्स तथा स्थिर-चित्रों के इलेक्ट्रानिक भंडारण व पुनर्प्राप्ति के लिए अंकीय लाइब्रेरी प्रणाली शामिल है। केंद्र की निर्माणोत्तर सुविधाएं भी व्यापक है तथा यह बहु-स्रोत सम्पादन में भी सक्षम है, जिसके लिए आधुनिकतम तकनीकों का उपयोग किया जाता है।

5.12.2. 1994 के दौरान केंद्रीय निर्माण केंद्र ने छह धारावाहिकों के कई एपीसोड रिकार्ड किए। इसके अलावा 'टाइम मशीन', 'क्वेश्चन फोरम' नामक एक क्विज शो, निमंत्रित दर्शकों वाले सामयिक विषयों के एक कार्यक्रम, व्यंजन शो 'दावत', और विश्व थियेटर दिवस व दीपावली जैसे अवसरों पर कई विशेष फीचरों की रिकार्डिंग भी यहां की गई। केंद्र ने बच्चों के लिए कई कार्यक्रम भी तैयार किए जिनमें कठपुतली कार्यक्रम, नाटक, संगीतमय फीचर आदि शामिल हैं।

समाचार और सामयिक विषय

5.13.1. दूरदर्शन समाचारों में दिल्ली में मुख्यालय से 11 समाचार बुलेटिन प्रसारित किए जाते हैं। राष्ट्रीय समाचार बुलेटिनों में से 5 बुलेटिन हिंदी में, पांच अंग्रेजी में और एक उर्दू में प्रसारित होता है। पांच हिंदी समाचार बुलेटिनों में से एक क्षेत्रीय बुलेटिन है तथा एक बुलेटिन में सभा की समाप्ति पर मुख्य समाचार प्रसारित किए जाते हैं। अंग्रेजी में प्रसारित होने वाले पांच में से एक बुलेटिन पूर्णतया अंतर्राष्ट्रीय समाचारों का है। हिंदी के क्षेत्रीय बुलेटिन को छोड़कर, जिसे कम शक्ति वाले ट्रांसमीटर द्वारा पिकअप किया जा सकता है, दिल्ली से प्रसारित होने वाले अन्य बुलेटिनों को सभी केंद्र रिले करते हैं। इस प्रकार देशभर में समाचार पहुंचते हैं। दिल्ली से दोपहर 2 बजकर 20 मिनट पर एक उर्दू बुलेटिन भी प्रसारित किया जाता है। मेट्रो चैनल पर यह बुलेटिन 10 मिनट का होता है।

5.13.2. इनमें से एक बुलेटिन विशेष रूप से बधिरों के लिए होता है जो दोपहर एक बजे 15 मिनट के लिए प्रसारित किया जाता है। एक दूसरा बुलेटिन हाल ही में 20 अगस्त 1994 को संस्कृत में शुरू किया गया है, जो दोपहर एक बजकर 15 मिनट पर 10 मिनट के लिए प्रसारित किया जाता है। सोमवार को साप्ताहिक समाचार डायरी भी प्रसारित की जाती है, जिसके स्वरूप में हाल ही में परिवर्तन किया गया है। इसमें जम्मू-कश्मीर और पूर्वोत्तर क्षेत्र के समाचारों को शामिल किया गया है।

5.13.3. अप्रैल 1994 के बाद से दूरदर्शन समाचारों में कवर की गई प्रमुख घटनाओं में आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, सिक्किम और गोवा के चार राज्यों में चुनाव, राष्ट्रपति की चीन व दक्षिण अफ्रीका यात्रा और प्रधानमंत्री की अमरीका, रुस, वियतनाम और सिंगापुर यात्राओं का उल्लेख किया जा सकता है। इनके अलावा सूरत में प्लेग का फैलाव व इसका नियंत्रण, एक धूमकेतु के साथ बृहस्पति की टक्कर, अयोध्या मामले में उच्चतम न्यायालय का निर्णय, भारत द्वारा गैट समझौते पर हस्ताक्षर, 'पृथ्वी' का प्रक्षेपण, ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान की परीक्षण उड़ान, अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार सम्मेलन में कश्मीर में मानवाधिकारों के बारे में पाकिस्तान द्वारा प्रस्ताव को वापिस लेने, सभी के लिए शिक्षा संबंधी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, जी-15 सम्मेलन, सोमालिया में भारतीय शांति सैनिकों की भूमिका, चकमा शरणार्थियों की वापिसी, मतदाताओं को परिचय पत्र जारी करना, विश्व कप फुटबाल टूर्नामेंट, डेविस कप मैच, विम्बलडन टेनिस, श्रीलंका में चार देशों की क्रिकेट प्रतियोगिता में भारत की विजय, जापान के हिरोशिमा में एशियाई खेल और देश के विभिन्न भागों में बाढ़ की स्थिति कुछ ऐसी अन्य घटनाएं थीं, जिनको समाचार बुलेटिनों में प्रमुखता दी गई।

5.13.4. प्रधानमंत्री की अमरीका यात्रा के दौरान उनके अमरीकी सीनेट और अमरीकी कांग्रेस को सम्बोधन के सीधे प्रसारण के लिए वाशिंगटन में विशेष व्यवस्था की गई। अमरीकी राष्ट्रपति श्री बिल क्लिंटन और प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिम्ह राव के संवाददाता सम्मेलन का सीधा प्रसारण किया गया। प्रधानमंत्री की सिंगापुर-यात्रा के दौरान व्यापारिक समुदाय में प्रधानमंत्री के भाषण का सीधा प्रसारण किया गया। दूरदर्शन की एक महत्वूपर्ण कवरेज, दक्षिण अफ्रीका में नई गैर-जातिवादी सरकार की स्थापना की रही। उपराष्ट्रपति इसमें शामिल हुए।

5.13.5. आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, सिक्किम और गोवा में हुए चुनावों के ताज़ा परिणाम देने के लिए विशेष बुलेटिनों के तथा विभिन्न क्षेत्रों में तैनात ओ बी वैनों से सीधी रिपोर्टों के प्रसारण के लिए व्यापक प्रबंध किए गए, न केवल दिल्ली से बल्कि क्षेत्रीय केंद्रों से पहली बार चुनाव विश्लेषण उपलब्ध कराए गए। सिक्किम में हुए चुनावों को पहली बार एस एन जी के माध्यम से सीधे प्रसारित किया गया।

5.13.6. 1994 के दौरान समाचार बुलेटिनों में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन किए गए ताकि नवीनतम घटनाओं के बारे में तत्काल व ब्यौरवार जानकारी दी जा सके। हिंदी और अंग्रेजी के प्रमुख समाचार बुलेटिनों की अवधि बढ़कर 30-30 मिनट कर दी गई। ये रात्रि क्रमशः 8 बजकर 30 मिनट पर और 10 बजे प्रसारित किए जाते हैं। एक नया स्वरूप तय किया गया है, जिसमें समाचारों, व्यापारिक समाचारों, राज्यों के समाचारों, कला व संस्कृति, खेलों व मौसम के लिए विशेष खंड रखे गए हैं। दूरदर्शन समाचारों के दृश्य अंशों का अनुपात 30 से बढ़कर 60 प्रतिशत हो गया है। अब हिंदी व अंग्रेजी समाचारों को 'समाचार परिक्रमा' और 'न्यूज एट टेन' कहा जाता है। लेकिन संसद अधिवेशन के दौरान 'समाचार परिक्रमा' और 'न्यूज एट टेन' 15-15 मिनट के होते हैं तथा शेष 15 मिनट का समय संसद समाचारों को दिया जाता है। मानसून अधिवेशन से दूरदर्शन कम शक्ति वाले ट्रांसमीटरों के जरिए सारी संसदीय कार्यवाही का दिवसांत तक सीधा प्रसारण कर रहा है। एक अन्य महत्वपूर्ण शुरुआत सायं 7 बजकर 45 मिनट पर अंग्रेजी समाचार बुलेटिन के प्रसारण की है, जो पूर्वोत्तर क्षेत्र के दर्शकों के लाभ को ध्यान में रखकर बनाया गया है। इसे दूरदर्शन के प्रायः सभी कम शक्ति वाले ट्रांसमीटर रिले करते हैं। दिन की महत्वपूर्ण घटनाओं के साथ-साथ समाचार बुलेटिनों में पूर्वोत्तर क्षेत्र की घटनाओं को महत्व दिया जाता है।

5.13.7. दूरदर्शन द्वारा समाचार कर्मियों के प्रशिक्षण पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। दूरदर्शन के समाचार कर्मियों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए इंग्लैंड के कार्डिफ-स्थित थाम्पसन फाउंडेशन को आमंत्रित किया गया। थाम्पसन फाउंडेशन के तीन संकाय सदस्यों द्वारा भारतीय जनसंचार संस्थान में समाचार निर्माण और निर्माण लागत के बारे में दस दिन की एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। उत्तर व पूर्वोत्तर क्षेत्र के दूरदर्शन समाचार कर्मियों के लिए भारतीय जन संचार संस्थान द्वारा शिमला और शिलांग में प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम समाचार वाचकों के पैनल पर आने वाले नए समाचार वाचकों के लिए आयोजित किया गया। दूरदर्शन ने नई दिल्ली में ए वी एन देशों को एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया, जिसमें मलेशिया, बंगलादेश, चीन, इंडोनेशिया, ईरान, जापान, ब्रूनेई, सिंगापुर और श्रीलंका के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

5.13.8. समाचार कक्ष के स्वचालन (आटोमेशन) के लिए कम्प्यूटरीकरण की एक प्रमुख परियोजना लागू की जा रही है जिसमें 'आन लाइन' समाचार सम्पादन और समाचारों के टेपों की लाइब्रेरी का कम्प्यूटरीकरण शामिल है। समाचारों के लिए एक विशेष सब-कंट्रोल मास्टर स्विच रूम स्थापित किया गया था, जिसमें केंद्रों से आने वाले समाचारों के फीड/रिकार्ड को प्राप्त करना संभव हो गया है। तीन अलग-अलग फीडों की रिकार्ड सुविधा स्थापित की गई है।

5.13.9. सामयिक विषय वर्ग में, कई कार्यक्रम श्रृंखलाएं आरंभ की गई, जिनके 'वर्ल्ड रिपोर्ट', 'चैट शो', 'लैन्स आई', 'इन कन्वर्सेशन', 'अफेयर्स आफ स्टेट', 'बीच बहस में', और 'परसेप्शन्स'

शामिल हैं। 'परख', 'सुरभि', 'दि आई विटनेस', 'करंट अफेयर्स', 'वर्ल्ड दिस वीक', 'हैलो जिंदगी', 'इंडिया दिस वीक', और 'न्यूज वाच' कार्यक्रमों को नया कलेवर प्रदान किया गया। दूरदर्शन के अपने कार्यक्रमों में 'क्वेश्चन फोरम' और 'वाट्स रांग विद डीडी' लोकप्रिय हुए।

5.13.10. विशेष अवसरों पर, बृहस्पति-लेवी टक्कर, गोवा में सेंट जॉन जेवियर के पवित्र अवशेषों के दर्शन, बजट, संसद के प्रश्नकाल के सीधे प्रसारण और मतदाता जागरूकता अभियान जैसे राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रमों की कवरेज के लिए कई कार्यक्रम प्रसारित किए गए। 'बिजनेस बातें', 'बिजनेस ए.एम.', 'दिस मार्निंग्स बिजनेस', और 'बिजनेस ब्रेकफास्ट' जैसे प्रायोजित व्यापार कार्यक्रमों के प्रसारण के जरिए व्यापार व आर्थिक कार्यक्रमों पर जोर दिया जाता रहा। आम आदमी को गैट के बारे में जानकारी देने के प्रयास किए गए। 'सिमटती दूरियां' नाम से विकास कार्यक्रमों की एक नई शृंखला की शुरुआत की गई। वर्ष के दौरान 11 भारतीय भाषाओं में 40 से अधिक कार्यक्रमों का प्रसारण किया गया। 'कश्मीर फोलियो', 'नार्थ वेस्ट फाइल' और 'कश्मीर फाइल' कार्यक्रम शुरू किए गए, जिनमें कश्मीर और पूर्वोत्तर क्षेत्रों को व्यापक कवरेज दी जाती है।

अध्याय-6

फिल्म

फिल्म प्रभाग

6.1.1. फिल्म प्रभाग का इतिहास, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के घटनापूर्ण वर्षों की कहानी है। पिछले 46 वर्षों में प्रभाग ने राष्ट्र-निर्माण में भारतीय जनता का सक्रिय सहयोग प्रदान करने के लिए उन्हें प्रेरित किया है। इस प्रक्रिया में, प्रभाग ने देश में वृत्त चित्र आंदोलन की प्रगति व विकास में महती भूमिका निभाई है।

6.1.2. प्रभाग द्वारा वृत्त चित्रों, समाचार पत्रिकाओं और लघु कथाचित्रों का निर्माण किया जाता है। देश भर में फैले 12,907 सिनेमा-हालों, क्षेत्र प्रचार निदेशालय, राज्य सरकारों की सचल इकाईयों, परिवार कल्याण विभाग, शिक्षण संस्थाओं और स्वयंसेवी संगठनों की फील्ड इकाइयों जैसे गैर-व्यावसायिक क्षेत्रों के लिए प्रभाग फिल्में उपलब्ध कराता है। थियेट्रिकल सर्किट पर जारी की जाने वाली प्रभाग की फिल्मों में राज्य सरकारों के वृत्त चित्र व न्यूजरीलें भी शामिल रहती हैं। प्रभाग देश-विदेश में फिल्मों के प्रिंट, स्टाक शाट, वीडियो कैसेटें और वृत्तचित्रों व लघु कथाचित्रों के वितरण अधिकारों की बिक्री करता है।

6.1.3. बम्बई में मार्च 1990, फरवरी 1992 और फरवरी 1994 में वृत्त चित्रों व लघु फिल्मों के तीन अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों के आयोजन के बाद यह प्रभाग विश्व में वृत्तचित्र आंदोलन की एक बड़ी शक्ति के रूप में उभरा है।

6.1.4. प्रभाग के लक्ष्य व उद्देश्य राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य से जुड़े हैं, जिनका उद्देश्य राष्ट्रीय कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए लोगों को प्रेरित करना और देश-विदेश में भारत-भूमि की छवि और विरासत को प्रसारित करना है। प्रभाग का उद्देश्य वृत्तचित्त फिल्म आंदोलन को बढ़ावा देना भी है। राष्ट्रीय सूचना, संचार और एकता के क्षेत्र में यह भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

6.1.5. फिल्म प्रभाग को मोटे तौर पर चार खंडों में बांटा गया है, (1) निर्माण (2) वितरण (3) अंतर्राष्ट्रीय वृत्त चित्र एवं लघु फिल्म समारोह और (4) प्रशासन।

निर्माण खंड

6.2.1. बम्बई में मुख्यालय के अलावा, प्रभाग के बंगलौर, कलकत्ता और दिल्ली में तीन निर्माण केन्द्र कार्यरत हैं। निर्माण खंड में चार प्रमुख अनुभाग हैं : (1) वृत्त चित्र (2) समाचार पत्रिका (3) लघु कथा चित्र, विशेषकर ग्रामीण दर्शकों के लिए निर्मित, और (4) एनिमेशन फिल्म।

6.2.2. अपने वार्षिक निर्माण कार्यक्रम के अंतर्गत प्रभाग अपने निर्माता-निर्देशकों के जरिए लगभग 60 प्रतिशत फिल्में बनाता है। प्रभाग के वृत्त चित्रों के विषयों व विषय वस्तु में कृषि से कला व वास्तु कला, उद्योग से अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य, खाद्य से त्यौहारों, स्वास्थ्य रक्षा से आवास, विज्ञान व प्रौद्योगिकी से खेल-कूद, व्यापार व वाणिज्य से परिवहन, जनजातीय कल्याण से सामुदायिक विकास और सहयोग तक का समावेश रहता है। संक्षेप में मानव क्रियाकलापों और प्रयासों का हर क्षेत्र प्रभाग का विषय है।

6.2.3. सामान्यतया, प्रभाग अपने निर्माण-कार्यसूची का लगभग 40 प्रतिशत हिस्सा विभिन्न केन्द्रों के स्वतंत्र फिल्म निर्माताओं के लिए आरक्षित रहता है, ताकि व्यक्तिगत प्रतिभाओं को प्रोत्साहन मिले तथा देश में वृत्त चित्र आंदोलन की जड़ें मजबूत हों। अपने सामान्य निर्माण कार्यक्रम के अलावा,

प्रभाग वृत्तचित्रों के निर्माण में सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों सहित सरकार के सभी मंत्रालयों व विभागों की मदद करता है।

6.2.4. न्यूजरील खंड एक संयुक्त मुख्य निर्माता के अधीन काम करता है तथा निदेशक, न्यूजरील अधिकारी और सहायक न्यूजरील अधिकारी उसकी मदद करते हैं। इस प्रकार यह तंत्र राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों प्रमुख शहरों और नगरों में फैला है। इन फिल्मों का प्रयोग पाक्षिक समाचार पत्रिकाएं तैयार करने के अलावा अभिलेखीय सामग्री के रूप में भी किया जाता है।

6.2.5. प्रभाग की कार्टून फिल्म इकाई ने लगातार कार्टून फिल्मों के निर्माण से अपनी प्रतिष्ठा बना ली है। इसकी कई कार्टून फिल्मों को विश्व भर में सम्मान मिला है। यह इकाई वृत्त चित्रों और समाचार पत्रिकाओं के लिए एनीमेशन सीक्वेंस भी तैयार करती है तथा अब यह कठपुतली फिल्में बनाने में भी सक्षम है।

6.2.6. कमेंटरी अनुभाग, फिल्मों समाचार पत्रिकाओं की 14 भारतीय भाषाओं में डबिंग का काम संभालता है तथा आवश्यकता पड़ने पर मूल अंग्रेजी या हिंदी पाठ की विदेशी भाषाओं में भी डबिंग करता है।

6.2.7. प्रभाग की दिल्ली इकाई का दायित्व कृषि मंत्रालय, रक्षा मंत्रालय और परिवार कल्याण विभाग के लिए शिक्षण व प्रेरक फिल्मों का निर्माण करने का है।

6.2.8. कलकत्ता और बंगलौर स्थित प्रभाग के क्षेत्रीय कार्यालय ग्रामीण दर्शकों के लिए लगभग एक घंटे की 16 मि मी की लघु कथा चित्रों का निर्माण करते हैं। सामाजिक महत्व की ये फिल्में परिवार कल्याण और साम्प्रदायिक सद्‌भाव जैसे सामाजिक व राष्ट्रीय विषयों का संदेश फैलाने और दहेज, बंधुआ मजदूर, अस्पृश्यता आदि जैसी बुराइयों को दर्शाने और उन पर ध्यान केंद्रित करने का काम करती हैं।

6.2.9. तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बंगला, असमिया, उड़िया और पूर्वोत्तर व दक्षिणी क्षेत्र की कई बोलियों में बनने वाली इन फिल्मों में पटकथा-लेखन व अभिनय के लिए स्थानीय प्रतिभाओं का उपयोग किया जाता है, ताकि फिल्मों में भाषा व क्षेत्र की पहचान बनी रहे। ऐसी फिल्मों ने लोगों को सामाजिक व आर्थिक न्याय दिलाने के लिए बनाई गई परियोजनाओं व योजनाओं से ग्रामीण जनसमुदाय का अधिक तादात्मय स्थापित करने में अपनी भूमिका निभाने के साथ-साथ लोगों के भविष्य को सुधारने में भी योगदान दिया है। अब उत्तरी और पश्चिमी क्षेत्रीय भाषाओं में ऐसी फिल्मों के निर्माण के लिए इस योजना का विस्तार किया गया है।

वितरण खंड

6.3.1. फिल्म प्रभाग के वितरण खंड के शाखा कार्यालयों का अनुपात 1500 सिनेमाघरों पर एक शाखा के अनुपात से है। इस समय प्रभाग के 10 वितरण शाखा कार्यालय हैं, जो बंगलौर, बम्बई, कलकत्ता, हैदराबाद, लखनऊ, मद्रास, मदुरै, नागपुर, तिरूअनंतपुरम और विजयवाड़ा में स्थित है। 1994 में प्रभाग ने देश भर में फैले 12,907 सिनेमाघरों को फिल्में उपलब्ध कराई, जिनकी दर्शक संख्या लगभग 9-10 करोड़ प्रति सप्ताह थी।

6.3.2. प्रभाग द्वारा क्षेत्र प्रचार निदेशालय की सचल इकाइयों और केन्द्र सरकार व राज्य सरकारों के विभागों को 16 मिमी के फिल्म प्रिंट उपलब्ध कराए जाते हैं। मोटे तौर पर, ये इकाइयां प्रति सप्ताह लगभग 4 से 5 करोड़ व्यक्तियों को फिल्में दिखाती हैं। इसके अलावा प्रभाग के वृत्त चित्र, दूरदर्शन के राष्ट्रीय व क्षेत्रीय नेटवर्कों से भी प्रसारित की जाती हैं। अप्रैल से नवम्बर 1994 के दौरान फिल्म प्रभाग की 8 फिल्में दूरदर्शन से प्रसारण के लिए जारी की गई। देश भर में फैले शिक्षण संस्थान और कई समाजिक संगठन भी वितरण शाखा कार्यालयों की लाइब्रेरियों से फिल्में लेते हैं।

6.3.3. प्रभाग की फिल्मों के वीडियो कैसेट, रेलवे, सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों, केन्द्र व सरकार के विभागों, शैक्षणिक संस्थानों और निजी पार्टियों को गैर-वाणिज्यिक इस्तेमाल के लिए बेचे जाते हैं। अप्रैल से नवम्बर 94 के दौरान इस उद्देश्य के लिए 94,756 कैसेट बेचे गए।

6.3.4. विदेश मंत्रालय का विदेश प्रचार प्रभाग, फिल्म प्रभाग की चुनी हुई फिल्मों के प्रिंट विदेशों में भारतीय मिशनों में वितरित करता है। नेशनल फिल्म डेवलमेंट कार्पोरेशन लि. तथा निजी एजेंसियां भी प्रभाग की फिल्मों के अंतर्राष्ट्रीय वितरण की व्यवस्था करती हैं। विदेशी वीडियो और टेलीविजन नेटवर्कों के लिए रायल्टी के आधार पर प्रभाग की फिल्मों का भी उपयोग किया जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय वृत्त एवं लघु फिल्म समारोह

6.4.1. फिल्म प्रभाग को बम्बई में वृत्तचित्रों, लघु व कार्टून फिल्मों के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह के अयोजन का दायित्व सौंपा गया है। यह समारोह हर दूसरे वर्ष आयोजित होता है। पहला समारोह मार्च 90 में दूसरा फरवरी 92 में और तीसरा 1 से 7 फरवरी 94 तक आयोजित किया गया।

प्रशासन खंड

6.5.1. प्रशासन खंड वित्त, कार्मिक, भंडार व उपकरण जैसी सुविधाएं प्रभाग के अन्य खंडों को उपलब्ध कराता है। स्थापना, भंडार, लेख, फैक्टरी प्रबंध और सामान्य प्रशासन से संबंधित सभी मामलों के लिए प्रशासन जिम्मेदार है। यह खंड सीधे प्रशासन-निदेशक के अंतर्गत कार्य करता है। जिसकी सहायता के लिए (1) एक प्रशासनिक अधिकारी होता है जो कार्मिक प्रबंध, कच्ची फिल्मों, चलचित्र उपकरण व सहायक उपकरणों की खरीद व आपूर्ति की सतर्कता और सुरक्षा संबंधी मामलों को देखता है, (2) आंतरिक वित्तीय सलाहकार वित्त और लेखा संबंधी मामलों में सलाह देता है तथा (3) उप निदेशक (लागत) लागत लेखों के मामलों में मदद करता है।

निष्पादन

6.6.1. अप्रैल से नवम्बर 1994 के दौरान प्रभाग ने 16 समाचार पत्रिकाएं और 29 वृत्तचित्र/लघुचित्र फिल्में (79 रीलें) तैयार कीं, जिनमें से 28 फिल्में (77 रीलें) विभाग द्वारा बनाई गई तथा एक फिल्म (2 रीलें) स्वतंत्र निर्माताओं ने बनाई। बाहरी निर्माताओं से 3 फिल्में (5 रीलें) खरीदी गई।

6.6.2. प्रभाग ने अपने वृत्त चित्रों, समाचार पत्रिकाओं और 16 मिमी की लघु कथाचित्रों के जरिए साम्प्रदायिक सद्भाव, राष्ट्रीय एकता, अस्पृश्यता निवारण, परिवार कल्याण कार्यक्रमों आदि जैसे महत्वपूर्ण राष्ट्रीय अभियानों के लिए निरंतर प्रचार व संचार सहायता प्रदान की।

6.6.3. महत्वपूर्ण राष्ट्रीय अभियानों के लिए बनाई गई प्रभाग की फिल्मों में (1) 'साइकिल आफ लाइफ' (राष्ट्रीय एकता पर) (2) 'दस्तों से रक्षा' (पेचिश पर), (3) 'महिला स्वास्थ्य संघ स्कीम इन इंडिया', और (4) 'आहट' (बाल विवाह पर) शामिल हैं।

6.6.4. वर्ष के दौरान, प्रभाग ने स्वर्गीय श्री राजीव गांधी और बड़ादे उकील पर जीवनी फिल्में पूरी कीं। अन्य कई प्रख्यात व्यक्तियों पर कई फिल्में निर्माणधीन हैं।

6.6.5. फिल्म प्रभाग ने 'गैट' समझौते पर दो विशेष फिल्में 'समय की मांग' (दवाओं के पेटेंट पर) और 'समय के साथ') भारत में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के निवेश पर) तैयार की।

6.6.6. ग्रामीण विकास पर बहु-माध्यम अभियान के अंग के रूप में, ग्रामीण विकास द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के बारे में 6 विशेष फिल्में तैयार कीं। इनमें पंचायती राज, भू-रिकार्डों के कम्प्यूट्रीकरण, सुरक्षित जल, जवाहर रोजगार योजना, रोजगार आश्वासन योजना और विकास नीति के रूप में समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम के विषयों को लिया गया। प्रभाग ने जल संकट प्रबंध कार्यक्रम पर दो फिल्में भी शुरू की हैं।

6.6.7. प्रभाग विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भाग लेता रहा है। नवम्बर 94 तक की अवधि में प्रभाग ने 30 समारोहों में भाग लिया।

राजस्व

6.7. अप्रैल-नवम्बर 94 के दौरान प्रभाग ने थियेट्रिकल सर्किट पर वृत्त चित्रों, 18 समाचार पत्रिकाओं और 18 न्यूजरीलों के 16,050 प्रिंट जारी किए। प्रभाग ने भारत और विदेशों में गैर-वाणिज्यिक उपयोग के लिए अपनी फिल्मों के 85 प्रिंट और 750 वीडियो कैसेट भी बेचे। 31 अक्तूबर 94 तक प्रभाग ने कुल 424.4 लाख रुपये का राजस्व अर्जित किया, जिसमें स्टाक शॉटों की बिक्री से प्राप्त 5.26 लाख रुपये का राजस्व भी शामिल है।

फिल्म समारोह निदेशालय

6.8. भारत सरकार ने सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अधीन फिल्म समारोह निदेशालय की स्थापना 1973 में की थी तथा इसका प्रमुख दायित्व अच्छे सिनेमा को प्रोत्साहित करना था। तब से निदेशालय ने सर्वोत्तम भारतीय सिनेमा के लिए हर वर्ष राष्ट्रीय फिल्म समारोह के रूप में मंच प्रदान किया है। निदेशालय अंतराष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक सद्‌भाव व मैत्री बढ़ाने का एक साधन सिद्ध हुआ है। देश के भीतर इसने विश्व सिनेमा पहुंचाया है। निदेशालय की गतिविधियों को मोटे तौर पर निम्न प्रकार से बांटा जा सकता है :

(1) राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों का आयोजन,
(2) भारतीय पैनोरमा फिल्मों का चयन,
(3) सरकार की ओर से समय-समय पर विशेष फिल्म कार्यक्रमों का आयोजन,
(4) प्रिंट संकलन व प्रलेखन,
(5) देश-विदेश में सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों का आयोजन व इनमें भागीदारी,
(6) विदेशों में अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में भागीदारी, और
(7) भारतीय अंतराष्ट्रीय फिल्म समारोह का आयोजन

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार

6.9. 41वें राष्ट्रीय फिल्म समारोह के निर्णायक मंडल ने अप्रैल 94 में फिल्मावलोकन का काम आरंभ किया। फीचर फिल्मों के निर्णायक मंडल के अध्यक्ष डा. टी सुब्बारामी रेड्डी तथा गैर-फीचर फिल्मों के श्री के.बिक्रम सिंह थे। सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन की निर्णायक समिति की अध्यक्षता श्री खालिद महमूद ने की। पुरस्कारों के लिए 123 फीचर फिल्में, 68 गैर-फीचर फिल्में, 13 पुस्तकें और 20 लेख प्राप्त हुए। राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा और तीन विख्यात दादा साहेब फाल्के पुरस्कार विजेताओं-- श्री पी जयराज, श्री अशोक कुमार और डा. भूपेन हजारिका ने नई दिल्ली के विज्ञान भवन में 30 सितम्बर, 1994 को आयोजित एक समारोह में पुरस्कार वितरित किए। सर्वोत्तम फीचर फिल्म का पुरस्कार श्री बुद्धदेव दास गुप्ता की बंगला फिल्म 'चराचर' को मिला। श्री अरूण भट्टाचार्य जी की 'मल्हार राग' को सर्वोत्तम गैर-फीचर का पुरस्कार मिला। सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक का पुरस्कार डा. भानुमति रामकृष्ण की तेलुगू पुस्तक 'नाल्ले नेनु' को प्राप्त हुआ। डा. प्रतिमान सरकार को 1993 के सर्वोत्तम समालोचक का पुरस्कार दिया गया। 1993 के दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से विख्यात शायर और गीतकार मजरूह सुलतानपुरी को सम्मानित किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह

6.10.1. भारत का 26वां अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह 10 से 20 जनवरी 1995 तक बम्बई में हुआ। इस गैर-प्रतिस्पर्धी फिल्म समारोह में बम्बई के 11 छविगृहों में फिल्मों का प्रदर्शन किया गया तथा संवाददाताओं व प्रतिनिधियों के लिए अलग फिल्म प्रदर्शन आयोजित किया गया।

6.10.2. इस समारोह में निम्नलिखित खंड थे :

(1) विश्व सिनेमा ;
(2) एशियाई महिला निदेशक और हाल की भारतीय महिला निदेशक ;
(3) सिंहावलोकन खंड ;
(4) भारतीय पैनोरमा, 95 ;
(5) मुख्यधारा की भारतीय फिल्में ;
(6) विरासत खंड।

6.10.3. अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह के भारतीय पैनोरमा खंड की शुरूआत 1978 में हुई। तब से, इस खंड के लिए प्रति वर्ष फिल्मों का चयन किया जाता है। इस वर्ष देश भर से समारोह में 84 फीचर फिल्में शामिल हुई। प्रारंभ में बम्बई, कलकत्ता और मद्रास में तीन क्षेत्रीय चयन मंडलों ने प्रविष्टियों में से चयन करके फिल्मों की छोटी सूची बनाई जिन पर बाद में केन्द्रीय चयन मंडल द्वारा विचार किया गया। श्रीमती जया बच्चन की अध्यक्षता में चयन मंडल ने भारतीय पैनोरमा 95 में 16 फीचर फिल्में शामिल करने की सिफारिश की। गैर-फीचर फिल्म श्रेणी में, श्री गौतम घोष की अध्यक्षता में, चयन मंडल ने दिल्ली में 53 फिल्मों का अवलोकन किया। कुल मिलाकर 15 गैर फीचर फिल्में चुनी गई। इन फिल्मों को भारत के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह 95 में प्रदर्शित किया गया।

फिल्म सप्ताह

6.11.1. भारत में मनाए गए विदेशी फिल्मों के सप्ताह इस प्रकार हैं : दिल्ली और भुवनेश्वर में श्रीलंकाई फिल्म सप्ताह, दिल्ली, हैदराबाद और सिकंदराबाद में सीरियाई फिल्म सप्ताह तथा दिल्ली में ब्राजील की फिल्मों का सप्ताह। सीरिया के दो-सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल ने सीरियाई फिल्म सप्ताह में भाग लिया। इटली की फिल्मों के सप्ताह के दिल्ली में आयोजन का प्रस्ताव है।

6.11.2. निम्नलिखित स्थानों पर भारतीय फिल्म सप्ताहों का आयोजन किया गया : तेल अवीव, इसराइल-8 फिल्में और एक सदस्ययीय प्रतिनिधिमंडल ; मारीशस-6 फिल्में ; मापुते-7 फिल्में ; कजाकिस्तान-7 फिल्में ; चीन-8 फिल्में ; डेनमार्क-8 फिल्में ; टोरंटो-14 फिल्में ; ट्यूनिस-9 फिल्में ; मोरक्को-7 फिल्में ; श्रीलंका-6 फिल्में ; घाना-6 फिल्में और लागोस 6 फिल्में। विभिन्न देशों में भारतीय फिल्म सिंहावलोकन आयोजित किए गए : सत्यजित राय की फिल्मों का सिंहावलोकन-ब्राजील ; मृणाल सेन- हांगकांग ; गुरूदत्त-इंगलैंड ; अडूर गोपालकृष्णन-न्यूयार्क ; शबाना आजमी-वानकूवर, विनीपेग, सान फ्रांसिस्किो और वाशिंगटन। भारतीय फिल्मों का एक विशेष प्रदर्शन टोरंटों में किया गया, जिसमें 14 भारतीय फिल्में प्रदर्शित हुई।

विदेशों में गतिविधियां

6.12.1. जनवरी-नवम्बर 194 के दौरान निदेशालय ने विदेशों में 55 से अधिक फिल्म समारोहों में भाग लिया, जिनमें एशियाई समारोह तथा एशियाई सिनेमा के हांगकांग अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह, सियोल में एशिया प्रशांत फिल्म समारोह, सिंगापुर अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समोराह तथा फुकुओका एशियाई फिल्म समारोह, जापान शामिल थे। निदेशालय ने बर्लिन, कान्स, सिडनी, कार्लोवैरी, सान सैबस्तियान, फलैंडर्स, मांट्रियाल, हवाई, लंदन, नैन्टिज और एमियन्स जैसे विख्यात अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भी भाग लिया। निदेशालय ने बर्लिन और कान्स के प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में प्रतिनिधि मंडल भी भेजे।

6.12.2. पुरस्कार जीतकर, चयन मंडलों की सदस्यता से सम्मानित होकर या सेमिनारों में भाग लेकर कई भारतीय फिल्मों और फिल्मकारों ने अंतर्राष्ट्रीय फिल्म जगत में अपनी पहचान बनाई। श्री अमरीश पुरी को सिंगापुर अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में फिल्म 'सूरज का सातवां घोड़ा' के लिए सर्वोत्तम अभिनेता का पुरस्कार मिला। फिल्म 'मोक्ष' को 17वें सान फ्रांसिस्को अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में विशेष जूरी

पुरस्कार के लिए शामिल किया गया। शबाना आजमी को इटली के ताओरमिना आरते अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में फिल्म 'पतंग' के ऐ सर्वोत्तम अभिनेत्री का सम्मान मिला। फिल्म "शून्य थेके शुरू" को प्योंगयांग अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में दूसरा रजत टार्च लाइट पुरस्कार प्राप्त हुआ। फिल्म 'जननी' को कार्लोवी वैरी फिल्म समारोह में विशेष पुरस्कार मिला। फिल्म 'विधेयन' को मैनहीम अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में इंटरफिल्म जूरी पुरस्कार प्राप्त हुआ। फिल्म 'इल्लुयम मुल्लुम' को दो पुरस्कार मिले–फ्रांस के रिकोंत्रे दु मोदे ग्रामीण फिल्म समारोह, सेंट फलोर के प्रि द जूरी और प्रि द् लाइसीन्स दे पुरस्कार। फिल्म 'शिल्पी' को 14वें अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह द् फिल्म द' अमीयन्स, फ्रांस में सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार मिला और ओसाका की विश्व टेलीविजन प्रतियोगिता में इसने सर्वोत्तम फिल्म पुरस्कार के साथ-साथ नकद पुरस्कार भी जीता। श्री शेखर कपूर मांट्रियाल फिल्म समारोह की जूरी में शामिल हुए। फिल्म समारोह निदेशालय की निर्देशिका श्रीमती मालती सहाय ने सितम्बर 1994 में मांट्रियाल अंतर्राष्ट्रीय छात्र फिल्म समारोह के निर्णायक मंडल में सदस्य के रूप में भूमिका निभाई। केरल के फिल्म निदेशक श्री शाजी एन करूण (डी पी आर) कोरिया के प्योंगयांग अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह के निर्णायक मंडल के सदस्य थे। फिल्म निदेशक श्री बुद्धदेव दासगुप्त बर्लिन फिल्म समारोह में प्रतिनिधि के रूप में शामिल हुए तथा उन्होंने विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह के निमंत्रण पर हवाई, मांट्रियाल आदि समारोहों में भाग लिया। फिल्म निदेशक श्री अडूर गोपालकृष्णन अमरीका के हवाई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में निर्णायक मंडल के सदस्य रहे। श्री मृणाल सेन को सान फ्रांसिस्को फिल्म समारोह द्वारा निमंत्रित किया गया। फिल्म निदेशक श्री नबयेन्दु चटर्जी, समारोह आयोजकों के निमंत्रण पर ओसाका, जापान तथा अमियन्स फ्रांस गए। श्री सनतदास गुप्त, फिल्म निर्देशक, कार्लोवी वैरी फिल्म समारोह, मांट्रियाल और काहिरा के समारोह में आयोजकों के निमंत्रण पर गए।

राष्ट्रीय बाल एवं युवा फिल्म केन्द्र

6.13.1. राष्ट्रीय बाल एवं युवा फिल्म केन्द्र, सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय के अधीन एक स्वायतशासी निकाय है। पहले इसे भारतीय बालचित्र समिति कहा जाता था। इसका उद्देश्य बच्चों और युवाओं के लिए स्वस्थ मनोरंजक फिल्में बनाना है। बम्बई में केन्द्र का मुख्यालय है तथा दिल्ली और मद्रास में इसके क्षेत्रीय कार्यालय हैं। वर्तमान में श्रीमती जया बच्चन इसकी अध्यक्षा हैं।

6.13.2. यह संगठन फीचर फिल्में, टेलीविजन धारावाहिक, लघुकथा फिल्में और लघु कार्टून फिल्में बनाता है। केन्द्र विदेशी फिल्मों के अधिकार भी खरीदता है और उन्हें भारत में प्रदर्शित करता है।

6.13.3. केन्द्र द्वारा निर्मित कई फिल्मों ने राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भाग लिया है और कई पुरस्कार जीते हैं। केन्द्र द्वारा हर दूसरे वर्ष अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह आयोजित किया जाता है। ऐसा आगामी समारोह नवम्बर 95 में होगा। केन्द्र की फिल्मों ने 1994 में 8 अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भाग लिया और निम्नलिखित सम्मान पाए :

(1) फिल्म 'करामाती कोट' को 1994 के 20वें अंतर्राष्ट्रीय बाल फिल्म समारोह फ्रैंकफर्ट में विशेष उल्लेख;

(2) 'मुझसे दोस्ती करोगे' फिल्म को पांचवे काहिरा अंतर्राष्ट्रीय बाल फिल्म समारोह में जूरी पुरस्कार;

(3) 'मुझसे दोस्ती करोगे' फिल्म को बच्चों की सर्वोत्तम फिल्म का वी. शांताराम पुरस्कार : और

(4) फिल्म 'लावण्य प्रीति' को रजत पदक।

6.13.4. केन्द्र द्वारा फिल्मों का निर्यात भी किया जाता है। केन्द्र की कई लघु फिल्में सिंगापुर ब्राडकास्टिंग कार्पोरेशन के नेटवर्क पर प्रसारित हो चुकी हैं।

6.13.5. 1994-95 के दौरान केन्द्र ने आस्कर वाइलड के प्रसिद्ध उपन्यास 'कैंटरविले घोस्ट' पर आधारित फिल्म 'अभय' का निर्माण पूरा किया। इसके अलावा केन्द्र के धारावाहिक 'पोटली बाबा की' के 20 और एपीसोड पूरे किए गए। एक अन्य टेलीविजन धारावाहिक 'टॉयज' निर्माणाधीन है, जो शीघ्र पूरा हो जाएगा। केन्द्र को दो अन्य फीचर फिल्मों का निर्माण चालू वित्त वर्ष में शुरू करने की आशा है।

6.13.6. केन्द्र ने देश के पूर्वोत्तर राज्यों में अपनी गतिविधियां बढ़ाने के लिए कदम उठाए हैं। इस वर्ष असम में केन्द्र की फिल्मों के चार समारोह आयोजित किए गए। केन्द्र को आशा है कि अन्य राज्यों में भी यह कार्य आरंभ हो जाएगा। गुवाहाटी में जनवरी/फरवरी 95 में बच्चों के लिए एक कार्टून कार्यशाला के आयोजन की आशा है। इसके अलावा, केन्द्र ने विभिन्न जिलों में अपनी फिल्मों के 60 समारोह आयोजित किए तथा मार्च 1995 तक 10 ऐसे समारोहों के आयोजन का प्रस्ताव है।

6.13.7. नौंवा अंतर्राष्ट्रीय बाल एवं युवा फिल्म समारोह 14-23 नवम्बर 1995 तक हैदराबाद में अयोजित किया गया। इसके कार्यक्रम में बच्चों के लिए एक कार्टून कार्यशाला के अलावा बाल फिल्मों के लिए पटकथा लेखन पर एक कार्यशाला का आयोजन भी शामिल था।

भारत का राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार

6.14.1. भारत के राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार का मूल उद्देश्य फिल्मों का संरक्षण, परिरक्षण और पुनरुद्धार है। अभिलेखागार द्वारा फिल्मों को आदर्श भंडारण स्थिति में परिरक्षण को प्राथमिकता दी जाती है। इसके बावजूद कुछेक पुरानी फिल्मों के आगामी वर्षों में नष्ट हो जाने की संभावना रहती है। ऐसी फिल्मों को छांट लिया जाता है और उनके पूरी तरह खराब हो जाने से पूर्व ही उनकी प्रतियां बना ली जाती हैं। अभिलेखागार के महत्वपूर्ण क्रियाकलापों का ब्यौरेवार वर्णन परिशिष्ट-VIII में दिया गया है।

6.14.2. अभिलेखागार का मुख्यालय पुणे में है तथा बंगलौर, कलकत्ता और तिरूअनंतपुरम में इसके तीन क्षेत्रीय कार्यालय हैं। इसकी 16 मिमी फिल्मों की वितरण लाइब्रेरी से देशभर में सदस्यों को सुविधाएं मिलती है। इसके अलावा, विशेष अवसरों, जयंती समारोहों, सिंहावलोकन आदि के अवसरों पर 35 मिमी की फिल्में भी उपलब्ध कराई जाती हैं। बंगलौर, कलकत्ता, बम्बई, हैदराबाद और तिरुअनंतपुरम के महत्वपूर्ण केन्द्रों में नियमित संयुक्त प्रदर्शनों के जरिए दर्शकों को भारतीय सिनेमा के इतिहास और सर्वश्रेष्ठ विश्व सिनेमा की झलक मिलती है।

6.14.3. अभिलेखागार ने पुणे में अपना वार्षिक पांच दिवासीय फिल्म मूल्यांकन (एप्रीसिएशन) पाठ्यक्रम 30 मई से 2 जुलाई 94 तक आयोजित किया तथा श्रीलंका के नेशनल फिल्म कार्पोरेशन, कोलम्बो; गेथे इंस्टीट्यूट काठमांडु, नेपाल ; राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली ; मध्य प्रदेश फिल्म विकास निगम, भोपाल ; राष्ट्रीय मंचन कला केन्द्र, बम्बई ; और लाल बहादुर प्रशासनिक अकादमी, मसूरी को लघु अवधि पाठ्यक्रम चलाने में सहयोग दिया।

6.14.4. अभिलेखागार की लाइब्रेरी में भारतीय व अंतर्राष्ट्रीय सिनेमा और सम्बद्ध अन्य कलाओं से संबंधित पुस्तकों व पत्रिकाओं का उत्कृष्ट संग्रह है। एक प्रलेखन अनुभाग स्थिर-चित्रों, पुस्तिकाओं, पोस्टरों, डिस्क रिकार्डो, आडियो टेपों, फिल्म समीक्षाओं, लेखों आदि के जरिए भारतीय सिनेमा पर जानकारी व अनुषंगी सामग्री एकत्र करता है। अभिलेखागार द्वारा हाल ही में प्राप्त की गई सामग्री का विवरण निम्नवत है।

अभिलेखागार द्वारा 31 दिसम्बर 1994 तक की गई प्राप्तियां

मद	31 दिसम्बर 93	जनवरी से दिसंबर 1994	31 दिसंबर 94
फिल्में	12,922	109	13,031
वीडियो कैसेट	1,074	142	1,216
पुस्तकें	20,935	494	21,429
पत्रिकाएं	152	(-) 24	128
पत्रिकाओं के सजिल्द खंड	444	126	570
पटकथाएं	21,403	-	21,403
पूर्व-रिकार्डेड कैसेट	209	80	289
स्थिर चित्र	97,989	631	98,620
पोस्टर	6,410	68	6,478
गीत पुस्तिकाएं	6,252	172	6,424
आडियो टेप (मौखिक इतिहास)	153	-	153
समाचार कतरनें	1,36,273	-	1,36,273
पैम्फलेट/फोल्डर	7,287	96	7,312
स्लाइड	3,236	200	3,436
माइक्रो फिल्म	1,957	-	1,957
माइक्रोफिश	42	-	42
डिस्क रिकार्ड	1,858	46	1,904

6.14.5. अभिलेखागार मई 1969 से अंतर्राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार फेडेरेशन का पूर्ण सदस्य है, जिससे इसे परिरक्षण तकनीकों, प्रलेखन, ग्रंथ-सूची आदि के बारे में विशेषज्ञ-परामर्श व सामग्री उपलब्ध होती है तथा यह अभिलेखागार विनिमय कार्यक्रमों के अंतर्गत अन्य अभिलेखागारों के साथ दुर्लभ फिल्मों का विनिमय कर सकता है।

6.14.6. अभिलेखागार के नए भवन का उद्घाटन जनवरी 1994 में हुआ। इसमें 330 सीटों का प्रेक्षागार और एक 30 सीटों वाला प्रिव्यू-थियेटर है। अभिलेखागार के फिल्म सर्किल के फिल्म प्रदर्शन शुरू हो चुके हैं, जो सदस्यता के आधार पर होते हैं।

6.14.7. सिनेमा के शताब्दी समारोहों को केन्द्रीय एजेंसी के रूप में अभिलेखागार 1995-96 के दौरान प्रदर्शनियों, सिंहावलोकनों और सेमिनारों का आयोजन कर रहा है।

भारत का फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान

6.15.1. पुणे स्थित भारत के फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान में फिल्म शाखा और टेलीविजन शाखा शामिल हैं। फिल्म शाखा द्वारा सिनेमा में डिप्लोमा पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं, जो (1) निदेशन (2) सिनेमेटोग्राफी (3) ध्वन्यांकन एवं ध्वनि इंजीनियरी, तथा (4) फिल्म सम्पादन में विशिष्टीकरण प्रस्तुत करते हैं। पहले तीन पाठ्यक्रमों की अवधि 3-3 वर्ष की है, जबकि अंतिम पाठ्यक्रम दो वर्ष का है।

6.15.2. टेलीविजन शाखा द्वारा दूरदर्शन कर्मचारियों को सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। टेलीविजन कार्यक्रमों के निर्माण और तकनीकी आपरेशनों में बुनियादी पाठ्यक्रम के अलावा विशिष्ट क्षेत्रों में अल्पावधि पाठ्यक्रम भी चलाए जाते हैं। यह शाखा कुआलालम्पुर (मलेशिया) के एशिया पैसेफिक इंस्टीट्यूट फार ब्रॉडकास्टिंग डेवलपमेंट के सहयोग से विशिष्ट पाठ्यक्रम और कार्यशालाएं भी चलाती

है। यह संस्थान सेंटर इंटरनेशनल द लियाजें दे एकोलेस द सिनेमा एट दे टेलीविजन का सदस्य है, जिसके कार्यक्रमों में संस्थान के संकाय सदस्य व छात्र नियमित रूप से भाग लेते हैं।

6.15.3. फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान ने राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार के साथ मिलकर 30.5.94 से 2.7.94 तक फिल्म एप्रीसिएशन का पांच सप्ताह का पाठ्यक्रम चलाया। इसमें लेखकों, पत्रकारों, विश्वविद्यालय-अध्यापकों, लाइब्रेरियों, फिल्म सोसायटियों के सदस्यों और प्रचार माध्यमों के अधिकारियों में से 70 छात्रों ने भाग लिया। संस्थान ने राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार के सहयोग से कोलम्बो में 27 मार्च 94 से 6 अप्रैल 94 तक एक फिल्म एप्रीसिएशन पाठ्यक्रम भी चलाया। संस्थान के छात्रों को शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता बढ़ाने के लिए, विदेशों के प्रख्यात फिल्मकारों के सहयोग से कार्यशालाएं/सेमिनार आयोजित किए जाते हैं।

6.15.4. छात्रों की डिप्लोमा फिल्में विभिन्न राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भेजी जाती हैं। इन्हें विभिन्न समारोहों में मान्यता भी मिलती है। रघुनाथ की फिल्म 'तीर्थयात्रा' का उल्लेख किया जा सकता है, जिसे बम्बई में हुए भारत के 26 वें अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह के लिए चुना गया।

6.15.5. भारतीय सूचना सेवा के परिवीक्षाधीन अधिकारियों व फिल्म व टेलीविजन कार्यक्रमों के निर्माण सम्बन्धी ओरिएंटेशन पाठ्यक्रमों और अंतिम वर्ष के फिल्म शाखा छात्रों के लिए 'वीडियो पाठ्यक्रम' के अलावा दूरदर्शन कर्मचारियों के लिए कोई भी नियमित टेलीविजन कार्यक्रम निर्माण व तकनीकी आपरेशन पाठ्यक्रम नहीं चलाया जा सका, क्योंकि संस्थान में स्टूडियो के नवीकरण का तथा वातानुकूलन संयंत्र, उपकरणों आदि को बदलने का काम चल रहा था।

नेशनल फिल्म डेवलपमेंट कार्पोरेशन

6.16.1. फिल्म वित्त निगम और भारतीय चलचित्र निर्यात निगम के विलय से 11 अप्रैल 1980 को नेशनल फिल्म डेवेलपमेंट कार्पोरेशन की स्थापना हुई। कार्पोरेशन का उद्देश्य भारत में सिनेमा के स्तर में सुधार करना और इसके पहुंच के दायरे को बढ़ाने का है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कार्पोरेशन के क्रियाकलाप केंद्रित हैं।

6.16.2. कार्पोरेशन, कम बजट की फिल्मों को बढ़ावा देती है। संभवतया, देश में फिल्म-निर्माण की समस्याओं का एकमात्र हल कम बजट, परंतु बढ़िया फिल्में ही है।

6.16.3. सर रिचर्ड एटनबरो के निर्देशन में बनी अत्यंत सफल फिल्म 'गांधी' के साथ कार्पोरेशन ने सह निर्माण का अपना कार्यक्रम शुरू किया। इसके बाद मीरा नायर की 'सलाम बाम्बे' स्वर्गीय श्री जी अरविंदन की 'उन्नी' पामेला रूक्स की 'मिस बीटीज चिल्ड्रन्स', केतन मेहता की भारत ब्रिटेन, फ्रांस सह निर्माण' 'माया मेमसाब' और 7 एपिसोड के धारावाहिक 'दि न्यू इंडियन ट्रंक' सह-निर्माण के क्रम में आए। इस समय अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से कार्पोरेशन दो सह-निर्माण फिल्में बना रहा है। एक है कारपोरेशन और साउथ अफ्रीकन ब्राडकास्टिंग कार्पोरेशन की संयुक्त उपक्रम 'मेकिंग आफ महात्मा' और दूसरी, भारत फ्रांस उपक्रम 'जय गंगा' है।

6.16.4. देश में, कार्पोरेशन और दूरदर्शन के सह-निर्माण समझौते के अंतर्गत आठ फिल्में नवम्बर 1994 तक पूरी हो चुकी हैं। टेलीविजन पर प्रसारण के लिए अच्छी फीचर फिल्मों और टेलीफिल्मों के निर्माण के लिए कार्पोरेशन और दूरदर्शन ने सहयोग आरंभ किया। दूरदर्शन के क्षेत्रीय और राष्ट्रीय नेटवर्क पर प्रसारण के अतिरिक्त, इन फिल्मों को देश-विदेश में वाणिज्यिक और गैर-वाणिज्यिक सर्किटों पर भी चलाया जाता है। वर्ष के दौरान निगम ने श्रीमती अपर्णा सेन के निर्देशन में 'उर्मि मुखेर' नामक एक बंगला फिल्म का निर्माण शुरू किया।

6.16.5. कार्पोरेशन ने देश में अतिरिक्त दर्शक क्षमता तैयार करने और अच्छे सिनेमा के प्रदर्शन के माध्यम तैयार करने के उद्देश्य से थियेटर वित्तपोषण योजना तैयार की और इसे लागू किया। लेकिन कार्पोरेशन के सीमित वित्तीय साधनों के कारण बढ़िया पारिवारिक मनोरंजन फिल्मों पर

26 अप्रैल, 1994 को नई दिल्ली में भारतीय जन संचार संस्थान के 27 वें वार्षिक दीक्षांत समारोह में सूचना और प्रसारण मंत्री श्री के.पी. सिंहदेव भाषण देते हुए।

सांप्रदायिक सद्भाव और राष्ट्रीय एकता के संदेश को फैलाने के लिए देहरादून में गीत और नाटक प्रभाग द्वारा आयोजित 'सद्भावना समारोह' में विभिन्न संप्रदायों का प्रतिनिधित्व करते प्रभाग के कलाकार।

भारत के अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह, 1995 के अवसर पर बंबई में राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम द्वारा बनाए गए 'फिल्म संग्रहालय—एक प्रस्तावना' का एक दृश्य।

बंगलौर में आकाशवाणी के 4X500 किलोवाट शार्टवेव ट्रांसमीटर के ट्रांसमीटर हाल का एक दृश्य। यह विश्व में अपनी तरह का सबसे बड़ा ट्रांसमीटर है।

प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिम्ह राव ने नई दिल्ली में पहली अक्तूबर, 1994 को 'कलक्टेड वर्क्स आफ महात्मा गांधी' के सौवें खंड की पहली प्रति सुश्री आभाबेन गांधी को भेंट की।

पूर्वोत्तर राज्यों में आयोजित 'सद्‌भावना समारोह' के दौरान गीत और नाटक प्रभाग के कलाकारों ने गुवाहाटी में मणिपुरी नृत्य पेश किया।

बंबई में भारत के अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह, 1995 के उद्‌घाटन समारोह में जाने-माने फिल्मी हस्ती श्री शिवाजी गणेशन ने दीप प्रज्वलित किया। इस अवसर पर सूचना और प्रसारण मंत्री श्री के.पी. सिंहदेव, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री शरद पवार और माधुरी दीक्षित भी उपस्थित थे।

गांधी जयंती दिवस के अवसर पर केरल में पलक्कड में क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय द्वारा राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहन देने के लिए आयोजित युवाओं की साइकिल रैली को झंडी दिखाकर रवाना किया गया।

अधिक बल दिया गया। दूरदर्शन के राष्ट्रीय और क्षेत्रीय नेटवर्कों पर कई आयातित फीचर फिल्में व कार्यक्रम प्रसारित किए गए हैं। 1994-95 के दौरान (नवम्बर, 94 तक) कार्पोरेशन ने 7 फीचर फिल्मों, 24 वीडियो फिल्मों और टेलीविजन कार्यक्रमों के 69 एपीसोडों का सिनेमा घरों, वीडियो और टेलीविजन प्रसारण अधिकारों की दृष्टि से आयात किया। देश में भारतीय फिल्मों के लिए भी कार्पोरेशन की व्यापक वितरण व्यवस्था है। वर्ष 1994-95 में (नवम्बर 94 तक) कार्पोरेशन ने विभिन्न सर्किटों में 47 केन्द्रों पर भारतीय फिल्में रिलीज की।

6.16.7. देश के प्रमुख केन्द्रों पर भारतीय पैनोरमा फिल्मों के समारोह आयोजित करने की योजना 1985-86 में आरंभ की गई थी। यह अत्यंत लोकप्रिय हो रही है। 1994-95 के दौरान (नवम्बर 94 तक) देश भर में पैनोरमा फिल्में प्रदर्शित की गई।

6.16.8. राष्ट्रीय फिल्म सर्किल की गतिविधियां वर्ष भर जारी रहीं। कार्पोरेशन ने अब तक कैनेडियाई फिल्म सप्ताह, फासीवाद-विरोधी फिल्म सप्ताह, पांचवां यूरोपियाई संघ फिल्म समारोह, फासबिंदर सिंहावलोकन, विवेस एल्लेग्रेत सिंहावलोकन, कलाद औतां लारा सिंहावलोकन और इंगमार बर्गमैन व क्लाड चैब्रोल सिंहावलोकनों जैसे कई महत्वपूर्ण सिंहावलोकनों व फिल्म सप्ताहों का आयोजन किया है। 1994-95 में (नवम्बर 1994 तक) मैक्समुलर भवन के सहयोग से कार्पोरेशन ने दो फिल्म समारोह, एक वृत्त चित्र फिल्म समारोह 'पोस्ट वाल जर्मनी' तथा नवीनतम जर्मन फिल्मों का समारोह 'दि न्यू जेनेरेशन' आयोजित किए।

6.16.9. भारत, विश्व के 100 से अधिक देशों को फिल्में निर्यात करता है। निगम, विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भी भाग भी लेता है तथा भारतीय सिनेमा को प्रोत्साहन देने के लिए फिल्म बाजारों में अपने प्रतिनिधि भेजता है। वर्ष 1994-95 के दौरान (नवम्बर 1994-तक) कार्पोरेशन ने 74 लाख रु. मूल्य की अपनी फिल्मों का निर्यात किया।

6.16.10. कार्पोरेशन भारत के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों, भारतीय पैनोरमा, राष्ट्रीय पुरस्कारों और सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत फिल्म सप्ताहों के आयोजन में फिल्म समारोह निदेशालय की सेवाएं प्रदान करती है। चालू वर्ष में कार्पोरेशन ने इस क्षेत्र में फिल्म समारोह निदेशालय को अपना सहयोग जारी रखा।

6.16.11. भारत में सिने-ज्ञान को बढ़ावा देने और अच्छे सिनेमा के प्रसार के लिए कार्पोरेशन के घोषणा-पत्र को ध्यान में रखते हुए, कार्पोरेशन अपने वितरकों के माध्यम से भारतीय और विदेशी कालजयी और पुरस्कृत फिल्मों के बढ़िया किस्म के वैध वीडियो कैसेटों की बिक्री कर रही है। अब तक, कार्पोरेशन ने वीडियो पर 269 फिल्में रिलीज की है। केबल और उपग्रह टेलीविजन के विस्तार के कारण दर्शकों को उपलब्ध ढेरों विकल्प की वजह से इस काम को काफी नुकसान पहुंचा है।

6.16.12. वीडियो की चोरी रोकने के लिए कार्पोरेशन ने भारतीय फिल्म उद्योग के सहयोग से कम्पनी अधिनियम के अंतर्गत 'इंडियन फेडेरेशन अगेन्स्ट कापीराइट थेफ्ट (इन्फैक्ट)' नामक चोरी-विरोधी संस्था के गठन की कार्यवाही शुरू की है। 'इन्फैक्ट' को मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा गठित कापीराइट प्रत्यावर्तन परिषद का सदस्य बनाया गया है। गठन के बाद से 'इन्फैक्ट' ने 1000 छापे मारे हैं।

6.16.13. कलकत्ता में कार्पोरेशन के फिल्म केन्द्रों में निर्माण व निर्माणोत्तर सुविधाएं उपलब्ध हैं, जिनमें 16 मिमी के कैमरे समकालिक शूटिंग के लिए रिकार्डर, सम्पादन, टेबलें और पुनः रिकार्डिंग के उपकरण शामिल हैं, जो उचित दरों पर मिलते हैं। रिकार्डिंग और पुनः रिकार्डिंग के लिए एक थियेटर भी है, जिसमें 16 मिमी और 35 मिमी फारमेटो के लिए मैग्नाटैक उच्च गति की इलेक्ट्रानिक स्टुडियो प्रणाली उपलब्ध है। इस केन्द्र में फिल्मों के सम्पादन के लिए स्टीन बैक संपादन टेबलें और एकमेड पिकसाइन उपकरण भी है।

6.16.14. मद्रास में कार्पोरेशन के वीडियो केन्द्र में विश्वविख्यात बैंक सिटेल मार्क-III और संबंधित निम्न व उच्च बैंड के यू-मैटिक वीसीआर उपलब्ध हैं, जो उच्च श्रेणी की फिल्म हस्तांतरण

सुविधाएं प्रदान करते हैं। 120 स्लेव वीसीआर वाले पूर्णतया-सज्जित जटिल डुप्लीकेशन सुविधाओं से बढ़िया किस्म के वीडियो कैसेट तैयार होते हैं। इस केंद्र में 16 मिमी निर्माण सुविधाओं के अतिरिक्त 33 मिमी का एरी बी एल III कैमरा और 35 मिमी निर्माण सुविधाएं भी उपलब्ध हैं। इसमें वीडियो और टेलीविजन कार्यक्रम निर्माण/निर्माणोत्तर क्षमताएं भी हैं। यह केन्द्र फिल्म निर्माताओं को विदेशों में उनकी फिल्मों को बेचने के यू-मैटिक कैसेटों के जरिए सुविधाएं उपलब्ध कराता है।

6.16.15. तीन करोड़ 42 लाख रुपये की मूल निधि से कार्पोरेशन द्वारा स्थापित भारतीय सिने-कलाकार कल्याण कोष द्वारा बीते कल के जरूरतमंद सिने-कलाकारों को पेंशन तथा अन्य सुविधाएं दी जाती हैं। सिने कलाकारों को पेंशन तथा अन्य सुविधाओं के जरिए 13,72,500 रुपये की राशि वितरित की जा चुकी है। नवम्बर, 1994 तक इस कोष से 311 सिने कलाकारों को विभिन्न रूपों में सहायता मिल रही थी।

केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड

6.17.1. भारत में सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए फिल्मों को मंजूरी देने के उद्देश्य से सरकार ने सिनेमेटोग्राफ अधिनियम, 1952 के अंतर्गत केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड स्थापित किया। इसमें अध्यक्ष के अलावा 25 अन्य गैर-सरकारी सदस्य होते हैं। बोर्ड का मुख्यालय बम्बई में है तथा बंगलौर, बम्बई, कलकत्ता, कटक, गुवाहाटी, हैदराबाद, मद्रास, नई दिल्ली और तिरूअनंतपुरम में 9 क्षेत्रीय कार्यालय हैं। गुवाहाटी के कार्यालय ने अभी फिल्म प्रमाणन का काम शुरू नहीं किया है। फिल्मों के अवलोकन में क्षेत्रीय कार्यालयों की समाज के विभिन्न वर्गों से चुने विख्यात व्यक्तियों की एक समिति मदद करती है। एक प्रतिष्ठित फिल्म निर्माता श्री शक्ति सामंत बोर्ड के अध्यक्ष हैं।

6.17.2. वर्ष 194 के दौरान 754 भारतीय फीचर फिल्में प्रमाणित की गई। इस फिल्मों का क्षेत्रवार व भाषा-वार ब्यौरा परिशिष्ट में दिया गया है। प्रमाणित 754 फिल्मों में से हिन्दी की 155 फिल्में थीं। बंगलौर, हैदराबाद, मद्रास और तिरूअनंतपुरम के चार दक्षिणी क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा 499 फिल्मों का प्रमाणीकरण किया गया।

6.17.3. वर्ष 1994 के दौरान प्रमाणीकृत 754 भारतीय फीचर फिल्मों में से 534 को "यू" प्रमाण पत्र (अप्रतिबंधित सार्वजनिक प्रदर्शन) 70.82%, 91 को "यू ए" प्रमाण पत्र (12 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए अभिभावकों की देखरेख में) (12.07%) और 129 को "ए" प्रमाण पत्र (केवल वयस्कों के लिए प्रदर्शन) 17.11% दिए गए। 1994 में प्रमाणीकृत 177 विदेशी फिल्मों में से 26 को "यू" प्रमाणपत्र (14.69%), 21 को "यू ए" 11.86%) और 130 को "ए" प्रमाण पत्र (73. 45%) प्रदान किए गए।

6.17.4. वर्ष 1994 में 22 भारतीय और 20 विदेशी फीचर फिल्मों को (1993 के ये आंकड़े क्रमशः 7 और 16 थे) प्रमाणपत्र नहीं दिए गए, क्योंकि ये फिल्म प्रमाणीकरण वैधानिक दिशानिर्देशों में से एक या एकाधिक का उल्लंघन करती थी। इनमें से 16 फिल्मों को (12 भारतीय और 4 विदेशी) को संशोधित रूप में प्रस्तुत किए जाने पर बोर्ड द्वारा बाद में प्रमाणपत्र प्रदान कर दिए गए। इसी प्रकार 2 भारतीय फीचर फिल्मों को फिल्म प्रमाणन अपीली न्यायाधिकरण द्वारा प्रमाणपत्र दिए गए।

6.17.5. 1994 के दौरान बोर्ड ने 900 भारतीय लघु चित्रों, 166 विदेशी लघु चित्रों और 875 वीडियो फिल्मों का प्रमाणीकरण किया।

6.17.6. वर्ष के दौरान भारतीय फिल्मों में विशेषकर फिल्मी गीतों में नग्नता, अश्लीलता और हिंसा, का मामला संसद में विचार-विमर्श और वाद-विवाद का मुद्दा रहा है। इसके बारे में समाचारपत्रों में भी काफी कुछ लिखा गया है। इस बीमारी का इलाज करने के सुझाव प्राप्त करने के लिए सूचना और प्रसारण मंत्री ने 11 मई 1994 को एक बैठक बुलायी। महिला सांसदों, मंत्रालय की संसदीय सलाहकार समिति के सदस्यों, राष्ट्रीय महिला आयोग के सदस्यों और फिल्म उद्योग व केबल व्यवसाय

के प्रतिनिधियों को इस बैठक में आमंत्रित किया गया। इस बैठक की प्रतिक्रिया के अनुरूप फिल्मों के प्रमाणीकरण से भी पूर्व फिल्म से कुछ दृश्यों को हटाने के लिए प्रमाणीकरण करने, बोर्ड और इसकी सलाहकार पैनल में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ाने जैसे उपाय किए गए।

6.17.7. सलाहकार पैनलों और अन्य अधिकारियों के लाभार्थ विभिन्न क्षेत्रीय केन्द्रों पर कार्यशालाएं आयोजित की गई। इन कार्यशालाओं में प्रमाणीकृत फिल्मों से काटे गए दृश्यों का प्रदर्शन किया गया तथा उन पर सदस्यों के सुझाव मांगे गए। इन में कुछेक कार्यशालाओं में दूसरे केन्द्रों द्वारा फिल्मों में की गई काट-छांट पर विचार विमर्श किया गया ताकि दिशा-निर्देशों को लागू करने में यथा-संभव एकरूपता लाई जा सके।

6.17.8. केन्द्रीय फिल्म प्रमाणीकरण बोर्ड ने भारतीय फीचर फिल्म के प्रत्येक आवेदक से 'सेस फी' की वसूली जारी रखी।

6.17.9. नई आयात नीति के अंतर्गत विदेशी फिल्मों के आयात के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र देने का काम बोर्ड के पास ही रहा। वर्ष 1994 के दौरान अनापत्ति प्रमाण पत्रों के लिए कुल मिलाकर 342 आवेदन प्राप्त हुए तथा 328 अनापत्ति प्रमाणपत्र जारी किए गए। जांच शुल्क के रूप में 17.05 लाख रुपये की आमदनी हुई।

भारत की फिल्म संस्था महासंघ

6.18. देश में फिल्म संस्थाओं के शीर्षस्थ निकाय, फिल्म संस्था महासंघ को यह मंत्रालय अनुदान सहायता देता है ताकि सिनेमा के क्षेत्र में दर्शकों की अभिरूचि विकसित की जा सके और फिल्मों के प्रति जागरूकता पैदा हो। फिल्म संस्कृति विकसित करना इन फिल्म संस्थाओं का ध्येय है। फिल्म संस्थाओं को अनुदान सहायता देने के लिए 1994-95 के लिए 3 लाख रुपये का बजट प्रावधान है तथा चालू वित्त वर्ष की समाप्ति से पूर्व इसे एकमुश्त जारी किया जाएगा।

पत्र सूचना कार्यालय

7.1.1. पत्र सूचना कार्यालय सरकारी नीतियों, कार्यक्रमों और उपलब्धियों के बारे में जानकारी देने वाला प्रमुख संगठन है। यह अपने मुख्यालय और 39 क्षेत्रीय/शाखा कार्यालयों द्वारा मुद्रित, श्रव्य, दृश्य और इलैक्ट्रानिक--इन सभी सूचना माध्यमों को जानकारी देता है (देखिये परिशिष्ट-IX)। यह सरकार और सूचना माध्यमों के बीच सम्पर्क स्थापित करता है।

7.1.2. पत्र सूचना कार्यालय के कर्मचारी, मंत्रालयों/विभागों से सम्बद्ध रह कर महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सूचना माध्यमों को जानकारी देना और अपने से सम्बद्ध मंत्रालयों को प्रतिक्रियाओं से सूचित करना इन कर्मचारियों का महत्वपूर्ण कार्य है।

7.1.3. रिपोर्ट की अवधि के दौरान पत्र सूचना कार्यालय ने अपने मुख्यालय और क्षेत्रीय/शाखा कार्यालयों के द्वारा 38,500 से अधिक विज्ञप्तियां विभिन्न भाषाओं में सूचना माध्यमों के लिए जारी कीं। सरकारी सूत्रों से सूचना पाने का काम, पत्रकारों के लिए इन्हें आसान बनाने के वास्ते यह कार्यालय, केन्द्रीय पत्रकार मान्यता समिति की सिफारिशों के अनुसार पत्रकारों को मान्यता प्रदान करता है। इस समय कुल मिलाकर 1,235 पत्रकार, कैमरामैन और तकनीकी कर्मचारी पत्र सूचना कार्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त हैं।

वर्ष की उपलब्धियां

7.2.1. आर्थिक उदारीकरण और नये आर्थिक उपायों के बारे में सरकार द्वारा उठाये गये विभिन्न साहसिक कदमों और इनकी सफलताओं का समाचार पत्रों, रेडियो और टेलीविजन आदि के द्वारा व्यापक प्रचार करने के लिए पत्र सूचना कार्यालय वर्ष भर प्रयत्न करता रहा। विश्व व्यापार संगठन की स्थापना और भारत सरकार द्वारा 9 दिसम्बर, 1994 को विश्व व्यापार संगठन समझौते की पुष्टि कर देने के बारे में केन्द्रीय वाणिज्य मंत्री के बयान को समाचार पत्रों तथा रेडियो/टेलीविजन के द्वारा व्यापक रूप से प्रचारित किया गया। वर्ष की एक और उपलब्धि थी--1992-97 की आयात-निर्यात नीति में किये गये संशोधनों का व्यापक प्रचार-प्रसार। नीति सम्बन्धी जिन मुख्य विषयों का प्रचार किया गया उनमें निम्नलिखित भी थे--बीमा क्षेत्र में सुधारों के बारे में मल्होत्रा समिति की रिपोर्ट; मुद्रा नीति और तदर्थ ट्रैजरी बिलों (राजकोष पत्रों) के समझौते के बारे में भारतीय रिजर्व बैंक की घोषणाएं; सिक्योरिटी एंड एक्सचेंज बोर्ड आफ इंडिया के नियम और विनियम ; प्रत्यक्ष और परोक्ष करों में सुधार ; पूंजीनिवेश से सम्बद्ध निर्देशों में संशोधन; फ्रांस, जर्मनी और जापान आदि देशों के साथ वित्तीय समझौते ; सिंगापुर, चीन, जर्मनी और मंगोलिया आदि विभिन्न देशों के साथ दुहरा कर वसूल न करने के समझौते ; आर्थिक सर्वेक्षण ; केन्द्रीय आम बजट और आर्थिक सम्पादक सम्मेलन/लेखा कार्यालय महानियंत्रकों तथा भारत के महालेखा-नियंत्रक और परीक्षक एवं मादक पदार्थ नियंत्रण कार्यालय के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भी पत्र सूचना कार्यालय ने सहयोग दिया।

7.2.2. व्यापार और तटकर से सम्बद्ध आम (गैट) समझौते से देश को होने वाले लाभों और इस समझौते के बारे में भ्रांतियां दूर करने के बारे में पत्र सूचना कार्यालय ने व्यापक प्रचार किया। इस बारे में आयोजित जिन बैठकों में केन्द्रीय कृषि मंत्री शामिल हुए, उनका विवरण समाचार पत्रों, रेडियो और टेलीविजन द्वारा प्रचारित कराया गया। देशी-विदेशी प्रचार संगठनों के प्रतिनिधियों के साथ केन्द्रीय कृषि मंत्री के साक्षात्कारों का आयोजन किया गया। इन विचार-विनिमयों में व्यापार और तटकर से सम्बद्ध (आम) समझौते के विभिन्न पहलू स्पष्ट किये गये। इस बारे में प्रादेशिक समाचार पत्रों के पत्रकारों को सूचनाएं दी गई। व्यापार और तटकर से सम्बद्ध आम समझौते की विभिन्न व्यवस्थाओं,

विभिन्न क्षेत्रों में इनके प्रभावों और उरुग्वे-वार्ता के बाद उठाये गये कदमों के बारे में ताजा जानकारी समाचार पत्रों, रेडियो और टेलीविजन को दी गई।

7.2.3. मार्च, 1994 में आयोजित जी-15 शिखर सम्मेलन के अवसर पर पत्र सूचना कार्यालय ने विज्ञान भवन में सूचना माध्यम केन्द्र बनाया। 5 से 13 अप्रैल, 1994 तक आयोजित एशिया और प्रशान्त महासागर के लिए आर्थिक एवं सामाजिक आयोग के 50वें वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर भी पत्र सूचना कार्यालय ने सूचना माध्यम केन्द्र स्थापित किया।

7.2.4. नीति घोषित करने के बाद विदेशी पूंजी निवेश की मात्रा निरंतर बढ़ाते जाने के प्रस्तावों और इनका अनुमोदन करने के बारे में समय-समय पर पत्रकारों को जानकारी दी जाती रही और विज्ञप्तियां प्रकाशित की जाती रहीं। इसी प्रकार घरेलू पूंजी निवेश के बारे में औद्योगिक उद्यमवृत्ति ज्ञापकों के रूप में सूचनाएं प्रचारित की गईं। शिक्षित बेरोजगारों के लिए प्रधानमंत्री की रोजगार योजना और खादी ग्रामोद्योगों के बारे में कार्य योजना के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया। कश्मीर में उपद्रवी मनोवृत्ति समाप्त करने और शान्ति तथा सद्‌भाव रखने के लिए सरकार के प्रयत्नों का व्यापक प्रचार किया गया।

7.2.5. भारतीय शिफान स्कर्ट के मामले पर देश-विदेश के प्रचार माध्यमों ने बहुत ध्यान दिया जिसके कारण भारत में बने वस्त्रों के निर्यात पर असर पड़ा। इस बारे में भ्रम दूर करने के लिए और भारत का दृष्टिकोण स्पष्ट करने के लिए दूरदर्शन, ए.एन.आई;, बी.आई.टी.वी. और रायटर्स के साथ विशेष कार्यक्रम आयोजित किये गये। भारतीय कपड़े का निर्यात बढ़ने के बारे में भी समाचार पत्रों, रेडियो और टेलीविजन के द्वारा समाचार दिये गये।

7.2.6. सितम्बर, 1994 में गुजरात और महाराष्ट्र के कुछ इलाकों में अचानक प्लेग फैल जाने से उत्पन्न स्थिति से निपटने के लिए स्वास्थ्य और परिवार, कल्याण मंत्रालय द्वारा किये प्रयत्नों की और प्लेग से प्रभावित क्षेत्रों में लोगों की चिकित्सा आदि करने के प्रबन्धों की पत्र सूचना कार्यालय ने जानकारी दी। संवाददाता सम्मेलनों में प्रतिदिन सूचनाएं देकर प्लेग की स्थिति के बारे में सही जानकारी दी जाती रही। देश-विदेश के अखबारों आदि में प्लेग के बारे में बढ़ा-चढ़ाकर प्रकाशित किये गये समाचारों का खंडन करने के लिए भी निरंतर प्रयत्न किये गये। राजस्थान और मणिपुर के कुछ भागों में मलेरिया फैलने पर भी इसी प्रकार के कदम उठाये गये। एड्स नियंत्रण, अंधापन और कुष्ठ रोग की रोकथाम तथा रक्त और दृष्टि दान इत्यादि विभिन्न स्वास्थ्य देख-रेख कार्यक्रमों का भी प्रचार किया गया।

7.2.7. फिल्मों में हिंसा और यौनाचार का बहुत अधिक प्रदर्शन रोकने, अन्तरिक्ष रेडियो सेवा शुरू करने, रेडियो पेजिंग सेवा शुरू होने, एफ.एम.चैनलों पर गैर-सरकारी निर्माताओं को समय देने, दूरदर्शन का प्रसारण और अधिक क्षेत्रों में बढ़ाने के बारे में समाचार पत्रों, रेडियो, टेलीविजन तथा प्रचार के अन्य माध्यमों द्वारा प्रचार किया गया। इसके अतिरिक्त पत्र सूचना कार्यालय ने बम्बई में आयोजित वृत्त, लघु और कार्टून फिल्मों के तृतीय अंतर्राष्ट्रीय समारोह का व्यापक प्रचार करने के लिए सूचना माध्यम केन्द्र स्थापित किया।

7.2.8. भूतल परिवहन मंत्रालय के इस निर्णय की समाचार पत्रों, रेडियो और टेलीविजन आदि पर जानकारी दी गई कि भारत के जहाजरानी उद्योग, प्रमुख बन्दरगाहों, राष्ट्रीय जलमार्गों, राष्ट्रीय मुख्य मार्गों, सड़क परिवहन तथा देशीय नौ-परिवहन में देशी और विदेशी कम्पनियां बनाने, चलाने और सौंपने के आधार पर भाग ले सकेंगी।

7.2.9. रेल मंत्रालय से सम्बद्ध पत्र सूचना कार्यालय की प्रचार यूनिट ने रेलवे के जिन कार्यक्रमों का प्रचार किया उनमें निम्नलिखित भी शामिल थे--निर्यात संवर्धन और गैर-परम्परागत माल की ढुलाई के लिए मल्टी मॉडल व्यवस्था का विस्तार, आय के अतिरिक्त साधन जुटाकर रेलों को आत्म निर्भर बनाने के लिए भूमि भवनों का विकास और निर्माण, संसाधनों का अधिकतम उपयोग करने के लिए

कर्मचारियों की उत्पादन क्षमता बढ़ाना तथा सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग करना, 'अपना वैगन लेने की' योजना, छोटी लाइन को बड़ी लाइन में बदलना, बिजली से रेलें चलाना, सवारी गाड़ी और मालगाड़ी के डिब्बे लेना तथा नवम्बर, 1994 में बनाने, पट्टे पर चलाने और सौंप देने की शुरू की गई। योजना के अधीन 4,390 करोड़ लागत की परियोजनाएं संपन्न करना, अतिरिक्त आय के लिए बेकार सामान (स्क्रैप) की बिक्री और अन्य आर्थिक उपाय।

7.2.10. निम्नलिखित कार्यक्रमों का भी प्रचार किया गया--

संशोधित औषधि नीति की घोषणा, रासायनिक खाद क्षेत्र में संयुक्त उद्यम, खान क्षेत्रों में अन्वेषण और विकास के लिए विदेशी पूंजी निवेश के बारे में अंतर्राष्ट्रीय गोलमेज सम्मेलन, यमुना जल समझौता, सरदार सरोवर योजना पर अमल, राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना का उद्‌घाटन, संयुक्त राष्ट्र और पंचायती राज के पचासवें वार्षिक समारोह, नगरपालिका (74वें संविधान संशोधन) कानून पर अमल, चीनी और खाद्य तेलों का आयात करने का सरकारी फैसला, प्याज के निर्यात पर प्रतिबंध, जिला प्राइमरी शिक्षा कार्यक्रम, हिन्दी भाषी क्षेत्रों में राष्ट्रीय साक्षरता कार्यक्रम, गांधी शांति पुरस्कार की स्थापना, महात्मा गांधी की 125वीं जयन्ती समारोह, जलियांवाला बाग के शहीदों की 75वीं पुण्यतिथि।

पत्र सूचना कार्यालय ने विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में प्रधानमंत्री के भाषण तथा स्वाधीनता दिवस समारोह का भाषण समुचित प्रस्तावनाओं और संक्षिप्त रूपों के साथ प्रकाशित किये।

7.2.11. दिसम्बर 1994 में हुए राज्य विधानसभाओं के चुनाव परिणाम बताने के लिए पत्र सूचना कार्यालय में चुनाव कक्ष बनाया गया। इस वर्ष चुनाव कक्ष ने ग्राफिक्स और अलग-अलग चुनाव क्षेत्रों के नक्शे आदि नई बातें भी पत्रकारों के लिए तैयार की गई सूचना पुस्तिकाओं में शामिल कीं ताकि ये पुस्तिकाएं और अधिक उपयोगी सिद्ध हों।

फीड बैक और विशेष सेवाएं

7.3. पत्र सूचना कार्यालय के मुख्यालय और इसके क्षेत्रीय/शाखा कार्यालयों ने विभिन्न भाषाओं में 2,800 से भी अधिक विशेष लेख जारी किए। ये लेख फीचर, सचित्र फीचर, तथा विविध विषयों पर संदर्भ-सामग्री के रूप में प्रकाशित किये गये। ये लेख सद्‌भावना दिवस, कौमी एकता सप्ताह, सरकारी कार्यक्रमों की महत्वपूर्ण बातों, स्वाधीनता दिवस, गणतंत्र दिवस तथा अन्य महत्वपूर्ण विषयों से सम्बद्ध थे। पत्र सूचना कार्यालय ने महत्वपूर्ण मामलों से सम्बद्ध 167 विशेष सार-संक्षेप भी प्रकाशित किये और भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों को अखबारों में प्रकाशित समाचारों की कतरनें भेजीं।

फोटो सेवा

7.4. पत्र सूचना कार्यालय ने अखबारों और पत्र-पत्रिकाओं आदि को 1,065 समाचार फोटो के 1,88,092 फोटो चित्र दिये। फोटो संग्रहालय के एलबमों में 3,260 नये फोटो बढ़ाये गये और छोटे तथा मध्यम समाचार पत्रों को 1,430 एबोनाइड ब्लाक दिये गये।

अध्याय-8

भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक

8.1.1. भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक सूचना और प्रसारण मंत्रालय का सम्बद्ध कार्यालय है। अपने सर्वाधिक कामों के सिलसिले मे यह कार्यालय समाचार पत्रों के लिए उपलब्ध नामों का पता लगाता है तथा इन नामों का नियमन करता है। अखबारों का पंजीकरण और उनकी प्रसार संख्या की जांच करता है तथा 'प्रेस इन इंडिया' नाम से वार्षिक रिपोर्ट प्रकाशित करता है जिसमें समाचार पत्रों के बारे में विस्तृत सूचनाएं होती हैं। इन सांविधिक कामों के अलावा यह कार्यालय समाचार पत्रों/पत्रिकाओं को सरकार की नीति के अनुसार अखबारी कागज खरीदने/आयात करने के लिए हकदारी के प्रमाण-पत्र देता है, छपाई से सम्बद्ध सामान और मशीनें विदेशों से मंगाने के लिए अखबारों को आयात की अनिवार्यता के प्रमाण-पत्र जारी करता है।

8.1.2. अप्रैल से नवम्बर, 1994 तक की अवधि में इस कार्यालय ने प्रकाशकों से प्राप्त विभिन्न नामों के बारे में 14,131 आवेदनों पर विचार किया। इनमें से 8,694 नाम स्वीकृत किये गये और बाकी नाम उपलब्ध नहीं पाये गये। इसी दौरान 1,487 समाचार पत्रों/पत्रिकाओं को पंजीकरण प्रमाण-पत्र दिये गये और 1,012 अखबारों/पत्रिकाओं की प्रसार संख्या के दावों की जांच की गई। आशा है कि वित्त वर्ष की शेष अवधि में 600 अन्य अखबारों/पत्रिकाओं के दावों की जांच कर ली जायेगी।

8.1.3. वार्षिक रिपोर्ट 'प्रेस इन इंडिया--1993' छापकर बिक्री के लिये जारी की गई। इसमें समाचार पत्रों, पत्रिकाओं आदि के बारे में विस्तृत जानकारी होती है। 'प्रेस इन इंडिया—1994' यह वर्ष के समाप्त होने से पहले बिक्री के लिए प्रकाशित हो जाने की आशा है।

प्रेस और पुस्तक पंजीकरण अधिनियम की समीक्षा

8.2. प्रेस और पुस्तक पंजीकरण अधिनियम, 1867 की समीक्षा और भारत के समाचार पत्र पंजीयक के कार्यालय की कार्य प्रणाली को व्यवस्थित करने के उद्देश्य से, मंत्रालय ने 12.8.1993 को मुख्य सूचना अधिकारी की अध्यक्षता में एक विशेष समीक्षा-समिति का गठन किया। समीक्षा-समिति ने समाचार-पत्र संगठनों, श्रमजीवी पत्रकारों आदि के साथ अनेक बैठकें कीं और सरकार को अपनी रिपोर्ट पेश कर दी है। रिपोर्ट की समीक्षा की जा रही है।

अखबारी कागज

8.3. 1994-95 की अखबारी कागज आयात नीति के अनुसार 27 अप्रैल, 1994 को हकदारी के प्रमाण-पत्र जारी करने के बारे में दिशा-निर्देश जारी कर दिये गये थे ताकि अखबार अपनी जरूरत के अनुसार अखबारी कागज विदेशों से मंगा सकें और देशी अखबारी कागज खरीद सकें। जो अखबार वर्ष में 200 मीट्रिक टन से अधिक स्टैंडर्ड अखबारी कागज के हकदार हैं, उन्हें 'ओपन एंटाइटलमेंट सर्टिफिकेट' इस शर्त पर दिये जा रहे हैं कि वे दो टन देशी अखबारी कागज/कागज मिलों से खरीदने पर एक टन स्टैंडर्ड अखबारी कागज विदेशों से मंगा सकेंगे। पत्रिकाओं की बहुरंगी छपाई की जरूरतें पूरी करने के लिये ग्लेज्ड (चिकना) अखबारी कागज आयात करने के प्रमाण-पत्र बे-रोक-टोक दिये जा रहे हैं। इनमें कागज की मात्रा पर भी कोई पाबन्दी नहीं लगाई गई है। जिन अखबारों की वार्षिक हकदारी 200 मीट्रिक टन तक है, उन्हें भी अपनी सारी जरूरत का अखबारी कागज आयात करने की अनुमति दी जा रही है। भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक इन अखबारों को ऐसे हकदारी

प्रमाण- पत्र देते हैं जिनमें प्रत्येक समाचार पत्र को एक या अधिक किस्तों में निश्चित मात्रा में अखबारी कागज आयात करने की अनुमति दी जाती है।

छपाई की मशीनें

8.4. एक अप्रैल, 1994 से 30 नवम्बर, 1994 तक 59 अखबारों के छपाई की मशीनें और इनसे सम्बद्ध उपकरण आयात करने के आवेदन स्वीकृत किये गये। आशा है कि वर्ष की शेष अवधि में 10 और आवेदनों पर कोई निर्णय कर लिया जायेगा।

अध्याय-9

प्रकाशन विभाग

9.1. प्रकाशन विभाग सरकारी क्षेत्र का सबसे बड़ा प्रकाशन संगठन है। ब्यूरो आफ पब्लिक इन्फोर्मेशन की एक शाखा के रूप में इसे 1941 में स्थापित किया गया था। 1944 में इसने अपना वर्तमान स्वरूप ग्रहण कर लिया। प्रकाशन विभाग हिन्दी, अंग्रेजी और भारत की अन्य प्रमुख भाषाओं में विभिन्न पुस्तकें आदि प्रकाशित कर हमारे देश की विविधतापूर्ण संस्कृति के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी देता है।

पुस्तकें

9.2.1. 1994-95 के दौरान अंग्रेजी और हिन्दी की 78 और विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं की 10 पुस्तकें प्रकाशित की गईं। महत्वपूर्ण ग्रन्थों में *'सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय'* के 94,95,96,97 और 100वें खंड (98 और 99वें खंड प्रकाशित हो चुके हैं) प्रकाशित किये गये और 21 खंडों का पुनर्मुद्रण किया गया। इस वर्ष गांधीजी से सम्बद्ध जो महत्वपूर्ण पुस्तकें पुनः छापी गई, उनमें से कुछ के नाम हैं :- *'महात्मा गांधी—हिज लाइफ इन पिक्चर्स', 'गांधी एलबम', 'गांधियन वैल्यूज एंड ट्वैन्टीएथ सैंचुरी चैलेंजेज़'* इत्यादि। इनके अतिरिक्त एक अक्तूबर, 1994 के दिन महात्मा गांधी की सूक्तियों की नई पुस्तक प्रकाशित की गई। अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशित पुस्तकों में *'मास मीडिया इन इंडिया 1993'* और *'प्रेस इन इंडिया—1994'* उल्लेखनीय हैं।

सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय

अंग्रेजी और हिन्दी में सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय का प्रकाशन इस विभाग की महत्वपूर्ण परियोजना है। यह कार्य 1956 में शुरू किया गया था और इस वर्ष गांधीजी की 125वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर इस वाङ्मय का 100वां और अन्तिम खंड अंग्रेजी में प्रकाशित कर दिया गया। पहली अक्तूबर, 1994 के दिन भारत के प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिम्ह राव ने 100वें खंड का लोकार्पण भव्य समारोह में किया। इस अवसर पर यह खंड श्रीमती आभाबेन गांधी को भेंट किया गया। विभाग को आशा है कि आगामी वित्त वर्ष में हिन्दी में यह परियोजना पूरी हो जायेगी।

पत्रिकाएं

9.4.1. प्रकाशन विभाग हिन्दी, अंग्रेजी और अन्य प्रादेशिक भाषाओं में अनेक पत्रिकाएं प्रकाशित करता है जिनमें देश के विकास से सम्बद्ध विभिन्न गतिविधियों की जानकारी होती है।

9.4.2. ***योजना*** : प्रकाशन विभाग की प्रमुख पत्रिका *'योजना'* है जिसमें आर्थिक विकास के विभिन्न पहलुओं और समस्याओं से सम्बद्ध सामग्री होती है। यह पत्रिका 13 भाषाओं में प्रकाशित की जाती है—(अंग्रेजी, हिन्दी, तमिल, तेलुगू, असमिया, मलयालम, कन्नड़, उड़िया, गुजराती, मराठी, पंजाबी, बंगला और उर्दू)। इस वर्ष इस पत्रिका के दो विशेषांक प्रकाशित किये गये। 92 पृष्ठों के स्वाधीनता दिवस विशेषांक में सरकार के नये आर्थिक कदमों और उदारीकरण के बारे में प्रमुख अर्थशास्त्रियों, उद्योगपतियों, समाज-वैज्ञानिकों और पत्रकारों के लेख प्रकाशित किये गये। गणतंत्र दिवस विशेषांक में 'विकास के लिए जल' विषय पर विवेचन प्रस्तुत किया गया। *'योजना'* की एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि थी— श्री वसन्त साठे की पुस्तक 'टैक्स विदआउट फीअर्स' का क्रमिक प्रकाशन। राष्ट्रपिता की 125वीं जन्म जयन्ती और आचार्य विनोबा भावे की जन्मशती समारोहों के अवसरों पर *'योजना'* में विशेष लेख प्रकाशित किये गये। राजीव गांधी की 50वीं जयन्ती के अवसर पर योजना में प्रौद्योगिकी मिशन्स,

गंगा कार्य योजना और पंचायती राज जैसे सामाजिक-आर्थिक महत्व के विषयों से सम्बद्ध लेख प्रकाशित किये गये।

9.4.3. *कुरुक्षेत्र* : ग्रामीण विकास से सम्बद्ध पत्रिका *'कुरुक्षेत्र'* ग्रामीण विकास मंत्रालय की ओर से हिन्दी और अंग्रेजी में प्रकाशित की जाती है। इस वर्ष इस पत्रिका में 'प्रचार माध्यमों में महिलाएं,' 'पंचायती राज', 'भूमि सुधार' और 'जवाहर रोजगार योजना' आदि महत्वपूर्ण विषयों पर लेख प्रकाशित किये गये। जून 1994 के अंक में 'पंचायतों में नारी युग का प्रारम्भ' विषय से सम्बद्ध लेख थे तथा अक्तूबर अंक में ग्रामीण भारत के विकास के लिए महात्मा गांधी और उनकी विचारधारा से सम्बद्ध लेख थे।

9.4.4. *बाल भारती* : यह बच्चों की लोकप्रिय हिन्दी पत्रिका है। खेलों के प्रति बच्चों का स्वाभाविक आकर्षण होता है। इसीलिए *'बाल भारती'* के जून 1994 के अंक में विश्व कप फुटबाल प्रतियोगिता के बारे में और अक्तूबर 1994 के अंक में एशियाई खेलों तथा महात्मा गांधी के बारे में विशेष लेख प्रकाशित किये गये। इस पत्रिका में बच्चों के योगदान को बढ़ावा देने के लिए जनवरी 1995 से नया स्तम्भ 'नई कलम से' शुरू किया गया है। पत्रिका ने एक प्रतियोगिता भी प्रारम्भ की है जिसमें बच्चों से पूछा गया है कि उन्हें कौन-से अधिकार मिलने चाहियें, इस बारे में वे क्या सोचते हैं। इस प्रतियोगिता के लिए प्राप्त लेखों के आधार पर अप्रैल-मई 1995 में *'बाल भारती'* का 'बाल अधिकार' विशेषांक प्रकाशित करने का विचार है।

9.4.5. *आजकल* : साहित्यिक मासिक पत्रिका *'आजकल'* हिन्दी और उर्दू में प्रकाशित की जाती है। इस वर्ष की महत्वपूर्ण घटना *'आजकल'* के हिन्दी संस्करण का स्वर्ण जयन्ती समारोह था। इस अवसर पर प्रकाशन विभाग ने *'आजकल'* में पिछले पचास वर्षों में प्रकाशित लेखों, कहानियों और कविताओं को चुनकर विशेषांक प्रकाशित किया। हिन्दी साहित्य के चालीस प्रमुख साहित्यकारों के चित्रों का एलबम भी प्रकाशित किया गया। 21 जुलाई, 1994 के दिन स्वर्ण जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया जिसमें हिन्दी के प्रमुख साहित्यकार श्री विष्णु प्रभाकर मुख्य अतिथि थे। इस वर्ष हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक डा. राम विलास शर्मा पर तथा 25वें अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह और महात्मा गांधी की 125वीं जन्म जयन्ती के अवसरों पर विशेषांक प्रकाशित किये गये। इसी प्रकार *'आजकल'* के उर्दू संस्करण ने अख्तरुल ईमान, जज्बी, बलवंत सिंह और जोश मलीहाबादी सहित प्रमुख लेखकों और शायरों के बारे में कई विशेषांक प्रकाशित किये।

रोजगार समाचार

9.5. प्रकाशन विभाग का रोजगार समाचार एकक अंग्रेजी में *'एंप्लायमेंट न्यूज'* और हिन्दी व उर्दू में 'रोजगार समाचार' हर सप्ताह प्रकाशित करता है। इस पत्र में केन्द्र और राज्य सरकारों के विभिन्न कार्यालयों में रिक्त स्थानों की सूचनाएं प्रकाशित की जाती हैं। विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं और साक्षात्कारों की तैयारी करने वाले उम्मीदवारों के लिए मार्गदर्शक सामग्री भी प्रकाशित की जाती है। 'अपनी हिन्दी सुधारें' स्तम्भ की लोकप्रियता को देखते हुए इस पत्रिका में जनवरी 1993 से 'अपनी हिन्दी संवारें' स्तम्भ भी शुरू किया गया। 1994-95 के दौरान इस पत्रिका की प्रसार संख्या पांच लाख से भी अधिक हो गई।

विपणन

9.6. प्रकाशन विभाग अपनी पुस्तकों और पत्रिकाओं की बिक्री बम्बई, मद्रास, लखनऊ, कलकत्ता, हैदराबाद, पटना, तिरुअनन्तपुरम और नई दिल्ली में स्थापित अपने बिक्री केन्द्रों के द्वारा करता है। इसके अलावा अनेक एजेंट और पुस्तक विक्रेता भी प्रकाशन विभाग की पुस्तकें बेचते हैं। अपने प्रकाशनों के बारे में जानकारी बढ़ाने के लिए विभाग ने त्रैमासिक सूचना-पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया है।

प्रदर्शनियां

9.7. अपने प्रकाशनों की जानकारी देने और इनकी बिक्री बढ़ाने के लिए प्रकाशन विभाग पुस्तक मेलों में भाग लेता है और बड़े पैमाने पर प्रदर्शनियां लगाता है। इस वर्ष विभाग नवम्बर 1994 के अन्त तक लगभग 60 प्रदर्शनियों/मेलों में शामिल हुआ। नई दिल्ली की 'आल इंडिया फाइन आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स सोसायटी' की गैलरी में 2 से 8 अक्तूबर तक प्रदर्शनी लगाई गई जिसमें 5.30 लाख रुपये की रिकार्ड बिक्री हुई और लगभग एक लाख व्यक्ति यह प्रदर्शनी देखने आये।

राजस्व

9.8. प्रकाशन विभाग ने अप्रैल से नवम्बर 1994 तक पुस्तकों और पत्रिकाओं की बिक्री से कुल मिलाकर लगभग 774 लाख रुपये का राजस्व कमाया। 'रोजगार समाचार' से 652.26 लाख रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ।

अध्याय-10

क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय

10.1.1. क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय, आधारस्तर का संगठन होने के कारण राष्ट्रीय विकास की प्रक्रिया में जानकारी पहुंचाने और सूचित करने की महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। समाज के विभिन्न वर्गों और विशेषकर निर्धन लोगों के लाभ के लिए सरकार द्वारा तैयार विकास की योजनाओं और गतिविधियों में जनता को शामिल करके और जनता के दृष्टिकोण में परिवर्तन करके यह उद्देश्य पूरा किया जा रहा है।

10.1.2. निदेशालय एक अन्तर वैयक्तिक प्रचार इकाई है। यह विकास का संदेश लोगों के घर पर पहुंचाता है। लोगों के साथ व्यक्तिगत रूप से बात करके प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित करने पर बल दिया जाता है। निदेशालय की प्रचार इकाइयां लोगों से देश के विविधतापूर्ण सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवेश के बारे में विचार-विमर्श करती हैं और उन्हें राष्ट्र निर्माण के काम में भाग लेने के लिए प्रेरित करती हैं। अपना संदेश पहुंचाने के लिए क्षेत्र प्रचार इकाइयां अनेक साधन अपनाती हैं। इनमें फिल्म प्रदर्शन, कलाकारों के प्रदर्शन, बातचीत, लिखित समाग्री, कुछ लोगों की आपसी बातचीत, सार्वजनिक सभाएं, विचार-गोष्ठियां और तरह-तरह की प्रतियोगिताएं आदि शामिल हैं। निदेशालय सरकार के विभिन्न कार्यक्रमों और नीतियों तथा इन पर अमल के बारे में जनता की प्रतिक्रिया से सम्बद्ध अधिकारियों को भी सूचित करता है ताकि इनमें आवश्यक सुधार किये जा सकें। इस प्रकार निदेशालय सरकार और जनता के बीच विचारों के आदान-प्रदान के लिए दुहरी श्रृंखला का काम करता है।

संगठन

10.2. क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय का मुख्यालय नई दिल्ली में है। देश के विभिन्न भागों में इसके 22 क्षेत्रीय कार्यालय और 258 क्षेत्र प्रचार इकाइयां हैं। क्षेत्रीय कार्यालयों और क्षेत्र प्रचार इकाइयों की सूची परिशिष्ट में हैं।

गतिविधियां

10.3.1 प्रत्येक क्षेत्र कार्यालय बहुविध प्रचार साधनों से सम्पन्न इकाई है। इसमें मोटरगाड़ी, सिनेमा उपकरण, लाउडस्पीकर, टेप रिकार्डर, ट्रांजिस्टर और जैनेरेटर हैं। जिन इलाकों में बिजली नहीं है वहां जैनेरेटर इस्तेमाल किया जाता है। कुछ इकाइयों को सचल वीडियो प्रोजेक्शन उपकरण भी दे दिये गये हैं। ये इकाइयां अपने-अपने इलाकों में महीने में 12 से 15 दिन तक दौरे पर रहती हैं और प्रचार की गतिविधियों में केन्द्रीय और राज्य सरकारों के विभागों तथा स्वयं-सेवी संगठनों का सहयोग प्राप्त करती हैं।

10.3.2. क्षेत्र प्रचार इकाइयां राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सद्भाव, लोकतंत्र के प्रति आस्था, धर्मनिरपेक्षता, ग्राम विकास, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, एड्स पर नियंत्रण, नशीले पदार्थों का दुरूपयोग, शराब की लत, दहेज-प्रथा और बाल विवाह जैसी सामाजिक कुरीतियां दूर करने के महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मामलों पर प्रचार के विभिन्न साधनों से जनता का ध्यान दिलाती है।

10.3.3. अप्रैल से सितम्बर 1994 तक की अवधि में क्षेत्र प्रचार इकाइयों ने जनता के सभी वर्गों के लिए 24,648 फिल्म प्रदर्शनों, 3,269 गीत और नाटक कार्यक्रमों, 15,987 फोटो प्रदर्शनियों और 26,703 मौखिक संदेश कार्यक्रमों का आयोजन किया।

10.3.4. इन इकाइयों ने गांधी जयन्ती, जवाहरलाल नेहरू, श्रीमती इंदिरा गांधी, श्री लालबहादुर शास्त्री, श्री राजीव गांधी, डा. बी.आर.आम्बेडकर और डा. राधाकृष्णन आदि के जन्म दिवस समारोहों पर

राष्ट्रीय महत्व के संदेशों का प्रचार किया। विश्व स्वास्थ्य दिवस, विश्व पोषाहार दिवस, विश्व जनसंख्या दिवस, विश्व पर्यावरण दिवस, संयुक्त राष्ट्र दिवस, सार्क, बालिका की स्थिति, रोग प्रतिरक्षण दिवस, अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस और विभिन्न त्यौहारों पर भी प्रचार इकाइयों ने राष्ट्रीय महत्व के प्रश्नों और कार्यक्रमों का प्रचार किया।

10.3.5. क्षेत्रीय प्रचार की भूमिका को और अधिक प्रभावशाली बनाने तथा इस पर और अधिक ध्यान देने के उद्देश्य से निदेशालय कार्यशालाएं आयोजित कर रहा है और प्राथमिकता प्राप्त विषयों के प्रचार पर ध्यान दे रहा है। ग्राम विकास, एड्स, गैट समझौता, प्रधानमंत्री की रोजगार योजना, महिला समृद्धि योजना आदि का प्रचार प्रमुख रूप से किया गया।

राष्ट्रीय एकता

10.4.1. क्षेत्र प्रचार इकाइयों ने जिन प्रमुख विषयों का निरंतर प्रचार किया उनमें राष्ट्रीय एकता भी था। संवेदनशील और निर्धारित इलाकों में इस बारे में प्रचार कार्यक्रम आयोजित किये गये। 19 से 25 नवम्बर 1994 तक देशभर में 'कौमी एकता सप्ताह' मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम और प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। राष्ट्रीय एकता और धर्मनिरपेक्षता अपनाने की आवश्यकता पर बल देने के लिए प्रचार इकाइयों ने विशेष कार्यक्रम आयोजित किये। 20 अगस्त को देश के सभी प्रदेशों में 'सद्भावना दिवस' के अवसर पर क्षेत्रीय कार्यक्रम आयोजित किये गये। महात्मा गांधी की 125वीं जयन्ती के अवसर पर देश भर में विशेष प्रचार कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिनमें प्रसिद्ध गांधीवादियों, प्रमुख राजनीतिज्ञों, समाज और छात्र के नेताओं और विद्वानों का सक्रिय योग लिया गया। केरल में गांधी जयन्ती के अवसर पर कोट्टयम, एल्लपी और त्रिचूर में महात्मा गांधी के जीवन और उपदेशों के बारे में विचार गोष्ठियां आयोजित की गईं। एर्णाकुलम इकाई ने सद्भावना यात्रा का आयोजन किया। विभिन्न राज्यों में भी सद्भावना समारोह किये गये।

10.4.2. राजीव गांधी की स्वर्ण जयन्ती और नेहरू जयन्ती के अवसरों पर देश के विभिन्न भागों में फोटो प्रदर्शनियां, निबंध प्रतियोगिताएं और साइकिल रैलियां आयोजित की गईं।

20-सूत्री कार्यक्रम

10.5. क्षेत्र प्रचार इकाइयों ने लोगों का जीवन सुधारने के उद्देश्य से बनाये गये 20-सूत्री कार्यक्रम का संदेश प्रचारित करने के लिए विभिन्न प्रचार माध्यमों के द्वारा तरह-तरह के कार्यक्रमों का आयोजन किया। इन इकाइयों ने केन्द्रीय बजट की अच्छाइयों और बजट से गरीबों, छोटे तथा सीमान्त किसानों और श्रमिकों को होने वाले लाभों पर जनता का ध्यान दिलाया। चीजों के भाव घटाने के लिए किये जा रहे प्रयत्नों का भी प्रचार किया गया।

ग्रामीण विकास

10.6. अप्रैल-मई 1994 के दौरान देश के 13 निर्धारित जिलों में ग्रामीण विकास के बारे में 20 दिन का विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार और आंध्र प्रदेश के 52 विकास खंडों में प्रचार किया गया। प्रचार का यह कार्य छः क्षेत्रों की 51 क्षेत्र प्रचार इकाइयों ने किया। इस कार्यक्रम के दौरान क्षेत्र प्रचार अधिकारियों ने स्थानीय विकास कर्मचारियों के सहयोग से फिल्म शो, सामूहिक विचार-विमर्श, प्रश्नोत्तर आदि कार्यक्रम आयोजित किये ताकि ग्रामीण विकास की राष्ट्रीय योजना के विभिन्न पहलुओं के प्रति जागरूकता उत्पन्न की जा सके। गरीबी मिटाने की मुख्य योजनाओं में जवाहर रोजगार योजना, महिला समृद्धि योजना, प्रधानमंत्री की रोजगार आश्वासन योजना, पंचायती राज, आई.आर.डी.पी., ट्राइसेम, डी.डब्ल्यू.सी.आर.ए. और बुनकरों के लिए विकास योजनाओं आदि का प्रचार किया गया।

कार्यशालाएं

10.7.1. अप्रैल 1994 में सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने ग्राम विकास मंत्रालय के सहयोग से ग्राम विकास संस्थान, हैदराबाद में ग्रामीण विकास कार्यशाला आयोजित की। इसमें महिला और बाल कल्याण विभाग और हथकरधा विकास आयुक्त कार्यालय ने भी भाग लिया। नवम्बर 1994 में दीन दयाल ग्राम विकास संस्थान, लखनऊ में ग्राम विकास अभियान के बारे में एक दिन की अभिविन्यास कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, उड़ीसा, राजस्थान और महाराष्ट्र के क्षेत्र प्रचार निदेशालय के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

10.7.2. सितम्बर 1994 को नई दिल्ली में निदेशालय के प्रादेशिक कार्यालयों के अध्यक्षों की बैठक हुई जिसमें एड्स के खतरे के प्रति जागरूकता बढ़ाने और अन्य प्रमुख विषयों के बारे में विचार कर कार्य योजना को अन्तिम रूप देने पर चर्चा की गई। इस बैठक से पहले पुणे, बंगलौर, शिलांग, चंडीगढ़, ऐजोल, कोहिमा और मद्रास में सात प्रादेशिक कार्यशालाओं का आयोजन किया गया था। सूचना और प्रसारण मंत्रालय के सचिव श्री भास्कर घोष ने इस बैठक का उद्घाटन किया। इस बैठक में और लोगों के अलावा अतिरिक्त सचिव, राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन के परियोजना निदेशक तथा ग्राम विकास मंत्रालय के संयुक्त सचिव ने भी अपने विचार प्रकट किये।

अल्पसंख्यकों का कल्याण

10.8. अल्पसंख्यकों के कल्याण के लिए प्रधानमंत्री के 15-सूत्री कार्यक्रम और इन्हें संस्थागत आर्थिक सहायता तथा कर्ज की सुविधाएं मिलने का प्रचार करने के लिए क्षेत्र प्रचार इकाइयों ने विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये। इन इकाइयों ने अल्पसंख्यकों की दशा सुधारने के लिए केन्द्र और राज्य सरकारों के विभिन्न वायदों और इन्हें सामाजिक न्याय तथा समान अवसर दिलाने के लिए उठाये गये कदमों का प्रचार किया।

शिक्षा

10.9. क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय ने विभिन्न दृश्य और श्रव्य प्रचार माध्यमों के द्वारा साक्षरता और शिक्षा के महत्व का प्रचार जारी रखा। इन कार्यक्रमों में बताया गया कि सामाजिक परिवर्तन और प्रगति करने का सशक्त साधन शिक्षा है। ये कार्यक्रम देश के दूरवर्ती गांवों में आयोजित किये गये ताकि लोगों को साक्षर बनने के लिए प्रेरित किया जा सके।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण

10.10.1. निदेशालय के इस विषय पर फिल्म शो, फोटो प्रदर्शनी, गीत और नाटक कार्यक्रमों, मौखिक सम्पर्क, स्वस्थ शिशु प्रदर्शनियों, मातृ सम्मेलनों, निबंध लेखन तथा अन्य प्रतियोगिताओं और प्रश्नोत्तर सभाओं के द्वारा लगातार गहन प्रचार किया। स्वास्थ्य और चिकित्सा अधिकारियों, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों, युवा क्लबों और अन्य स्वयंसेवी संगठनों के सहयोग से घर-घर जाकर लोगों से सम्पर्क किया गया। दस्त, हैजा, मलेरिया और प्लेग की रोकथाम और इनसे बचाव के लिए प्रचार अभियान, इन रोगों की आशंका वाले इलाकों में चलाये गये। सभी इकाइयों ने निर्धारित क्षेत्रों में अप्रैल में 'विश्व स्वास्थ्य दिवस' और जुलाई में 'विश्व जनसंख्या सप्ताह' के अवसरों पर गहन प्रचार किया। भारत के परिवार नियोजन संगठन की नगालैंड शाखा और स्वास्थ्य सेवा निदेशालय के सहयोग से कोहिमा में 'जनसंख्या और परिवार-सुख का स्रोत' विषय पर गोष्ठी की गई।

10.10.2. कोयंबतूर की प्रचार इकाई ने धीनमपलयम में भारत के परिवार नियोजन संगठन की वेदपत्त परियोजना के सहयोग से *स्वस्थ शिशु प्रदर्शनी* आयोजित की। दिल्ली की प्रचार इकाई ने पल्स पोलियो से रक्षा करने के कार्यक्रम के सिलसिले में आयोजित प्रचार के अनेक साधनों के अभियान में भाग लिया। यह कार्यक्रम 2 अक्तूबर से 4 दिसम्बर 1994 तक राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली

प्रशासन के सहयोग से शुरू किया गया। संयुक्त राष्ट्र बाल सहायता कोष और राज्यों के स्वास्थ्य विभागों के सहयोग से अगस्त 1994 में पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, गुजरात और असम में एक महीने तक दस्तों की बीमारी रोकने का गहन अभियान चलाया गया। गुजरात और महाराष्ट्र में प्लेग फैलने पर क्षेत्र प्रचार इकाइयों ने प्लेग की रोकथाम के विभिन्न उपायों की जानकारी लोगों को देने के लिए तत्परतापूर्वक प्रचार किया। राजस्थान के मलेरिया से प्रभावित इलाकों में प्रचार इकाइयों ने मलेरिया की रोकथाम करने के उपायों का व्यापक प्रचार किया।

नये आर्थिक उपाय

10.11. नई आर्थिक नीति और उदारीकरण के लाभ लोगों को बताने के लिए तथा खाद्यान्नों में आत्मनिर्भरता, नई व्यापार और उद्योग नीति, उपभोक्ता संरक्षण और अन्य अनेक विषयों का प्रचार फिल्म शो, मौखिक संचार और सामूहिक विचार-विनिमय द्वारा वर्षभर किया जाता रहा। 'उपभोक्ता के अधिकार', 'पैट्रोल की बचत' और 'ड्राप दैट काउंट्स' आदि फिल्में शहरी और देहाती इलाकों में दिखाई गई।

गैट समझौता

10.12.1. क्षेत्र प्रचार इकाइयों ने देश के विभिन्न भागों में तरह-तरह के कार्यक्रमों द्वारा गैट समझौते के बारे में विशेष कार्यक्रम आयोजित किये। केरल में पालघाट इकाई ने गैट समझौता और भारतीय अर्थव्यवस्था के बारे में मन्नारघाट में विचार गोष्ठी आयोजित की।

10.12.2. अल्लेपी प्रचार इकाई ने जिले के तीन देहाती इलाकों में 'गैट समझौता और भारत' विषय पर सामूहिक विचार का आयोजन किया। पथनमथित्त जिले के पांच देहाती इलाकों में भी इसी प्रकार के कार्यक्रम किये गये। इस बारे में जगह-जगह फोल्डर बांटे गये। क्षेत्र प्रचार अधिकारियों, गीत और नाटक प्रभाग के कलाकारों तथा नेहरू युवा केन्द्र संगठन के सदस्यों के लिए मद्रास में 6 से 8 अक्तूबर 1994 तक 'गैट से लाभ' विषय पर तीन दिन का अभिविन्यास अभियान आयोजित किया गया। उत्तर प्रदेश में पौढ़ी की प्रचार इकाई ने आधार स्तर पर डंकल प्रस्तावों का प्रचार करने के लिए गोष्ठी आयोजित की। पश्चिम बंगाल में रानाघाट प्रचार इकाई ने नये आर्थिक उपायों और गैट समझौते के लाभों पर लोगों का ध्यान दिलाने के लिए नदिया जिले के एकशिपाड़ा खंड के अधीन धर्मदा ग्राम पंचायत में चार दिन तक गहन प्रचार किया। नागपुर प्रचार इकाई ने केन्द्रीय कर्मचारी शिक्षा बोर्ड में प्रशिक्षण पाने वाले कर्मचारियों और अध्यापकों के लिए गैट समझौते के बारे में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया।

मेलों और समारोहों के अवसरों पर प्रचार

10.13. निदेशालय की प्रचार इकाइयां मेलों और समारोहों में नियमित रूप से शामिल होती हैं ताकि महत्वपूर्ण राष्ट्रीय विषयों का प्रचार एकत्र जनसमूह में किया जा सके। शताब्दी पुराने मेरठ के नौचन्दी मेले पर इस क्षेत्र की प्रचार इकाइयों ने खूब प्रचार किया। केरल प्रदेश ने 10 से 26 अप्रैल 1994 तक प्रसिद्ध मलयत्तूर चर्च समारोह के अवसर पर प्रचार के अनेक साधनों द्वारा जागरूकता अभियान चलाया। केरल के प्रमुख त्यौहार ओणम के अवसर पर आयोजित 'पर्यटन सप्ताह' के दौरान भी प्रचार किया गया। पंजाब की प्रचार इकाइयों ने प्रसिद्ध बैशाखी मेले के अवसर पर विभिन्न सांस्कृतिक समारोहों का आयोजन किया। मई 1994 में हिमाचल प्रदेश के सोलन जिले के गांव बुन्दोह में मातादेवी के वार्षिक मेले में कुश्ती प्रतियोगिता की गई। निदेशालय ने स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग, सूचना और जिला शिक्षा तथा प्रशिक्षण संस्था के सहयोग से जम्मू-कश्मीर के कटरा नामक स्थान पर पांच दिन का नवरात्रि समारोह किया। क्षेत्र प्रचार इकाइयों ने कुल्लू के दशहरा मेले, चंदौसी के गणेश चौथ मेले, देहरादून के जौनसारी मेले, पुरी के रथयात्रा महोत्सव, असम के कामाख्या मन्दिर के अम्बुवासी मेले, बिहार में सोनपुर के पशु मेले और अजमेर के उर्स तथा पुष्कर मेले में भाग लिया।

अन्य विषय

10.14. निदेशालय ने स्त्रियों की स्थिति, छुआछूत मिटाने, मद्यनिषेध, नशीले पदार्थों के दुरूपयोग जैसे सामाजिक आर्थिक विषयों और सरकारी कारखानों की भूमिका जैसे विषयों का भी प्रचार किया। छुआछूत की सामाजिक कुप्रथा के बारे में लोगों को जानकारी देने के लिए क्षेत्र प्रचार इकाइयों ने 'एक प्राचीन अभिशाप' और 'परोपकार' आदि फिल्में व्यापक इलाकों में दिखाईं। राजस्थान की प्रचार इकाइयों ने 'आखातीज' त्यौहार के अवसर पर बाल-विवाह की कुप्रथा दूर करने के लिए विशेष रूप से प्रचार किया। देश ने 1947 से अब तक जो प्रगति की है उस पर ध्यान दिलाने के लिए देश के विभिन्न भागों में 15 अगस्त से 15 सितम्बर 1994 तक अनेक माध्यमों से प्रचार किया गया। इस दौरान विभिन्न राष्ट्रीय नेताओं की भूमिकाओं और पिछले तीन वर्ष की उपलब्धियों पर भी ध्यान दिलाया गया।

बातचीत के मुद्दे

10.15. विभिन्न विषयों के बारे में क्षेत्र अधिकारियों को उचित जानकारी देने के लिए मुख्यालय में 'बातचीत के मुद्दे' तैयार किये जाते हैं और इन्हें विभिन्न क्षेत्र प्रचार इकाइयों को भेज दिया जाता है। इस वर्ष जिन विषयों पर 'बातचीत के मुद्दे' तैयार किये गये, वे इस प्रकार हैं : कीटाणुनाशक और एहतियात, प्लेग, गैट समझौता, पंचायती राज, हथकरघा क्षेत्र की सहायता, प्रधानमंत्री की रोजगार योजना, रोजगार आश्वासन योजना, देहातों के गरीबों के लिए नये अवसर इत्यादि।

निर्देशित भ्रमण

10.16. राष्ट्रीय एकता तथा लोगों में एकता की भावना जगाने के लिए हर वर्ष अनेक राज्यों के सम्मति निर्माता नेताओं के लिए निर्देशित भ्रमण आयोजित किये जाते हैं, (इनमें सीमावर्ती, जनजातियों और पिछड़े इलाकों के लोग भी होते हैं इनमें लोक कलाकार, अध्यापक, विद्यार्थी और युवक, सम्मति-निर्माता नेता और प्रगतिशील किसान भी शमिल किये जाते हैं)। इन लोगों को देश के विभिन्न भागों में ले जाया जाता है और देश ने विभिन्न क्षेत्रों में जो प्रगति की है उसे स्वयं देखने का अवसर प्रदान किया जाता है। दिसम्बर 1994 तक दो निर्देशित भ्रमण पूरे किये जा चुके थे।

अध्याय-11

विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय

11.1.1. विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय ; केन्द्र सरकार की प्रमुख बहु-प्रचार माध्यम विज्ञापन एजेन्सी है जिसका उद्देश्य सरकार की गतिविधियों, नीतियों और कार्यक्रमों के बारे में लोगों को जानकारी देना तथा विकास से सम्बद्ध कार्यों में भाग लेने के लिए जनता को प्रेरित करना है। यह निदेशालय विभिन्न मंत्रालयों, स्वशासी संस्थाओं और सरकारी कल-कारखानों की प्रचार आदि से सम्बद्ध जरूरतें, विभिन्न भाषाओं के प्रकाशनों, पत्र पत्रिकाओं में विज्ञापनों, रेडियो और टेलीविजन पर श्रव्य और दृश्य प्रचार, बाह्य प्रचार और प्रदर्शनियों द्वारा पूरी करता है। इस निदेशालय ने स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, बालिकाओं की स्थिति, छूत की बीमारियों से बचाव, स्त्री और बच्चे का विकास, राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव, रक्षा, नई आर्थिक नीति, पर्यावरण, साक्षरता, रोजगार, चुनाव, एड्स, नशीले पदार्थों का दुरूपयोग और मद्यनिषेध, तटकर और केन्द्रीय उत्पादन शुल्क, आयकर, ग्राम विकास, ऊर्जा संरक्षण इत्यादि विषयों पर जनता का ध्यान आकृष्ट कराया।

11.1.2. इस निदेशालय के मुख्यालय में विज्ञापन, बाह्य प्रचार, मुद्रित प्रचार, प्रदर्शनियां, इलेक्ट्रानिक डैटा प्रोसेसिंग सेंटर, मास मेलिंग, श्रव्य और दृश्य सैल, स्टूडियो, प्रतिलिपि स्कन्ध (कापी विंग), अभियान स्कन्ध (कैम्पेन विंग) इत्यादि अनेक स्कन्ध हैं। इस निदेशालय के देशभर में कार्यालय हैं। प्रादेशिक गतिविधियों में समन्वय बनाये रखने के लिए बंगलौर और गुवाहाटी में निदेशालय के दो प्रादेशिक कार्यालय हैं तथा विभिन्न भाषाओं में तैयार प्रचार सामग्री तेजी से बांटने के लिए कलकत्ता और मद्रास में दो प्रादेशिक वितरण केन्द्र हैं। गुवाहाटी में निदेशालय का प्रदर्शनी किट बनाने का केन्द्र है। इसकी 35 क्षेत्र प्रदर्शनी यूनिटें हैं जिनमें सात मोटर गाड़ियां भी शामिल हैं। मद्रास में स्थापित प्रादेशिक प्रदर्शनी वर्कशाप (कार्यशाला), प्रदर्शित की जाने वाली सामग्री के डिजाइन बनाने, इन्हें तैयार करने और इनका प्रदर्शन करने में मुख्यालय के प्रदर्शनी विभाग की सहायता करती है।

मुद्रित प्रचार

11.2.1. विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय ने अप्रैल से दिसम्बर 1994 तक की अवधि में मुद्रित प्रचार सामग्री में निम्नलिखित विषयों पर पुस्तिकाएं, फोल्डर और पोस्टर प्रकाशित किये :-"मां का दूध", "बेसिक शिक्षा", "सभी के लिए जल", "अन्य पिछड़े वर्गो के लिए सामाजिक न्याय का प्रबंध", "गर्भ निरोध के लिये मार्गदर्शक", "आर्थिक परिवर्तन और मध्य मार्ग", "एशिया और प्रशान्त महासागर आर्थिक सामाजिक आयोग के लिये चुनौतियां", "अंतर्राष्ट्रीय परिवार वर्ष 1994 में राष्ट्रीय कार्य योजना", "जनसम्पर्क माध्यम के लिये नई चुनौतियां", "विवाह की उचित आयु", "छूत के रोगों से रक्षा", "पल्स पोलियो", और "भारत की समन्वयात्मक संस्कृति।" नई दिल्ली में आयोजित श्रीलंका, सीरिया और ब्राजील के फिल्म समारोहों के लिए फोल्डर छापे गये। आचार्य विनोबा भावे, श्रीमती इन्दिरा गांधी और श्री राजीव गांधी के बारे में विशेष प्रकाशन किये गये।

11.2.2. आयकर के बारे में विशेष श्रृंखला छापी गई जिसमें निम्नलिखित पुस्तिकाएं भी थीं : "अपने पूंजीगत लाभ का हिसाब कैसे लगायें", "अपनी कर विवरणी कैसे भरें", "छोटे व्यापारियों के लिये सरल पद्धति", "आयकर सर्वेक्षण, "गृह सम्पत्ति से आय", "साझेदारी की फर्म का कर निर्धारण", और "अपने वेतन की आय का हिसाब कैसे लगाये"।

11.2.3. विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय ने 'गैट' अर्थात् व्यापार और तटकर से सम्बद्ध आय समझौते के बारे में निम्नलिखित प्रकाशनों की लगभग 50 लाख प्रतियां प्रकाशित कीं : "भारत और गैट समझौता", "गैट समझौते के प्रभाव", "गैट समझौता और कृषि", "गैट समझौता (प्रश्न और उत्तर)",

"गैट समझौता और किसान-क्या आपको डर है?" "गैट समझौता देश के हित के लिये", और "गैट के बारे में सामान्य सूचना"। सरकार की पिछले तीन वर्ष की उपलब्धियों के बारे में विभिन्न भाषाओं में पुस्तकें तथा "साहसिक नवयुग" के नाम से जैकेट किट छापी गई।

11.2.4. विभिन्न अवसरों पर दिये गये प्रधानमंत्री के भाषण पुस्तिकाओं/फोल्डरों के रूप में छापे गये। इनमें निम्नलिखित भाषण भी थे :—"विज्ञान और प्रौद्योगिकी को समाज को सुखी बनाने का प्रयत्न करना चाहिये", "संसद-जनता की इच्छा शक्ति का मूर्त्तरूप", "बेसिक शिक्षा-हमारे स्वाधीनता संग्राम की विरासत", "निर्धनों के कल्याण के लिये संयुक्त प्रयत्न", "शताब्दी के अन्त तक प्रायः सभी को रोजगार", "भारत-अमरीका संबंध—साहसिक नवयुग की देहली पर", "एक ध्रुवीयता की नई चुनौतियां", "एशिया और प्रशान्त महासागर आर्थिक सामाजिक आयोग के समक्ष नई चुनौतियां", "भारत संकटों से पार उबर सकता है", "भारत-ब्रिटेन संबंधों का परिप्रेक्ष्य", "सूचना कार्यक्रम में पंचायतों की और अधिक भूमिका", "13 अगस्त 1994 को प्रधानमंत्री का भाषण", आर्थिक परिवर्तन और मध्य मार्ग", "सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का विकास", "भारत और एशिया प्रशान्त महासागर के देश-नये संबंध''। निदेशालय ने कुल मिलाकर 568 प्रकाशनों की 1.64 करोड़ प्रतियां छापीं।

प्रदर्शनियां

11.3.1. विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय ने अपनी 35 क्षेत्रीय प्रदर्शनी इकाइयों के द्वारा सरकार के विभिन्न सामाजिक-आर्थिक कार्यक्रमों का प्रचार किया। इन कार्यक्रमों के प्रचार में फिल्म शो और श्रव्य कार्यक्रमों का भी योगदान रहा। इस अवधि में निदेशालय ने निम्नलिखित प्रदर्शनियां आयोजित कीं :- "आज का भारत", "बालिका", "भारत छोड़ो आंदोलन", "एक राष्ट्र एक प्राण", "ग्राम विकास की ओर", "उज्जवल भविष्य की ओर", "छोटा परिवार सुख का आधार", और "राष्ट्रीय फिल्म समारोह''। महात्मा गांधी, श्री राजीव गांधी और स्वामी विवेकानन्द जैसे प्रमुख व्यक्तियों के बारे में भी प्रदर्शनियां लगाई गई।

11.3.2. ग्राम विकास के बारे में जनसम्पर्क के अनेक साधनों द्वारा प्रचार करने के अवसर पर निदेशालय ने ग्राम विकास के बारे में आन्ध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, दिल्ली और हरियाणा में लगभग 25 प्रदर्शनियां लगाईं। राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव के बारे में भी निदेशालय ने जनसम्पर्क के अनेक साधनों द्वारा प्रचार किया। इस प्रचार के दौरान देशभर में 100 से भी अधिक प्रदर्शनियां लगाई गई। ये प्रदर्शनियां उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, केरल, असम, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, मिजोरम, बिहार, आन्ध्र प्रदेश, मणिपुर, नगालैंड और जम्मू-कश्मीर में लगाई गई। पंडित जवाहरलाल नेहरू की जयन्ती के अवसर पर निदेशालय ने तीन मूर्ति भवन में आयोजित विज्ञान और प्रोद्योगिक मेले में ''नेहरू और विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी प्रदर्शनी'' भी लगाई।

11.3.3. प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय भारत व्यापार मेले के अवसर पर स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय की ओर से निदेशालय द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी "छोटा परिवार-स्वस्थ परिवार" को केन्द्रीय सरकार के विभाग वर्ग में "प्रदर्शन की उत्कृष्टता" के लिये स्वर्ण पदक प्रदान किया गया।

11.3.4. अप्रैल से दिसम्बर 1994 की अवधि में निदेशालय ने लगभग 400 प्रदर्शनियां आयोजित कीं जो 1725 प्रदर्शनी दिवसों तक चलीं और इन्हें देशभर में लगभग एक करोड़ लोगों ने देखा।

श्रव्य-दृश्य प्रचार

11.4.1. निदेशालय के श्रव्य-दृश्य प्रचार सैल ने स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, स्त्री और बाल विकास, एड्स के प्रति जागरूकता, ग्राम विकास, पंचायती राज, ऊर्जा के गैर परम्परागत स्रोत, उपभोक्ता संरक्षण और समाज कल्याण से सम्बद्ध विभिन्न विषयों का व्यापक प्रचार किया। महिला समृद्धि योजना और

अंतर्राष्ट्रीय परिवार वर्ष के बारे में श्रव्य और दृश्य स्पॉट्स तैयार किये गये। राष्ट्रीय एकता के बारे में निदेशालय द्वारा तैयार दो वीडियो स्पॉट्स 15 अगस्त, 1994 को 48वें स्वाधीनता दिवस के अवसर पर टेलीविजन द्वारा प्रसारित किये गये। निदेशालय द्वारा तैयार जिन वीडियो स्पॉट्स को टेलीविजन से प्रसारित किया गया उनमें निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं :—पंचायती राज के बारे में 20 सेकेंड का कार्टून, डी डब्ल्यू सी आर ए, ट्राइसेम और प्रधानमंत्री की रोजगार योजना के बारे में स्पॉट्स, 11 जुलाई, 1994 को मनाये गये विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर निदेशालय ने दो वीडियो स्पॉट्स तैयार किये।

11.4.2. विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय छः प्रायोजित कार्यक्रम तैयार करता है जिन्हें हिन्दी और प्रमुख भाषाओं में विविध भारती केन्द्रों से देशभर में प्रसारित किया जाता है। ये कार्यक्रम इस प्रकार हैं :—"हसीन लम्हे", और "यह भी खूब रही", परिवार कल्याण के बारे में ; महिला और बाल विकास से सम्बद्ध "नया सवेरा" ; उपभोक्ता संरक्षण के बारे में "अपने अधिकार" ; समाज कल्याण से सम्बद्ध "आओ हाथ बढ़ायें" और गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोतों के बारे में "नई राह अपनाओ"।

11.4.3. निदेशालय ने कुल मिलाकर 2478 रेडियो स्पॉट्स, जिंगल्स, और प्रयोजित कार्यक्रम तथा 41 वीडियो स्पॉट्स, क्विकीज, (अतिलघु फिल्म) और वृत्तचित्र तैयार किये। इन्हें लगभग 13000 बार रेडियो से प्रसारित किया गया। वीडियो स्पॉट्स आदि को 90 बार टेलीविजन से प्रसारित किया गया।

समाचार पत्र विज्ञापन

11.5. निदेशालय के विज्ञापन स्कन्ध ने समाचार पत्र-पत्रिकाओं में विज्ञापनों द्वारा विभिन्न सामाजिक-आर्थिक कार्यक्रमों का व्यापक प्रचार किया। इनमें निम्नलिखित कार्यक्रम उल्लेखनीय हैं :— एड्स, मादक पदार्थों का दुरूपयोग, राष्ट्रीय एकता, पंचायती राज, राष्ट्रीय बचत, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, ग्राम विकास, ऊर्जा के गैर परम्परागत स्रोत तथा आयकर पर अनेक विज्ञापन। विश्व जनसंख्या दिवस, अंतर्राष्ट्रीय विकलांग दिवस, डाक्टर आम्बेडकर जयन्ती, विश्व स्तनपान सप्ताह, राष्ट्रीय डाक दिवस के अवसरों पर तथा रक्त दान और निर्जलीकरण के बारे में विशेष परिशिष्ट प्रकाशित कराये गये। पिछले तीन वर्षों में सरकार की उपलब्धियों के बारे में "सामाजिक न्याय की ओर" शीर्षक से विशेष परिशिष्ट प्रकाशित हुए। निदेशालय ने अप्रैल से दिसम्बर 1994 तक की अवधि में 13,224 विज्ञापन (341 प्रदर्शन और 12,883 वर्गीकृत) हिन्दी, अंग्रेजी और अन्य प्रादेशिक भाषाओं के विभिन्न समाचार पत्रों, पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ दिये।

बाह्य प्रचार

11.6. निदेशालय के बाह्य प्रचार स्कन्ध ने 436 होर्डिंग्स, 367 किओस्कस, 237 बैनर्स, 51,584 सिनेमा स्लाइड्स, 300 वाल पेंटिंग्स, 730 बस शैल्टरों और 4,750 बस पैनलों के द्वारा आयकर, पंचायती राज, महिला समृद्धि योजना, एड्स, एशिया प्रशान्त महासागर आर्थिक सामाजिक आयोग सम्मेलन, उपभोक्ता अधिकार, राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव, थल सेना और नौ-सेना में भर्ती, दस्तकारी, 41वां राष्ट्रीय फिल्म समारोह, मादक द्रव्यों का दुरूपयोग, रक्तदान, और अर्ध कुम्भ मेले आदि का प्रचार किया। हरियाणा, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, उत्तर प्रदेश, पंजाब और दिल्ली में लगभग 2,000 बस पैनल्स, 500 बस शैल्टरों और 650 किओस्क तथा होर्डिंग्स द्वारा एड्स रोग से बचाव करने के कार्यक्रम का व्यापक प्रचार किया गया।

मास मेलिंग

11.7. विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय के मास मेलिंग स्कन्ध ने नई दिल्ली के मुख्यालय से और मद्रास तथा कलकत्ता के प्रादेशिक वितरण केन्द्रों से 1.43 करोड़ से अधिक मुद्रित सामग्री वितरित की। इस स्कन्ध के पास लगभग 15 लाख पते हैं। ये पते लगभग 530 वर्गों के हैं जिनमें प्राइमरी मिडिल स्कूल, डाकघर, देहाती बैंक, सामाजिक संगठन, पंचायतें, राज्यों के सूचना विभाग, शिक्षा और

संस्कृति से सम्बद्ध संस्थाएं, संसद सदस्य, विधायक, मंत्री, मुख्यमंत्री, राज्यपाल और देशभर के अन्य प्रमुख व्यक्ति शामिल है। इस वर्ष स्कन्ध ने अपनी सूची में 24,752 नये पते बढ़ाये और 45,725 पतों में आवश्यक परिवर्तन किये।

प्रमुख अभियान

ग्राम विकास

11.8.1. निदेशलय ने ग्राम विकास के कार्यक्रमों का व्यापक प्रचार किया। पंचायती राज, जवाहर रोजगार योजना, समन्वित ग्राम विकास कार्यक्रमों, पीने के स्वच्छ जल, गांवों में सफाई, बंजर भूमि के विकास इत्यादि के बारे में मुद्रित सामग्री प्रकाशित की। पंचायती राज और रोजगार का भरोसा दिलाने वाली योजना के बारे में सिनेमा स्लाइड्स दिखाई गई। ग्राम विकास के विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में सात विज्ञापन देशभर के सभी प्रमुख भाषाओं के अखबारों में प्रकाशित कराये गये। निदेशालय ने डी डब्ल्यू सी आर ए, ट्राइसेम और रोजगार का भरोसा दिलाने वाली योजना के बारे में क्विकीज भी तैयार किये जिन्हें दूरदर्शन पर प्रायः दिखाया जाता रहा। देशभर के देहाती इलाकों में "गांव विकास की ओर" प्रदर्शनी लगाई गई।

11.8.2. इस अभियान के दो अन्य चरणों पर इसी वर्ष अमल किया जायेगा। इसके अधीन पंचायती राज, जवाहर रोजगार योजना, समन्वित ग्राम विकास कार्यक्रम, रोजगार आश्वासन योजना, पेय जल और गांवों की सफाई तथा बंजर भूमि विकास के बारे में पुस्तकों आदि का प्रकाशन भी किया जाएगा। अखबारों के लिये कई विज्ञापन, दृश्य और श्रव्य स्पॉट्स और बाह्य प्रचार की सामग्री तैयार कर देशभर में प्रदर्शित की जायेगी।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण

11.9.1. विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय ने परिवार कल्याण के बारे में राष्ट्रीय अभियान शुरू किये। इनमें "जनसंख्या और समर्थन योग्य विकास", छोटा परिवार-सुखी परिवार", "मां और शिशु का स्वास्थ्य", "जन्म में अन्तर का चुनाव" इत्यादि उल्लेखनीय हैं।

11.9.2. 11 जुलाई 1994 को विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर तथा 20 दिसम्बर 1994 को भारत जनसंख्या परियोजना आरम्भ होने के अवसर पर दो पृष्ठों के परिशिष्ट प्रकाशित कराये गये।

11.9.3. स्वास्थ्य और परिवार कल्याण से सम्बद्ध विषयों का प्रचार करने के लिए हिन्दी, अंग्रेजी और सभी प्रादेशिक भाषाओं में अनेक प्रकाशन छपवाये गये। इनमें एड्स, तब क्यों नहीं सोचा, पिता भी जिम्मेदार है, पहले विद्यादान, सुरक्षित मातृत्व, वैसकटोमी, नो स्कैलैपल वैसकटोमी, गर्भ निरोध के लिये निर्देश, बुद्धिमान राजा, विवाह की उचित आयु, किशोरवस्था, छोटा स्वस्थ और सुखी परिवार और स्तनपान विषयों पर भी प्रकाशन थे। इसके अतिरिक्त निदेशालय ने परिवार कल्याण के बारे में विभिन्न विषयों पर भारतीय ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा तैयार अनेक पुस्तिकाएं प्रकाशित कीं। विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय ने परिवार कल्याण से सम्बद्ध 12 पृष्ठों का कैलेण्डर भी तैयार किया।

11.9.4. देश के विभिन्न भागों में प्लेग, मलेरिया और दस्त की बीमारी फैलने पर इन बीमारियों के बारे में लोगों को जानकारी देने के लिए निदेशालय ने प्रचार अभियान आयोजित किये।

अध्याय-12

फोटो प्रभाग

12.1.1. फोटोग्राफी के क्षेत्र में फोटो प्रभाग देश में अपनी तरह की सबसे बड़ी उत्पादन इकाई है। यह प्रभाग भारत सरकार की ओर से देश और विदेश में प्रचार के लिये श्वेत-श्याम और रंगीन दोनों ही तरह के फोटोग्राफ तैयार करता है। अप्रैल से नवम्बर 1994 तक की अवधि में इस प्रभाग ने 2,200 से भी अधिक विभिन्न समारोह/कार्यक्रमों के फोटो खींचे और विभिन्न प्रचार विभागों और केन्द्रीय/राज्य सरकारों के विभागों की प्रचार संबंधी जरूरतें पूरी करने के लिए फोटो दिये।

12.1.2. फोटो प्रभाग का मुख्य कार्य देश के विकास, उन्नति और सामाजिक परिवर्तनों के फोटो खींचना और इन्हें सुरक्षित रखना तथा सम्प्रेषण के क्षेत्र में दृश्य समर्थन प्रदान करना है। यह प्रभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय की प्रचार इकाइयों तथा केन्द्रीय और राज्य सरकारों के अन्य मंत्रालयों/विभागों, राष्ट्रपति सचिवालय, उप-राष्ट्रपति सचिवाल,य प्रधानमंत्री कार्यालय, लोक सभा सचिवालय / राज्य सभा सचिवालय और विदेश मंत्रालय के विदेश प्रचार विभाग के द्वारा विदेशों के भारतीय दूतावासों को फोटोग्राफ देता है। यह प्रभाग प्रचारेतर संगठनों और आम लोगों को भी श्वेत-श्याम और रंगीन फोटो तथा रंगीन स्लाइड्स/पारदर्शियां उचित मूल्य पर देता है। अप्रैल-नवम्बर 1994 के दौरान प्रभाग ने इस तरह 4.13 लाख रुपये कमाये।

12.1.3. इस प्रभाग में तरह-तरह के फोटोग्राफी के काम करने के लिये सभी तरह की सुविधाओं से सम्पन्न प्रयोगशालाएं और उपकरण हैं। फोटो प्रभाग के मुख्य कार्यालय नई दिल्ली में फोटो डाटा बैंक भी स्थापित कर दिया गया। फोटो डाटा बैंक में फोटोग्राफ रिकार्ड करने की प्रक्रिया जारी है। इस प्रभाग के बम्बई, कलकत्ता, मद्रास और गुवाहाटी में चार प्रादेशिक कार्यालय हैं।

प्रमुख कवरेज

12.2.1. फोटो प्रभाग ने देश के विभिन्न भागों में राष्ट्रपति, उप-राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री की यात्राओं के बड़ी संख्या में फोटो लिए। उप-राष्ट्रपति की आस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया, थाईलैंड, सिंगापुर, दक्षिण अफ्रीका, चीन और हांगकांग की यात्राओं, प्रधानमंत्री की अमरीका, रुस, वियतनाम और सिंगापुर की यात्राओं, वित्तमंत्री की साइप्रस यात्रा और प्रधानमंत्री कार्यालय के राज्यमंत्री की नेपाल यात्रा के फोटो खींचे। ये फोटो, देश में पत्र सूचना कार्यालय द्वारा और विदेशों के भारतीय दूतावासों को विदेश मंत्रालय के विदेश प्रचार विभाग द्वारा भेजे गये।

12.2.2. इस प्रभाग ने भारत आने वाले विशिष्ट विदेशी अतिथियों और राज्य/शासन अध्यक्षों की यात्रा के फोटो भी खींचे।

12.2.3. फोटो प्रभाग हर वर्ष निर्धारित विषयों पर फोटो प्रतियोगिता और प्रदर्शनी आयोजित करता है। इस प्रतियोगिता में देश भर के शौकिया फोटोग्राफर भाग लेते हैं। श्वेत-श्याम और रंगीन इन दोनों तरह की फोटो प्रतियोगिता के लिये अधिक से अधिक चार-चार फोटो भेजने होते हैं।

छठी राष्ट्रीय फोटो प्रतियोगिता के लिए "भारतीय नारी" विषय निश्चित किया गया था। इसके लिए 405 प्रतियोगियों ने 1,099 श्वेत-श्याम फोटो और 686 शौकिया फोटो-ग्राफरों ने 1,555 रंगीन फोटो भेजे। यह प्रतियोगिता मार्च 1994 में नई दिल्ली में आयोजित की गई। तीन सदस्यों के निर्णायक मंडल ने प्रतियोगिता में प्राप्त सभी फोटो देखने के बाद पुरस्कृत करने के लिए 26 फोटो (13 श्वेत-श्याम और 13 रंगीन) चुने। इनके अतिरिक्त निर्णायक मंडल ने प्रदर्शनी के लिए 95 फोटो चुने।

12.2.4. फोटो प्रभाग ने 29 नवम्बर, 1994 को संयुक्त राष्ट्र बाल सहायता कोष के सहयोग से

"बाल अधिकारों" के बारे में प्रथम राष्ट्रीय फोटोग्राफी वर्कशाप का भी आयोजन किया। इसमें देश की विभिन्न समाचार एजेंसियों और सरकारी संगठनों के 78 व्यावसायिक फोटो-ग्राफरों ने भाग लिया।

12.2.5. अप्रैल से नवम्बर 1994 तक की फोटो प्रभाग की गतिविधियों का ब्यौरा निम्नलिखित हैः—

1. समाचार और फीचर कार्यों के फोटो लिए गये : 2,200
2. नैगेटिवों से काम लिया गया : 83,305
3. रंगीन स्लाइड्स/ट्रान्सपेरेन्सी (पारदर्शियां) तैयार की गई : 547
4. श्वेत-श्याम फोटो तैयार किये गयेः 3,59,186
5. रंगीन फोटो तैयार किये गये : 24,899
6. श्वेत-श्याम और रंगीन फोटो तैयार किये गये : कुल फोटो : 3,84,085
7. कुल फोटो एलबम/बालेट्स तैयार किये गये : 84

अध्याय-13

गीत और नाटक प्रभाग

13.1.1. गीत और नाटक प्रभाग सामाजिक आर्थिक महत्व के विभिन्न राष्ट्रीय कार्यक्रमों के प्रति लोगों में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए मनोरंजन के जीवन्त माध्यमों का प्रयोग करता है। इसके लिए यह प्रभाग नाटक, नृत्य नाटक, कठपुतली, लोकगीतों, लोक-नाटकों, परम्परागत नाटकों तथा ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रमों जैसी मंच कलाओं का व्यापक उपयोग करता है। यह प्रभाग सीमावर्ती क्षेत्रों में सशस्त्र सैनिकों का मनोरंजन भी करता है। यह प्रभाग केन्द्र और राज्य सरकारों के संगठनों के साथ घनिष्ठ सहयोग कर काम करता है।

13.1.2. बड़े त्यौहारों के अवसरों पर एकत्र विशाल जन समुदाय को राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सद्भाव, छुआछूत की समाप्ति, मद्यनिषेध, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, नई आर्थिक नीति, पुनर्गठित सार्वजनिक वितरण प्रणाली इत्यादि से परिचित कराने के लिए यह प्रभाग सम्प्रेषण के इन साधनों का उपयोग करता है।

गतिविधियां

13.2.1. यह प्रभाग, एक निदेशक के अधीन तीन स्तरों पर काम करता है–(1) दिल्ली में मुख्यालय, (2) भोपाल, कलकत्ता, चण्डीगढ़, दिल्ली, गुवाहाटी, लखनऊ, मद्रास और पुणे में स्थित आठ प्रादेशिक केन्द्र, और (3) भुवनेश्वर, हैदराबाद, पटना, इम्फाल, जोधपुर, दरभंगा, नैनीताल, शिमला और श्रीनगर में स्थित नौ उप केन्द्र/इनके अतिरिक्त नई दिल्ली और बंगलौर में दो ध्वनि और प्रकाश इकाइयां तथा रांची में एक जनजातीय केन्द्र भी है। ये केन्द्र और उप केन्द्र प्रचार की दृष्टि से उपयोगी कार्यक्रम तैयार करते हैं और इन्हें प्रस्तुत करते हैं।

विभागीय नाटक मंडलियां

13.3. प्रभाग में छह विभागीय नाटक मंडलियां हैं। ये मंडलियां पुणे, हैदराबाद, श्रीनगर, दिल्ली, पटना और भुवनेश्वर में हैं। इस वर्ष इन्होंने विभिन्न भाषाओं में कार्यक्रम प्रस्तुत किये। पुणे केन्द्र ने वहां आयोजित 'पुणे समारोह 94' में भाग लिया। भुवनेश्वर की मंडली पुरी (उड़ीसा) के प्रसिद्ध 'रथयात्रा महोत्सव' में शामिल हुई। उड़ीसा मंडली ने राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव के बारे में राज्य भर में कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

सीमा प्रचार मंडलियां

13.4. अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं के पास वाले इलाकों में प्रभावशाली और गहन प्रचार करने के लिए सीमा प्रचार मंडलियों ने सीमावर्ती गांवों में वहां की बोलियों में कार्यक्रम प्रस्तुत कर इन लोगों का मनोरंजन करने के साथ-साथ इन्हें विभिन्न बातों की जानकारी दी। इन कार्यक्रमों के द्वारा राष्ट्र विरोधी प्रचार का जवाब दिया गया, देश की रक्षा करने की तैयारियों के बारे में लोगों को जानकारी दी गई, भावात्मक और राष्ट्रीय एकता की भावना बढ़ाई गई और सीमावर्ती लोगों को राष्ट्र निर्माण के कार्यों में शामिल होने के लिए प्रेरित किया गया। इन मंडलियों ने क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय, एस.एस.बी., राज्य सरकार के संगठनों तथा अन्य सम्बद्ध संगठनों के सहयोग से गहन प्रचार अभियान चलाए। इस वर्ष गुवाहाटी के प्रादेशिक केन्द्र ने उत्तर-पूर्व क्षेत्र में राष्ट्रीय एकता से सम्बद्ध कार्यक्रम प्रस्तुत किए। प्रभाग ने उत्तर-पूर्व के सातों राज्यों और सिक्किम में सद्भावना समारोह आयोजित किए। शिमला केन्द्र ने हिमाचल प्रदेश में कुल्लू के दशहरा समारोह में भाग लिया। देश के सीमावर्ती गांवों में नई आर्थिक नीति, सार्वजनिक वितरण प्रणाली और गैट समझौते पर विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। प्रभाग द्वारा

प्रस्तुत कार्यक्रमों में जवाहर रोजगार योजना, पंचायती राज, महिला समृद्धि योजना जैसी ग्राम विकास की योजनाओं तथा अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर बल दिया गया। 1994-95 के वर्ष में सभी सीमा प्रचार मंडलियों ने उत्तर-पूर्व कर्नाटक और तमिलनाडु में आयोजित सद्भावना समारोहों में भाग लिया।

सशस्त्र सेना मनोरंजन मंडलियां

13.5. अग्रिम इलाकों में तैनात जवानों के मनोरंजन के लिए 1967 में सशस्त्र सेना मनोरंजन स्कन्ध स्थापित किया गया था। इसमें सात मंडलियां हैं। एक मंडली मद्रास में है और शेष दिल्ली में। इस वर्ष ये मंडलियां जवानों का मनोरंजन करने के लिए दुर्गम और सुविधारहित अग्रिम इलाकों में गईं। इन मंडलियों ने साम्प्रदायिक सद्भाव, राष्ट्रीय एकता और इसी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर कार्यक्रम प्रस्तुत किये। इन मंडलियों ने विदेशी मान्य अतिथियों, संसद सदस्यों के लिए तथा विशेष अवसरों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। इस वर्ष इन मंडलियों ने देश के बाढ़ग्रस्त इलाकों में दस्त की बीमारी की रोकथाम के लिए आयोजित विशेष अभियानों, सद्भावना समारोहों और ध्वनि-प्रकाश इत्यादि कार्यक्रमों में भी भाग लिया। दिसम्बर 1994 तक इन मंडलियों ने 246 कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रम

13.6. दिल्ली और बंगलौर में इस प्रभाग की एक-एक ध्वनि और प्रकाश इकाई है। उत्कल दिवस के अवसर पर रायपुर में 'मंजिलें और भी हैं' ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। नई दिल्ली में 'फूलवालों की सैर' के अवसर पर 'वह राहगुजर वह राहगीर' कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। आलोच्य वर्ष के दौरान उड़ीसा के भुवनेश्वर और अंगुल में राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव के बारे में कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। प्रभाग ने जोधपुर और कोटा में भी ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रम दिखाये। इसी वर्ष मध्य प्रदेश के भोपाल/मालेश्वर में और उत्तर प्रदेश के झांसी शहर में भी कार्यक्रम प्रस्तुत किये जायेंगे। कनार्टक के मैसूर और माण्डया में तथा आंध्र प्रदेश के खम्मम शहर में भी कार्यक्रम प्रस्तुत करने का प्रस्ताव है।

व्यावसायिक और विशेष सेवाएं

13.7. राष्ट्रीय एकता और अनिक क्षेत्रों में किये जा रहे विकास कार्यों की जानकारी देने के लिए प्रभाग, मंच कलाओं के क्षेत्र में पंजीकृत निजी मंडलियों का भी उपयोग करता है। इन दिनों प्रभाग में 620 निजी मंडलियां पंजीकृत हैं जो राष्ट्रीय महत्व के निर्दिष्ट विषयों पर कार्यक्रम प्रस्तुत करती हैं। सद्भावना समारोहों में और स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण से सम्बद्ध विभिन्न अभियानों में इन मंडलियों को भी सम्बद्ध किया गया। इन पंजीकृत मंडलियों के कार्यक्रम सम्पूर्ण प्रचार प्रयत्नों को और अधिक व्यापक बनाते हैं। इस वर्ष दिसम्बर 1994 तक इन मंडलियों ने 26,000 से अधिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

जनजातीय और लोक कलाकारों का उपयोग

13.8. रांची का जनजातीय केन्द्र, जनजातीय परियोजना के अधीन मध्य प्रदेश बिहार और उड़ीसा के जनजातीय कलाकारों की लोक कलाओं का उपयोग करता है। इस परियोजना का आधारभूत उद्देश्य जनजातियों के परिवेश और बोलियों में उपयोगी कार्यक्रमों के विकास को प्रोत्साहन देना है। आशा है कि इस वित्त वर्ष के दौरान यह केन्द्र 400 कार्यक्रम प्रस्तुत कर सकेगा।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण

13.9. विभिन्न निर्धारित क्षेत्रों में संभावित परम्परागत और लोक-शैली का उपयोग कर वर्ष में तरह-तरह की कार्यशालाएं आयोजित करने के प्रयत्न किये गये। लखनऊ में 10 दिसम्बर से 19 दिसम्बर, 1993 तक नुक्कड़ नाटक की शैली द्वारा जनसंख्या नियंत्रण के बारे में परिणाम परक कार्यशाला आयोजित

की गई। यह बहुत सफल रही। इसके अधीन उत्तर प्रदेश में 325 कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। अक्तूबर-नवम्बर 1994 में राजस्थान में मलेरिया फैल गया था। वहां पर प्रभाग ने पंजीकृत मंडलियों के लिए एक सप्ताह का अभिविन्यास शिविर लगाया। इन मंडलियों को बाड़मेर, नागौर, जैसलमेर, जालौर, बीकानेर और जोधपुर जैसे निर्धारित इलाकों में भेजा गया जहां इन्होंने 16 से 22 नवम्बर, 1994 तक की अवधि में 250 कार्यक्रम प्रस्तुत किये। भोपाल, पुणे, कलकत्ता, गुवाहाटी, मद्रास, चण्डीगढ़ और लखनऊ के प्रादेशिक केन्द्रों ने बाढ़-ग्रस्त जिलों पर ध्यान दिया और दस्त की बीमारी की रोकथाम के बारे में कार्यशालाएं आयोजित कीं। कुल मिलाकर 1495 कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

मेले और उत्सव

13.10. प्रभाग ने देश के सभी प्रमुख मेलों और उत्सवों में भाग लिया। इनमें से प्रमुख मेले थे— पुरी का रथयात्रा उत्सव तथा देश के विभिन्न भागों में दुर्गापूजा, दशहरा, रामनवमी, ब्यास समारोह, ओणम, पोंगल, क्रिसमस, बीहू, गणेशोत्सव, मकर संक्रान्ति, पशु मेला, वसन्त मेला और कार्तिक मेला।

गहन अभियान

13.11. प्रभाग ने केन्द्रीय और राज्य सरकारों के विभिन्न संगठनों—नेहरू युवक केन्द्र, संयुक्त राष्ट्र बाल कोष, और गैर-सरकारी संगठनों के सहयोग से देश के विभिन्न भागों में विभिन्न विषयों पर बहुविध प्रचार माध्यमों से अभियान आयोजित किये। इनमें से कुछ अभियान थे—पोलियो की रोकथाम, एड्स नियंत्रण, दस्त की बीमारी की रोकथाम, गैट समझौता और ग्राम विकास।

नई आर्थिक नीति और सार्वजनिक वितरण प्रणाली

13.12. सूचना और प्रसारण मंत्रालय के क्षेत्रीय स्तर के संचार कर्मचारियों के सम्मुख प्रधानमंत्री के भाषण में बताई गई बातों पर अमल करने के लिए गीत और नाटक प्रभाग ने नई आर्थिक नीति और पुनर्गठित सार्वजनिक वितरण प्रणाली का विशेष रूप से प्रचार करने के लिए नियमित रूप से कार्यक्रम आयोजित किये। प्रभाग के क्षेत्रीय केन्द्रों ने इन विषयों पर विशेष कार्यक्रम तैयार किये और इन्हें जनता में प्रस्तुत किया।

सद्‌भावना समारोह

13.13. बढ़ते हुए साम्प्रदायिक तनाव को देखते हुए प्रभाग ने कुछ राज्यों में साम्प्रदायिक सद्‌भाव और राष्ट्रीय एकता की भावना सद्‌भावना समारोहों के द्वारा बढ़ाने के लिए निरन्तर अभियान चलाये। इस वर्ष उत्तर-पूर्व के सभी सातों राज्यों में तथा कर्नाटक और तमिलनाडु में सद्‌भावना समारोहों का आयोजन किया गया। इन समारोहों में जनता ने उत्साह के साथ भाग लिया। वर्ष के शेष महीनों में पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, पंजाब और जम्मू-कश्मीर में सद्‌भावना समारोह आयोजित करने का प्रस्ताव है।

अध्याय-14

गवेषणा, संदर्भ और प्रशिक्षण प्रभाग

14.1.1. गवेषणा, संदर्भ और प्रशिक्षण प्रभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, इसकी प्रचार इकाइयों और इनके क्षेत्र कार्यालयों को सूचनाएं देता है। यह प्रभाग मंत्रालय की प्रचार इकाइयों के लिए सूचना बैंक तथा सूचना प्रदायक सेवा के रूप में काम कर, उन्हें अपने कार्यक्रम और प्रचार अभियान तैयार करने में सहायता देता है। यह प्रभाग जनसंचार के माध्यमों की प्रवृत्तियों का भी अध्ययन करता है और सामयिक विषयों तथा जनसंचार पर संदर्भ और प्रलेखन सेवा भी प्रदान करता है। प्रभाग मंत्रालय, इसकी प्रचार इकाइयों और जनसंचार का काम करने वाले अन्य संगठनों आदि को पृष्ठभूमि सामग्री, संदर्भ और अनुसंधान सामग्री तथा अन्य सुविधाएं देता है।

14.1.2. इस प्रभाग द्वारा जो कार्य किये जाते हैं उनमें संदर्भ ग्रंथ 'भारत—वार्षिक संदर्भ ग्रंथ' तथा 'भारत में जनसंचार' भी है। 'भारत' संदर्भ ग्रंथ में भारत के बारे में प्रामाणिक संदर्भ सामग्री होती है। 'भारत में जनसंचार' ग्रंथ में देश के जनसंचार माध्यमों के बारे में सामग्री प्रकाशित की जाती है।

14.1.3. वर्ष के दौरान प्रभाग ने अनेक विषयों से सम्बद्ध कार्य किये। इनमें विज्ञान, परिस्थिति विज्ञान, फिल्म और खेल-कूद से सम्बद्ध विषय भी थे। प्रभाग ने महत्वपूर्ण वार्षिक समारोहों के सिलसिले में संदर्भ सामग्री की दो शृंखलाएं तैयार कीं। इनमें से एक शृंखला स्वर्गीय श्री राजीव गांधी की 50वीं जयन्ती के संबंध में थी और दूसरी का शीर्षक था--'प्रगति के 48 वर्ष'। दूसरी शृंखला में संविधान, आधारभूत संरचना का विकास, जनसंचार, भूमि सुधार, पंचायती राज इत्यादि विषयों की समीक्षा थी। 1994 में प्रभाग ने हिन्दी में पृष्ठभूमि/संदर्भ-सामग्री तैयार करने के लिये इकाई शुरू की।

14.1.4. 1994-95 के दौरान प्रभाग ने सूचना और प्रसारण मंत्रालय के लिए महत्वपूर्ण अवसरों पर अनेक विषय सार (ब्रीफिंग्स) तैयार किये।

14.1.5. सरकार कर्मचारियों के विकास और उनकी नियुक्ति पर ध्यान दे रही है। इसे ध्यान में रखते हुए प्रभाग ने प्रशिक्षण के क्षेत्र में अनेक कार्य किये। भारतीय सूचना सेवा के अधिकारियों को प्रशिक्षित करने की जिम्मेदारी पूरी करने के लिए प्रभाग का पुनर्गठन 1994-95 में सुचारु ढंग से किया गया। भारतीय सूचना सेवा के वर्ग 'क' और वर्ग 'ख' के अधिकारियों के लिए नियमित नियुक्ति प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने के अतिरिक्त प्रभाग ने भारतीय जनसंचार संस्थान के सहयोग से 'टेलीविजन के लिए सामयिक विषय' और 'रेडियो से प्रसारण' जैसे विषयों पर अल्प-अवधि के पाठ्यक्रम चलाये। इस प्रभाग ने भारतीय सूचना सेवा के अधिकारियों के लिए कई विचार गोष्ठियां भी आयोजित कीं। प्रभाग ने भारतीय सूचना सेवा की प्रशिक्षण से सम्बद्ध आवश्यकताओं की विस्तृत समीक्षा करने के लिए सूचना और प्रसारण मंत्रालय की पाठ्यक्रम समीक्षा समिति से सहयोग किया और नियुक्ति प्रशिक्षण पाठ्यक्रम तथा क्रमिक पुनरभ्यास पाठ्यक्रम को अन्तिम रूप दिया।

संदर्भ पुस्तकालय

14.2.1. प्रभाग का अपना साधन-संपन्न पुस्तकालय है। इसमें विभिन्न विषयों की पुस्तकें, चुनी हुई पत्रिकाओं के सजिल्द खंड और मंत्रालयों, समितियों तथा आयोगों की विभिन्न रिपोर्टें हैं। पत्रकारिता, जनसम्पर्क, विज्ञापन और दृश्य-श्रव्य प्रचार जैसे विभिन्न विषयों पर भी बहुत-सी पुस्तकें हैं। संसार भर के प्रमुख प्रकाशकों के वार्षिक संदर्भ ग्रंथ, समसामयिक लेख और विश्वकोष भी पुस्तकालय में हैं। मान्यताप्राप्त भारतीय और विदेशी पत्रकार तथा सरकारी अधिकारी इनका उपयोग करते हैं। पुस्तकालय में बहुत-सी भारतीय और विदेशी पत्रिकाएं भी मंगाई जाती हैं।

राष्ट्रीय जनसंचार प्रलेखन केन्द्र

14.3.1. मंत्रालय द्वारा बनाई गई विशेषज्ञ समिति की सिफारिश पर 1976 में राष्ट्रीय जनसंचार प्रलेखन केन्द्र स्थापित किया गया था। प्रभाग का यह केन्द्र जनसंचार के क्षेत्र में हो रही घटनाओं और प्रवृत्तियों के बारे में सूचनाएं संकलित करता है, इनकी व्याख्या करता है और इनके बारे में सूचित करता है।

14.3.2. राष्ट्रीय जनसंचार प्रलेखन केन्द्र ने निम्नलिखित आठ सेवाएं जारी रखीं :– 'करंट अवेयरनैस सर्विस', 'संदर्भ सूचना सेवा', 'बिबलिओग्राफी सर्विस' (ग्रंथ वर्णन सेवा), 'हूज हू इन मास मीडिया', 'आनर्स कनफर्ड आन मास कम्युनिकेटर्स', 'मीडिया मैमोरी', 'वर्ल्ड मीडिया सर्विस' और 'बुलेटिन आन फिल्म'।

अध्याय-15

भारतीय जनसंचार संस्थान

15.1.1. 1965 में भारतीय जनसंचार संस्थान स्वायत्त संस्था के रूप में स्थापित किया गया था। इसे मुख्य रूप से भारत सरकार से आर्थिक सहायता मिलती है। यह संस्थान शिक्षा और प्रशिक्षण के कार्यक्रम आयोजित करता है, विचार गोष्ठियां करता है तथा भारत और अन्य विकासशील देशों के लिए उपयोगी सूचना से सम्बद्ध आधारभूत ढांचा तैयार करने में योग देता है। यह संस्थान देश के दूसरे संगठनों को अपना विशिष्ट ज्ञान और सलाह देता है और इस बारे में विदेशी संगठनों से सहयोग करता है।

15.1.2. आलोच्य वर्ष के दौरान संस्थान ने दो प्रशिक्षण कार्यक्रम और चार डिप्लोमा पाठ्यक्रम आयोजित किये। ये थे– (1) भारतीय सूचना सेवा के 'क' वर्ग के अधिकारियों के लिए अभिविन्यास (ओरियेण्टेशन) पाठ्यक्रम ; (2) आकाशवाणी और दूरदर्शन के कर्मचारियों के लिए प्रसारण पत्रकारिता पाठ्यक्रम ; (3) पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम (अंग्रेजी) ; (4) विज्ञापन और जनसम्पर्क में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम ; (5) पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम (हिन्दी); और (6) गुटनिरपेक्ष देशों के लिए समाचार एजेन्सी पत्रकारिता में डिप्लोमा पाठ्यक्रम।

15.1.3. इसके अतिरिक्त संस्थान ने भारतीय सूचना सेवा के कर्मचारियों के लिए कई पुनरभ्यास पाठ्यक्रम तथा सरकार और सरकारी प्रतिष्ठानों में काम करने वाले प्रचार कर्मचारियों की प्रशिक्षण संबंधी आवश्यकताएं पूरी करने के लिए अल्प-अवधि के विशेष पाठ्यक्रम आयोजित किये। अपनी स्थापना के बाद से यह संस्थान विभिन्न अवधियों के 270 अल्पावधि पाठ्यक्रम और कार्यशालाएं आयोजित कर चुका है जिनसे भारत और विदेशों के लगभग 6192 व्यक्ति लाभान्वित हुए हैं।

दीक्षान्त समारोह

15.2.1. 1993-94 के शिक्षा वर्ष की समाप्ति पर 26 अप्रैल, 1994 को वार्षिक दीक्षान्त समारोह किया गया। इस अवसर पर गुटनिरपेक्ष देशों के लिए समाचार एजेन्सी पत्रकारिता पाठ्यक्रम के 22, पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम (हिन्दी) के 30, पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम (अंग्रेजी) के 31 तथा विज्ञापन और जनसम्पर्क में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम के 29 छात्रों को उपाधियां प्रदान की गईं।

15.2.2. ढेंकानाल में इस संस्थान की शाखा का प्रथम दीक्षान्त समारोह पहली जून, 1994 को हुआ। इसमें पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम (अंग्रेजी) में 30 छात्रों को डिप्लोमा दिये गये।

शिक्षा सत्र-1994-95

15.3. आठ अगस्त, 1994 से निम्नलिखित तीन पाठ्यक्रम शुरू किये गये – पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम (हिन्दी और अंग्रेजी) तथा विज्ञापन और जनसम्पर्क में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम। इनमें से प्रत्येक पाठ्यक्रम में 40-40 विद्यार्थी थे। गुटनिरपेक्ष देशों के लिए समाचार एजेन्सी पत्रकारिता का 23वां डिप्लोमा पाठ्यक्रम 8 जुलाई, 1994 को शुरू हुआ। संस्थान के ढेंकानाल (उड़ीसा) शाखा में पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा का दूसरा पाठ्यक्रम 8 अगस्त, 1994 को शुरू हुआ। इसमें 40 विद्यार्थी थे। संस्थान ने अल्पावधि के 18 पाठ्यक्रम, कार्यशालाएं और विचार गोष्ठियां भी आयोजित कीं, जिनमें 391 पत्रकारों आदि ने भाग लिया।

अनुसंधान और मूल्यांकन अध्ययन

15.4.1. संस्थान ने 1994-95 के वर्ष में निम्नलिखित अनुसंधान अध्ययन किये :–

(i) स्त्रियों पर जनसंचार और प्रचार की अन्य विधाओं का प्रभाव और उसकी भूमिका–1992 के चुनावों के संदर्भ में अध्ययन।

(ii) आयकर अभियान–एक मूल्यांकन।

(iii) तपैदिक के बारे में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के लिए कार्यक्रम--स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा प्रायोजित।

(iv) परिवार कल्याण योजनाओं के बारे में जनसंचार कार्यक्रमों के प्रभाव का मूल्यांकन–एक हिन्दी भाषी राज्यों में तथा दूसरा अहिन्दी भाषी राज्यों में।

(v) संशोधित राष्ट्रीय क्षय कार्यक्रम के प्रति जागरूकता–एक अन्वेषणात्मक अध्ययन (स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय द्वारा प्रायोजित)

(vi) पर्यावरण और कृषि रसायनों के बारे में निर्देश तलचिन्ह (बैंच मार्क) अध्ययन।

(vii) उत्तर प्रदेश में सद्‌भावना समारोह का अनेक प्रचार माध्यमों द्वारा अभियान--एक मूल्यांकन।

15.4.2. निम्नलिखित अध्ययन जारी हैं :–

(i) अंग्रेजी और हिन्दी के कुछ प्रमुख समाचार-पत्रों में विदेशी समाचारों का प्रकाशन, विशेष रूप से समाचार स्रोतों के उपयोग के बारे में समाचार भेजने की वर्तमान प्रवृति।

(ii) बच्चों पर टेलीविजन का प्रभाव।

(iii) प्रकाशन विभाग की पुस्तकों की बिक्री बढ़ाने में प्रयत्न।

प्रकाशन

15.5. संस्थान ने अपनी त्रैमासिक पत्रिकाएं 'कम्यूनिकेटर' (अंग्रेजी) और 'समाचार माध्यम' (हिन्दी) नियमित रूप से प्रकाशित कीं। स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रमों और समाचार एजेन्सी पत्रकारिता डिप्लोमा पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों ने अपनी शिक्षा संबंधी गतिविधियों से सम्बद्ध प्रयोगशाला पत्रिकाएं प्रकाशित कीं।

ढेंकानाल (उड़ीसा) में भारतीय जनसंचार संस्थान की शाखा

15.6. जनता को जनसंचार की आधारभूत सुविधाओं की जरूरतें पूरी करने के लिए संस्थान ने देश में प्रादेशिक आधार पर अपनी शाखाएं स्थापित करने का निश्चय किया है। इसके अनुसार 14 अगस्त, 1993 को ढेंकानाल में पहली शाखा स्थापित कर दी गई जिससे देश के पूर्वी प्रदेश की जनता की जरूरतें पूरी होंगी। संस्थान ने कोट्टायम (केरल), झाबुआ (मध्य प्रदेश) और दीमापुर (नगालैंड) में भी अपनी शाखाएं खोलने का निश्चय किया है। ये सभी शाखाएं अपने-अपने प्रदेशों की स्थानीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर विकास से सम्बद्ध संचार पर ध्यान देंगी।

सूचना और प्रसारण मंत्रालय

योजना तथा गैर-योजना बजट का विवरण

मांग संख्या 54 - सूचना और प्रसारण मंत्रालय (हजार रुपयों में)

क्रम सं.	माध्यम इकाई का नाम	बजट अनुमान 1994-95			संशोधित अनुमान 1994-95			बजट अनुमान 1995-96		
		योजना	गैर-योजना	योग	योजना	गैर-योजना	योग	योजना	गैर-योजना	योग
	राजस्व विभाग									
	मुख्य शीर्ष-2251 - सचिवालय-सामाजिक सेवाएं									
1.	मुख्य सचिवालय	-	4,07,24	4,07,24	-	4,37,82	4,37,82	-	4,49,42	4,49,42
2.	समेकित वेतन और लेखा कार्यालय	3,00	1,78,76	1,81,76	6,00	1,90,18	1,96,18	6,00	2,07,58	2,13,58
	योग :	3,00	5,86,00	5,89,00	6,00	6,28,00	6,34,00	6,00	6,57,00	6,63,00
	मुख्य शीर्ष : 2205 - कला एवं संस्कृति सिनेमेटोग्राफिक फिल्मों का सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए प्रमाणीकरण									
3.	केन्द्रीय फिल्म प्रमाणीकरण बोर्ड	12,00	67,75	79,75	12,00	69,85	81,85	25,00	78,75	1,03,75
4.	फिल्म प्रमाणीकरण अपील न्यायाधिकरण	-	3,25	3,25	-	3,15	3,15	-	3,25	3,25
	योग :	12,00	71,00	83,00	12,00	73,00	85,00	25,00	82,00	1,07,00
	मुख्य शीर्ष - 2220 - सूचना और प्रचार									
5.	फिल्म प्रभाग	1,02,00	16,94,01	17,96,01	1,59,00	16,64,66	18,23,66	1,91,00	16,78,78	18,69,78
6.	फिल्म समारोह निदेशालय	2,45,00	1,79,00	4,24,00	2,37,00	1,94,26	4,31,26	2,89,00	2,05,93	4,94,93
7.	भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार	72,00	34,99	1,06,99	82,35	36,89	1,19,24	1,98,00	42,00	2,40,00

Contd...

क्रम सं.	माध्यम इकाई का नाम	बजट अनुमान 1994-95			संशोधित अनुमान 1994-95			बजट अनुमान 1995-96		
		योजना	गैर-योजना	योग	योजना	गैर-योजना	योग	योजना	गैर-योजना	योग
8.	भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान, कलकत्ता	5,00	-	5,00	2,00	-	2,00	50,00	-	50,00
9.	राष्ट्रीय बाल एवं युवा चलचित्र केन्द्र को अनुदान सहायता	1,50,00	10,00	1,60,00	1,00,00	5,00	1,05,00	1,50,00	10,00	1,60,00
10.	भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान को अनुदान सहायता	5,50,00	2,69,00	8,19,00	5,50,00	2,89,00	8,39,00	6,54,00	3,04,00	9,58,00
11.	फिल्म समितियों को अनुदान सहायता	3,00	-	3,00	3,00	-	3,00	3,00	-	3,00
12.	गवेषणा, संदर्भ और प्रशिक्षण प्रभाग	-	39,31	39,31	-	42,87	42,87	-	51,36	51,36
13.	भारतीय जनसंचार संस्थान को अनुदान सहायता	1,10,00	1,24,69	2,34,69	1,10,00	1,29,33	2,39,33	4,00,00	1,35,90	5,35,90
14.	विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय	30,00	27,24,10	27,54,10	1,19,00	31,00,76	32,19,76	30,00	33,22,00	33,52,00
15.	पत्र सूचना कार्यालय	40,00	7,74,44	8,14,44	40,50	8,38,82	8,79,32	91,00	9,10,00	10,01,00
16.	भारतीय प्रेस परिषद	-	44,34	44,34	-	50,00	50,00	-	52,00	52,00
17.	पी.टी.आई. को ऋण के ब्याज पर सबसिडी	-	1,43	1,43	-	1,43	1,43	-	95	95
18.	व्यावसायिक तथा विशेष सेवाओं के लिए भुगतान	-	38,22	38,22	-	30,00	30,00	-	33,00	33,00
19.	क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय	67,00	10,15,00	10,82,00	1,43,00	10,34,00	11,77,00	1,15,00	11,26,00	12,41,00
20.	गीत और नाटक प्रभाग	1,26,00	6,63,00	7,89,00	1,76,00	6,63,00	8,39,00	1,26,00	7,61,00	8,87,00
21.	प्रकाशन विभाग	30,00	6,39,69	6,69,69	15,15	6,09,48	6,24,63	30,00	6,36,39	6,66,39
22.	रोजगार समाचार	-	7,61,51	7,61,51	-	7,37,90	7,37,90	-	7,64,59	7,64,59
23.	भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक	5,00	82,87	87,87	7,00	82,00	89,00	8,00	91,00	99,00
24.	फोटो प्रभाग	12,00	1,22,40	1,34,40	12,00	1,27,60	1,39,60	10,00	1,37,10	1,47,10
25.	संचार के विकास के अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम के लिए अंशदान	-	16,00	16,00	-	10,00	10,00	-	10,00	10,00
	योग : मुख्य शीर्ष- 2220	15,47,00	92,34,00	1,07,81,00	17,56,00	96,47,00	114,03,00	23,45,00	102,72,00	1,26,17,00
	योग : राजस्व खण्ड	15,62,00	98,91,00	1,14,53,00	17,74,00	103,48,00	121,22,00	23,76,00	110,11,00	1,33,87,00

क्रम सं.	माध्यम इकाई का नाम	बजट अनुमान 1994-95			संशोधित अनुमान 1994-95			बजट अनुमान 1995-96		
		योजना	गैर-योजना	योग	योजना	गैर-योजना	योग	योजना	गैर-योजना	योग
	पूंजी खंड **मुख्य शीर्ष - 4220 - सूचना और प्रचार के लिए पूंजी परिव्यय**									
(अ)	**मशीनें और उपकरण**									
	1. फिल्म प्रभाग, बंबई के लिए उपकरणों की खरीद	1,65,00	-	1,65,00	1,81,00	-	1,81,00	2,00,84	-	2,00,84
	2. भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार, पुणे के लिए उपकरणों की खरीद	15,00	-	15,00	55,00	-	55,00	-	-	-
	3. पत्र सूचना कार्यालय के लिए उपकरणों की खरीद	90,00	-	90,00	90,00	-	90,00	50,00	-	50,00
	4. क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय के लिए उपकरणों की खरीद	28,00	-	28,00	28,00	-	28,00	15,00	-	15,00
	5. गीत और नाटक प्रभाग के लिए उपकरणों की खरीद	14,00	-	14,00	14,00	-	14,00	14,00	-	14,00
	6. फोटो प्रभाग के लिए उपकरणों की खरीद	88,00	-	88,00	44,00	-	44,00	40,00	-	40,00
(आ)	**भवन**									
	7. फिल्म प्रभाग की बहुमंजिला इमारत का मुख्य निर्माण कार्य	33,00	-	33,00	55,00	-	55,00	66,16	-	66,16
	8. भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार के कार्यालय भवन का मुख्य निर्माण कार्य	3,00	-	3,00	5,00	-	5,00	42,00	-	42,00
	9. फिल्म समारोह परिसर में नये निर्माण तथा पुराने में परिवर्तन संबंधी प्रमुख निर्माण कार्य	55,00	-	55,00	55,00	-	55,00	64,00	-	64,00

क्रम सं.	माध्यम इकाई का नाम	बजट अनुमान 1994-95			संशोधित अनुमान 1994-95			बजट अनुमान 1995-96		
		योजना	गैर-योजना	योग	योजना	गैर-योजना	योग	योजना	गैर-योजना	योग
	10. कलकत्ता में फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान की स्थापना – भूमि अधिग्रहण तथा भवन निर्माण	5,63,00	-	5,63,00	2,63,00	-	2,63,00	4,00,00	-	4,00,00
	11. सूचना भवन परिसर - प्रमुख निर्माण कार्य	80,00	-	80,00	37,17	-	37,17	2,00,00	-	2,00,00
	12. क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय के अन्तर्गत कार्यालय तथा आवासीय भवनों का निर्माण--प्रमुख निर्माण कार्य	5,00	-	5,00	20,00	-	20,00	5,00	-	5,00
	13. पत्र सूचना कार्यालय के लिए राष्ट्रीय प्रेस केन्द्र व लघु माध्यम केन्द्र की स्थापना करना	20,00	-	20,00	39,83	-	39,83	5,89,00	-	5,89,00
(इ)	**अन्य पूंजी निवेश**									
	14. दूसरे राष्ट्रीय टेलीविजय चैनल के संचालन के लिए प्रस्तावित संयुक्त क्षेत्र की कम्पनियों में पूंजीनिवेश	1,47,00	-	1,47,00	5,00	-	5,00	-	-	-
	15. राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम	1,00,00	-	1,00,00	1,00,00	-	1,00,00	75,00	-	75,00
	16. दक्षिण अफ्रीका सरकार के साथ 'मेकिंग ऑफ महात्मा' फीचर फिल्म का संयुक्त निर्माण	2,50,00	-	2,50,00	1,50,00	-	1,50,00	-	-	-
	17. ब्राडकास्टिंग इंजीनियरिंग कंसल्टेंट (इंडिया) लिमिटेड	-	-	-	-	-	-	-	25,00	25,00
	कुल : मुख्य शीर्ष - 4220	16,56,00	-	16,56,00	11,42,00	-	11,42,00	17,86,00	-	17,86,00

क्रम सं.	माध्यम इकाई का नाम	बजट अनुमान 1994-95			संशोधित अनुमान 1994-95			बजट अनुमान 1995-96		
		योजना	गैर-योजना	योग	योजना	गैर-योजना	योग	योजना	गैर-योजना	योग
	मुख्य शीर्ष - 6220 - सूचना और प्रचार के लिए ऋण सार्वजनिक क्षेत्र के तथा अन्य उपक्रमों को ऋण									
18.	राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लिमिटेड	1,00,00	-	1,00,00	1,00,00	-	1,00,00	75,00	-	75,00
19.	ब्राडकास्टिंग इंजीनियरिंग कंसल्टेंट (इंडिया) लिमिटेड	-	-	-	-	-	-	25,00	-	25,00
	कुल : मुख्य शीर्ष 6220	1,00,00	-	1,00,00	1,00,00	-	1,00,00	1,00,00	-	1,00,00
	कुल : पूंजी खंड	17,56,00	-	17,56,00	12,42,00	-	12,42,00	18,86,00	-	18,86,00
	कुल : मांग संख्या 54	33,18,00	98,91,00	1,32,09,00	30,16,00	103,48,00	133,64,00	42,62,00	1,10,11,00	1,52,73,00

मांग संख्या 56 - प्रसारण सेवाएं

राजस्व (हजार रुपयों में)

क्रम सं.	माध्यम इकाई का नाम	बजट अनुमान 1994-95			संशोधित अनुमान 1994-95			बजट अनुमान 1995-96		
		योजना	गैर-योजना	योग	योजना	गैर-योजना	योग	योजना	गैर-योजना	योग
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
राजस्व खंड										
मुख्य शीर्ष 2221										
आकाशवाणी										
1.	निर्देशन तथा प्रशासन	32200	92300	124500	27900	94400	122300	31100	96900	128000
2.	परिचालन तथा रख-रखाव	134100	392200	526300	126800	436300	563100	108600	459000	567600
3.	विज्ञापन प्रसारण सेवा	2100	178200	180300	200	188600	188800	100	211900	212000
4.	कार्यक्रम सेवा	353900	1249900	1603800	372800	1367600	1740400	388500	1434300	1822800
5.	समाचार सेवा प्रभाग	2500	111100	113600	1100	163300	164400	1600	164800	166400
6.	श्रोता अनुसंधान	5900	7700	13600	4800	7700	12500	8100	8400	16500
7.	विदेश प्रसारण सेवा	300	26800	27100	100	28900	29000	100	31400	31500
8.	योजना और विकास	23900	52300	76200	22100	53100	75200	20900	54900	75800
9.	अनुसंधान तथा प्रशिक्षण	11200	24700	35900	10300	25800	36100	11000	27300	38300
10.	उचन्त	-	600000	600000	0	682500	682500	0	607200	607200
11.	एन.एल.एफ. में हस्तांतरण	-	401600	401600	0	464700	464700	0	538900	538900
12.	अन्य व्यय	-	5100	5100	0	17100	17100	0	34200	34200
	कुल आकाशवाणी (राजस्व)	566100	3141900	3708000	566100	3530000	4096100	570000	3669200	4239200
दूरदर्शन										
1.	निर्देशन तथा प्रशासन	2000	75700	77700	1700	79000	80700	1900	84400	86300
2.	परिचालन तथा रख-रखाव	189500	622300	811800	189500	600800	790300	276100	657600	933700

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
3.	वाणिज्यिक सेवाएं	-	572600	572600	0	572600	572600	0	693000	693000
4.	कार्यक्रम सेवाएं	657200	1182600	1839800	657800	1358900	2016700	721600	1668800	2390400
5.	दर्शक अनुसंधान	500	7000	7500	400	6500	6900	400	6900	7300
6.	उचन्त	-	871700	871700	0	689900	689900	0	749200	749200
7.	आकाशवाणी और दूरदर्शन वाणिज्यिक कोश को हस्तांतरण	-	3144600	3144600	0	3126700	3126700	0	3790700	3790700
8.	अन्य व्यय	200	3000	3200	0	22700	22700	0	40500	40500
	कुल : दूरदर्शन (राजस्व)	849400	6479500	7328900	849400	6457100	7306500	1000000	769100	8691100
	कुल : प्रमुख शीर्ष 2221	1415500	9621400	11036900	1415500	9987100	11402600	1570000	11360300	12930300
	कुल : राजस्व खंड	1415500	9621400	11036900	1415500	9987100	11402600	1570000	11360300	12930300
	पारित	1415500	9620800	11036900	1415500	9986400	11401900	1570000	11359700	12929700
	भारित	-	600	600	0	700	700	-	600	600
पूंजी खंड मुख्य शीर्ष 4221										
1.	मशीनें तथा उपकरण	5300	-	5300	2000	0	2000	8400	0	8400
2.	स्टूडियो	179100	500	179600	180600	800	181400	200700	3700	204400
3.	ट्रांसमीटर	316600	-	316600	316600	0	316600	375900	0	375900
4.	उचन्त	-	47000	47000	0	45500	45500	0	45000	45000
5.	अन्य खर्च (स्थापना तथा विभिन्न निर्माण योजनाएं)	256100	-	256100	257900	0	257900	195000	0	195000
	कुल : आकशवाणी	757100	47500	804600	757100	46300	803400	780000	48700	828700
	पारित	755100	47500	802600	755100	46300	801400	778000	48700	826700
	भारित	2000	-	2000	2000	0	2000	2000	0	2000

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
दूरदर्शन										
1.	मशीनें तथा उपकरण	8200	-	8200	3800	0	3800	7500	0	7500
2.	स्टूडियो	427400	500	427900	278300	0	278300	729300	0	729300
3.	ट्रांसमीटर	1033300	-	1033300	1133600	0	1133600	722300	0	722300
4.	उचन्त	-	43400	43400	0	40500	40500	0	60800	60800
5.	अन्य व्यय (स्थापना तथा विविध निर्माण)	241700	-	241700	294900	0	294900	678700	200	678900
	योग : दूरदर्शन	1710600	43900	1754500	1710600	40500	1751100	2137800	61000	2198800
	पारित	1706600	43900	1750500	1704400	40500	1744900	2133800	61000	2194800
	भारित	4000	-	4000	6200	0	6200	4000	0	4000
	कुल : मुख्य शीर्ष -4221	2467700	91400	2559100	2467700	86800	2554500	2917800	109700	3027500
	कुल : पूंजी खंड	2467700	91400	2559100	2467700	86800	2554500	2917800	109700	3027500

मंत्रालय में बकाया लेखा-परीक्षा रिपोर्टों की सूची

फाइल नं.	रिपोर्ट का नाम	अनुच्छेद का संक्षिप्त विवरण	टिप्पणियां
जी. 25018/10/91-बी.एंड ए.	1991 वर्ष की सी.ए.जी. (लेखा नियंत्रक एवं महा-लेखा पीरक्षक) की रिपोर्ट, न.–13	अनुच्छेद-6, एशियाड खेल परिसर के भोजन कक्ष और बाजार परिसर की खरीद –दूरदर्शन	कार्रवाई रिपोर्ट डी.ए.सी.आर. को भेजी जा रही है।
जी. 25018/10/91-बी.एंड ए.	1991 वर्ष की सी.ए.जी. की रिपोर्ट, न.–13	अनुच्छेद-8, दूरदर्शन द्वारा दी गई राशि में अवरोध	कार्रवाई रिपोर्ट पर कार्य चल रहा है।
जी. 25018/10/91-बी.एंड ए.	1991 वर्ष की सी.ए.जी. की रिपोर्ट, न.–13	अनुच्छेद-9, आकाशवाणी (सी.सी.डब्ल्यू) द्वारा डीज़ल जेनेटर शुरू न करना	कार्रवाई रिपोर्ट पर कार्य चल रहा है।
जी. 25018/4/92-बी.एंड ए.	31-3-91 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए सी.ए.जी. की रिपोर्ट (1992 की नं.–6	5.1 लेखा का अनुवर्तमन-एन.एफ.डी.सी.	कार्रवाई रिपोर्ट पर कार्य चल रहा है।
जी. 25018/4/92-बी.एंड ए.	वर्ष के लिए सी.ए.जी. की रिपोर्ट	5.2 दूरदर्शन के अप्रयुक्त मंहगे उपकरण	कार्रवाई रिपोर्ट पर कार्य चल रहा है।
जी. 25018/4/92-बी.एंड ए.	13.3.91 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए सी.ए.जी. की रिपोर्ट (1992 की नं.–6	5.3 सिनेमाघरों से प्राप्त बकाया-राशि--फिल्म प्रभाग	डी.ए.सी.आर. को विवरण भेजे जा रहे हैं।
जी. 25018/4/92-बी.एंड.ए.	31.3.91 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए सी.ए.जी. की रिपोर्ट (1992 की न.–6	5.4 कार्यस्थल को सौंपने में असफलता पर परिहार्य अतिरिक्त खर्च–आकाशवाणी	कार्रवाई रिपोर्ट पर कार्य चल रहा है।
जी. 25018/4/92-बी.एंड.ए.	31.3.91 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए सी.ए.जी. की रिपार्ट (1992 की नं.–6)	5.5 कार्यस्थल को सौंपने में असफलता पर अतिरिक्त खर्च–आकाशवाणी	कार्रवाई रिपोर्ट पर कार्य चल रहा है।
जी. 25018/5/93-बी.एंड.ए.	31.3.92 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए सी.ए.जी. की रिपोर्ट (1993 की नं.–6)	3.2 अतिरिक्त अनुबंधात्मक भुगतान–दूरदर्शन	कार्रवाई रिपोर्ट मिलान के लिए डी.ए.सी.आर. को भेजी गई है।
जी. 25018/5/93-बी.एंड.ए.	31.3.92 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए सी.ए.जी. की रिपोर्ट (1993 की नं.–6)	3.3 निष्फल व्यय--दूरदर्शन	-वही-

जी. 25018/5/93-बी.एंड.ए.	31.3.92 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए सी.ए.जी. की रिपोर्ट (1993 की नं.–6)	3.4 लेखा-परीक्षा की रिपोर्ट पर आगे की कार्रवाई	कार्रवाई रिपोर्ट मिलान के लिए डी.ए.सी.आर. को भेजी गई है।
		लेखा-परीक्षा की रिपोर्ट के शीर्षक	
		1991 के 13 का अनुच्छेद-6 –दूरदर्शन	कार्रवाई रिपोर्ट पर कार्य चल रहा है।
		1991 के 13 का अनुच्छेद-8 --दूरदर्शन	-वही-
		1991 के 13 का अनुच्छेद-9 –आकाशवाणी (सी.सी.डब्ल्यू)	-वही-
जी.25018/4/93-बी.एंड.ए.	31.3.92 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए सी.ए.जी. की रिपोर्ट (1993 की नं.–3	31.1 पोर्टफोलियो प्रबंध योजना में निवेश–एन.एफ.डी.सी.	-वही-
		13.2 परिहार्य व्यय--एन.एफ.डी.सी.	-वही-
जी. 25018/8/94-बी.एंड.ए.	31.3.94 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए सी.ए.जी. की रिपोर्ट (1994 की नं.-11)	23 सांविधिक शुल्क की अप्राप्ति--पी.सी.आई.	कार्रवाई रिपोर्ट डी.ए.सी.आर.को भेजी गई है।
जी. 25018/7/94-बी.एंड.ए.	31.3.94 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए सी.ए.जी. की रिपोर्ट (1994 की नं.–2)	5.1 रोजगार समाचार	कार्रवाई रिपोर्ट डी.ए.सी.आर. को भेजी गई है।
		5.2 बेकार टी.वी. कैमरा--दूरदर्शन	कार्रवाई रिपोर्ट पर कार्य चल रहा है।
		5.3 निष्क्रिय लाइनों के लिए किराए का परिहार्य व्यय--आकाशवाणी	-वही-
		5.4 कंप्यूटरों का बेकार होना--पी.आई.बी.	-वही-
		5.5 टेंजीसिने मशीन का प्रबंध--दूरदर्शन	-वही-
		5.6 थियेटर मालिकों से बकाया किराए की वसूली न होने पर--फिल्म प्रभाग	कार्रवाई रिपोर्ट का मसौदा डी.ए.सी.आर. को भेजा गया है।
		5.7 परिक्रमा रेस्तरां पर व्यर्थ निवेश–दूरदर्शन	कार्रवाई रिपोर्ट पर कार्य चल रहा है।
		5.8 लेखा-परीक्षा रिपोर्ट पर अगली कार्रवाई	
		1991 का 13, अनुच्छेद-6 --दूरदर्शन	

1991 का 13, अनुच्छेद-8
—दूरदर्शन

1991 का 13, अनुच्छेद-9
आकाशवाणी, सी.सी.डब्ल्यू.

1992 का 6, अनुच्छेद-5.2
—दूरदर्शन

1992 का 6, अनुच्छेद-5.4
—आकाशवाणी

1992 का 6, अनुच्छेद-5.5
—आकाशवाणी

1993 का 6, अनुच्छेद-3.1
—आकाशवाणी

आकाशवाणी

वर्ष 1995-96 में चालू होने वाले आकाशवाणी केन्द्र और अन्य परियोजनाएं

प्रसारण केन्द्र

1.	हिसार	स्थानीय रेडियो केन्द्र
2.	अलीगढ़	2×3 किलोवाट एफ.एम. ट्रांसमीटर (रिले)
3.	धुबरी	2×3 किलोवाट एफ.एम. ट्रांसमीटर (रिले)
4.	आसनसोल	2×3 किलोवाट एफ.एम. ट्रांसमीटर (रिले)
5.	चूड़ाचांदपुर	स्थानीय रेडियो स्टेशन
6.	कोडाइकनाल	2×3 किलोवाट एफ.एम. ट्रांसमीटर एम.पी.स्टू. और स्टाफ क्वार्टर
7.	पुरी (एल.आर.एस.)	3 किलोवाट एफ.एम. ट्रांसमीटर और एम.पी. स्टूडियो
8.	चमोली	1 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर, स्टूडियो और स्टाफ क्वार्टर
9.	कारगिल	1 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर, स्टू. और स्टाफ क्वार्टर
10.	जीरो (एल.आर.एस.)	1 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर, एम.पी. स्टूडियो
11.	डिफ़ू (एल.आर.एस.)	1 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर, एम.पी. स्टूडियो और स्टाफ क्वार्टर
12.	तेजपुर	2×10 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर, स्टूडियो और स्टाफ क्वार्टर
13.	जोरांदा (एल.आर.एस.)	1 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर, एम.पी. स्टूडियो और स्टाफ क्वार्टर

अन्य परियोजनाएं

1.	जोधपुर (वि.भा.)	2×3 किलोवाट एफ.एम. ट्रांसमीटर
2.	रांची (वि.भा.)	2×3 किलोवाट एफ.एम. ट्रांसमीटर
3.	गुवाहाटी (रा.चै.)	2×3 किलोवाट एफ.एम. ट्रांसमीटर
4.	गुवाहाटी (वि.प्र.से.)	2×5 किलोवाट एफ.एम. ट्रांसमीटर
5.	अहमदाबाद (वि.भा.)	2×5 किलोवाट एफ.एम. ट्रांसमीटर
6.	जबलपुर (वि.प्र.से.)	2×5 किलोवाट एफ.एम. ट्रांसमीटर
7.	कोयम्बटूर (वि.प्र.से.)	2×5 किलोवाट एफ.एम. ट्रांसमीटर
8.	विशाखापत्तनम	2×5 किलोवाट एफ.एम. ट्रांसमीटर
9.	कलकत्ता	स्टूडियो का नवीनीकरण
10.	त्रिवेन्द्रम	टाइप 1 स्टूडियो

11.	दिल्ली (वि.भा.)	20 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
12.	दिल्ली (फेस II)	स्टूडियो का नवीनीकरण
13.	दिल्ली (रा.चै.)	20 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
14.	जालंधर	200 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
15.	गोरखपुर	100 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
16.	गुवाहाटी	100 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
17.	रांची	50 किलोवाट शार्टवेव ट्रांसमीटर
18.	जेपोर	50 किलोवाट शार्टवेव ट्रांसमीटर
19.	आइजोल	10 किलोवाट शार्टवेव ट्रांसमीटर
20.	कलकत्ता	200 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
21.	हैदराबाद	200 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
22.	अल्लैप्पै	200 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
23.	पांडिचेरी	20 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर

वि.प्र.से. - विज्ञापन प्रसारण सेवा

रा.चै. - राष्ट्रीय चैनल

वि.भा. - विविध भारती सेवा

आकाशवाणी

विविध भारती और प्राथमिक चैनल पर विज्ञापनों से प्राप्त राजस्व

वर्ष	विविध भारती	प्राथमिक चैनल से प्राप्त सकल राजस्व		
		प्रथम चरण	द्वितीय चरण	कुल
1975-76	6,25,87,679	—	—	6,25,87,679
1976-77	6,85,54,222	—	—	6,85,54,222
1977-78	7,82,06,252	—	—	7,82,06,252
1978-79	8,90,75,436	—	—	8,90,75,436
1979-80	10,31,43,702	—	—	10,31,43,702
1980-81	12,51,32,824	—	—	12,51,32,824
1981-82	15,23,44,716	—	—	15,23,44,716
1982-83	15,39,89,422	72,64,000	—	16,12,53,422
1983-84	16,00,34,250	42,30,500	—	16,42,64,750
1984-85	15,93,53,046	66,78,500	—	16,60,31,546
1985-86	17,54,89,035	50,06,275	2,13,84,761	20,22,80,071
1986-87	17,71,77,765	1,06,68,575	5,20,92,195	23,99,38,535
1987-88	19,26,24,082	88,13,025	8,51,64,751	28,66,01,858
1988-89	21,99,92,445	84,81,675	9,60,46,546	32,45,20,666
1989-90	23,72,28,116	68,02,372	10,59,36,265	35,06,66,753
1990-91	25,25,09,742	64,71,500	13,40,37,024	39,30,18,266
1991-92	34,89,00,000	83,62,000	17,00,38,000	52,73,00,000
1992-93	37,66,00,000	1,38,00,000	19,87,00,000	58,91,00,000
1993-94	36,96,00,000	1,93,00,000	25,46,00,000	64,35,00,000

वर्ष 1994-95 में चालू होने वाली दूरदर्शन परियोजनाएं
(1.4.94 से 22.2.1995 तक)

क्रम. सं.		राज्य	परियोजनाएं
1.	आन्ध्र प्रदेश	अल्प शक्ति ट्रांसमीटर	भीमावरम
			कुप्पम
			अल्लागडा
			तंदुर
			कावाली
			मदनापल्ली
			मंडास्सा
			हिन्दुपुर
			विशाखापत्तनम
			निर्मल
			मेडक
			नागर कुरनूल
			यमनगन्नूर
			वानापार्थी
			मधीरा
		अतिअल्प शक्ति ट्रांसमीटर	पडेरु
			श्री सेलम
			इछापुरम
2.	अरुणाचल प्रदेश	अल्प शक्ति ट्रांसमीटर	ईटानगर
3.	असम	अल्प शक्ति ट्रांसमीटर	बोंगईगांव
			उत्तर लखीमपुर
			हाफलांग
			गुवाहाटी*
4.	बिहार	अल्प शक्ति ट्रांसमीटर	औरंगाबाद
			हजारीबाग
			लोहारडागा
			गोड्डा
			नवादा
			रक्सोल
			गुमला
		पी.जी.एफ.	मुज्जफरपुर
5.	गुजरात	अल्प शक्ति ट्रांसमीटर	धारंगधरा
			महुवा
			रापार
			खम्बात

			पालीताना
			मंगरोल (जुनागढ़ जिला)
			संजेली
			डांडी
			गांधीनगर*
		अतिअल्प शक्ति ट्रांसमीटर	देवगढ़ बरिया
		उच्च शक्ति ट्रांसमीटर	अहमदाबाद*
6.	हरियाणा	अल्प शक्ति ट्रांसमीटर	रेवाड़ी
			मेहम
7.	हिमाचल प्रदेश	उच्च शक्ति ट्रांसमीटर	शिमला
		अल्प शक्ति ट्रांसमीटर	शिमला*
		अतिअल्प शक्ति ट्रांसमीटर	अझू किला
8.	जम्मू और कश्मीर	अल्प शक्ति ट्रांसमीटर	रियासी
			श्रीनगर*
			जम्मू*
		अतिअल्प शक्ति ट्रांसमीटर	पुंछ
			गुरेज़ (देवार)
			साम्बा
9.	कर्नाटक	पी.जी.एफ.	गुलबर्गा
		अल्प शक्ति ट्रांसमीटर	पावागडा
			गंगावटी
			रामादुर्ग
			मुडीगेरे
			बंगलौर*
		अतिअल्प शक्ति ट्रांसमीटर	सकलेशपुर
10.	केरल	उच्च शक्ति ट्रांसमीटर	कालीकट
		अल्प शक्ति ट्रांसमीटर	पुनालूर
			त्रिवेन्द्रम*
11.	मध्य प्रदेश	अल्प शक्ति ट्रांसमीटर	जावरा
			अलीराजपुर
			दतिया
			भोपाल*
			बीजारपुर
			लोहार
		अतिअल्प शक्ति ट्रांसमीटर	परसिया
12.	महाराष्ट्र	अल्प शक्ति ट्रांसमीटर	हिंगनघाट
			अकलुज
			कंकौली
			उमेरगा
			संगमनेर
			चिपलून

			वानी
			मोरशी
		अतिअल्प शक्ति ट्रांसमीटर	जुन्नार
			करजात
			चिकलधारा
13.	उड़ीसा	उच्च शक्ति ट्रांसमीटर	कटक*
		अल्प शक्ति ट्रांसमीटर	अथामलिक
			बौध
			मलकानगीरी
			भुबन
			लुथेरपुंक
			रेधाखोल
			तलचेर
			पारादीप
			बानापुर
			राजरानापुर
			खंडापारा
			रैतंगपुर
			जी. उदयगिरी
			बालीगुरहा
			भुवनेश्वर*
			नुआपारा
			पल्लाहारा
		अतिअल्प शक्ति ट्रांसमीटर	पटनागढ़
			बोनाई
14.	पंजाब	अल्प शक्ति ट्रांसमीटर	जालंधर*
15.	राजस्थान	अल्प शक्ति ट्रांसमीटर	गंगापुर
			बसावा
			चिरावा
			रतनगढ़
			श्रीडूंगरगढ़
			सुजानगढ़
			भदरा
			रावतसर
			जयपुर*
			बारोन
			कोटा*
		अतिअल्प शक्ति ट्रांसमीटर	अमेट
			राजगढ़
			देवगढ़
			कुम्बलगढ़
			चौमाहला

16.	सिक्किम	उच्च शक्ति ट्रांसमीटर	गंगटोक
		अल्प शक्ति ट्रांसमीटर	गंगटोक*
17.	तमिलनाडु	उच्च शक्ति ट्रांसमीटर	रामेश्वरम्
		अल्प शक्ति ट्रांसमीटर	राजापलयम्
			अर्काट
			उधागमंडलम
			पुदुकोट्टाई
		स्टूडियो	मद्रास (दूसरा चैनल)
18.	उत्तर प्रदेश	अल्प शक्ति ट्रांसमीटर	मोहम्मदाबाद
			सिकन्दरपुर
			चम्पावत
			कोटद्वार
			इटाह
		उच्च शक्ति ट्रांसमीटर	मऊ
19.	पश्चिम बंगाल	अल्प शक्ति ट्रांसमीटर	रानाघाट
20.	पांडिचेरी	अल्प शक्ति ट्रांसमीटर	कराइकल
21.	दिल्ली	अल्प शक्ति ट्रांसमीटर	दिल्ली (लोक सभा)
		दिल्ली (राज्य सभा)	
22.	लक्षद्वीप	अल्प शक्ति ट्रांसमीटर	कावारत्ती
		अतिअल्प शक्ति ट्रांसमीटर	कावारती*
23.	चंडीगढ़	अल्प शक्ति ट्रांसमीटर	चंडीगढ़*

* - डी.डी. II (मैट्रो चैनल) कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए ट्रांसमीटर

केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड

1994 में प्रमाणित भारतीय फीचर फिल्में

(क्षेत्रवार - भाषावार

क्र.	भाषा	बंबई	कलकत्ता	मद्रास	बैंगलोर	त्रिवेन्द्रम	हैदराबाद	नई दिल्ली	कटक	कुल
1.	तेलुगु	3	-	69	12	5	85	-	-	174
2.	हिंदी	126	1	19	-	1	4	2	2	155
3.	तमिल	2	-	116	4	5	26	-	-	153
4.	कन्नड़	-	-	-	70	-	-	-	-	70
5.	मलयालम	-	-	48	1	19	2	-	-	70
6.	बांग्ला	2	38	4	-	-	-	-	-	44
7.	मराठी	22	-	-	-	-	-	-	-	22
8.	उड़िया	-	1	2	-	-	-	-	11	14
9.	पंजाबी	10	-	-	-	-	-	1	-	11
10.	नेपाली	9	-	1	-	-	-	-	-	10
11.	गुजराती	6	-	-	-	-	-	-	-	6
12.	असमिया	4	1	1	-	-	-	-	-	6
13.	भोजपुरी	3	1	-	-	-	-	-	-	4
14.	अंग्रेजी	2	-	2	-	-	-	-	-	4
15.	राजस्थानी	3	-	-	-	-	-	-	-	3
16.	मणिपुरी	-	2	-	-	-	-	-	-	2
17.	तुलु	-	-	-	2	-	-	-	-	2
18.	बुंदेली	2	-	-	-	-	-	-	-	2
19.	हरियाणवी	1	-	-	-	-	-	-	-	1
20.	कोदावा	-	-	-	1	-	-	-	-	1
	कुल	195	44	262	90	30	117	3	13	754

भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार की सभी महत्वपूर्ण गतिविधियों के आंकड़े

संरक्षण **रील की संख्या**

		16 एम. एम.	35 एम. एम.
1.	फिल्मों की विस्तृत जांच	28	1478
2.	फिल्मों की सामान्य जांच	3696	11,110
3.	सेफ्टी बेस में स्थानांतरित नाइट्रो रील	16 रील	(15,222 फुट)

फिल्म संस्कृति का प्रसार

1.	पुस्तकालय सदस्य (वितरण)	5 (नये)	62 (नवीनीकरण)	67 (सदस्य)
2.	पुस्तकालय सदस्य (वितरण) को दी गई फिल्मों की संख्या		122	
3.	विशेष अवसरों के लिए फिल्मों की आपूर्ति		263	
4.	संयुक्त अवलोकन		160	
5.	फिल्म मूल्यांकन पाठ्यक्रम के लिए फिल्मों की आपूर्ति		166	
6.	शैक्षिक अवलोकन के लिए भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान को फिल्मों की आपूर्ति		215	
7.	संसद सदस्यों के अवलोकनार्थ फिल्मों की आपूर्ति		--	
8.	निर्माताओं/वीडियो प्रतिलिपियों के स्वामित्वधारकों के लिए फिल्मों की आपूर्ति		24	
9.	शोधकर्ताओं को दिखाई गई फिल्मों की संख्या		77 भारतीय 2 विदेशी	
10.	दिखाई गई फिल्मों की संख्या		52	

पत्र सूचना कार्यालय
क्षेत्रीय/शाखा कार्यालय

क्षेत्रीय कार्यालय का नाम	शाखा कार्यालय	कार्यालय तथा सूचना केन्द्र	सूचना कार्यालय	अस्थायी केन्द्र	कुल
		I. उत्तरी क्षेत्र			
चंडीगढ़	1. जम्मू	1. श्रीनगर	-	-	5
	2. शिमला	2. जालंधर			
		II. मध्य क्षेत्र			
भोपाल	1. जयपुर	-	-	-	5
	2. इंदौर				
	3. कोटा				
	4. जोधपुर				
		III. मध्य-पूर्व क्षेत्र			
लखनऊ	1. वाराणसी	-	-	-	4
	2. कानपुर				
	3. पटना				
		IV. पूर्वी क्षेत्र			
कलकत्ता	1. कटक	गंगटोक	पोर्ट ब्लेयर	भुवनेश्वर	6
	2. अगरतला				
		V. पूर्वोत्तर क्षेत्र			
गुवाहाटी	1. शिलांग	1. कोहिमा	एज़ल	-	5
		2. इम्फाल			
		VI. दक्षिण-मध्य क्षेत्र			
हैदराबाद	1. विजयवाड़ा	-	-	-	3
	2. बंगलौर				
		VII. दक्षिण क्षेत्र			
मद्रास	1. मदुरै	-	-	-	4
	2. तिरूअनंतपुरम				
	3. कोचीन				
		VIII. पश्चिमी क्षेत्र			
बम्बई	1. नागपुर	-	-	-	7
	2. पुणे				
	3. पणजी				
	4. अहमदाबाद				
	5. राजकोट				
	6. नांदेड				
कुल 8	23	5	2	1	39

क्षेत्रीय प्रचार

प्रादेशिक और क्षेत्रीय कार्यालय

1. आंध्र प्रदेश

1. कडप्पा
2. गुंटूर
3. हैदराबाद
4. काकीनाडा
5. कुरनूल
6. नलगोंडा
7. मेडक
8. नेल्लोर
9. निज़ामाबाद
10. श्रीकाकुलम
11. विशाखापत्तनम
12. वारंगल

2. अरूणाचल प्रदेश

1. अलांग
2. अनीनी
3. बोमडिला
4. दपोरिजो
5. खोंसा
6. नामपोंग
7. न्यू ईटानगर
8. पासीघाट
9. सेप्पा
10. त्वांग
11. तेजू
12. ज़िरो

3. असम

1. बरपेटा
2. धुबरी
3. डिब्रूगढ़
4. डिफू
5. गुवाहाटी
6. हाफलांग
7. जोरहाट
8. नलबाड़ी
9. उत्तरी लखीमपुर
10. नौगांव
11. सिलचर
12. तेजपुर

4. बिहार(उत्तरी), पटना

1. भागलपुर
2. बेगूसराय
3. छपरा
4. दरभंगा
5. फारबिसगंज
6. किशनगंज
7. मुंगेर
8. मोतीहारी
9. मुजफ्फरपुर
10. पटना
11. सीतामढ़ी

5. बिहार(दक्षिणी), रांची

1. डाल्टनगंज
2. धनबाद
3. दुमका
4. गया
5. गुमला
6. हजारीबाग
7. जमशेदपुर
8. रांची

6. गुजरात

1. अहमदाबाद
2. अहवा
3. भावनगर
4. भुज
5. गोधरा
6. हिम्मतनगर
7. जूनागढ़
8. पालनपुर
9. राजकोट
10. सूरत
11. वडोदरा

7. जम्मू और कश्मीर

1. अनंतनाग
2. बारामूला
3. चदूरा
4. डोडा
5. जम्मू (तवी)
6. कंगन
7. कारगिल
8. कठुआ
9. कुपवाड़ा
10. लेह
11. पुंछ
12. राजौरी
13. शोपियां
14. श्रीनगर
15. उधमपुर

8. कर्नाटक

1. बंगलौर
2. बेलगांव
3. बेल्लारि
4. बीजापुर
5. चित्रदुर्ग
6. धारवाड़
7. गुलबर्गा
8. हासन
9. मंगलूर
10. मैसूर
11. शिमोगा

9. केरल

1. एलेप्पी
2. कण्णूर
3. एर्नाकुलम
4. कैलपट्टा (विनाद)
5. कोट्टायम
6. कोझिकोड
7. मल्लपुरम
8. पालघाट
9. क्विलोन
10. त्रिचूर
11. तिरूअनंतपुरम

10. मध्य प्रदेश (पूर्व), रायपुर

1. अम्बिकापुर
2. बालाघाट
3. बिलासपुर
4. दुर्ग
5. जबलपुर
6. जगदलपुर
7. कांकेर
8. रायपुर
9. रीवां
10. शहडोल
11. सीधी

11. मध्य प्रदेश (पश्चिम), भोपाल

1. भोपाल
2. छतरपुर
3. छिंदवाड़ा
4. गुना
5. ग्वालियर
6. होशंगाबाद
7. इन्दौर
8. झाबुआ
9. मंदसौर
10. सागर
11. उज्जैन

12. महाराष्ट्र और गोवा

1. अहमदनगर
2. अमरावती
3. औरंगाबाद
4. बम्बई
5. चंद्रपुर
7. कोल्हापुर
8. नागपुर
9. नांदेड़
10. नासिक
11. पुणे
12. रत्नागिरी
13. सतारा
14. शोलापुर
15. वर्धा
16. पणजी

13. मेघालय, मिजोरम और त्रिपुरा क्षेत्र

1. अगरतला
2. एज़ल
3. जोवाई
4. कैलाशहर
5. लुंगलेई
6. सेहा
7. शिलांग
8. तुरा
9. उदयपुर

14. नागालैंड और मणिपुर

1. चंदेल
2. चूड़ाचांदपुर
3. इम्फाल
4. कोहिमा
5. मोकोकचुंग
6. मोन
7. तामंगलोंग
8. त्यूनसांग
9. उखरुल

15. उत्तर-पश्चिम

1. अम्बाला
2. अमृतसर
3. चंडीगढ़
4. धर्मशाला
5. फिरोजपुर
6. हमीरपुर
7. हिसार
8. जालंधर
9. काल्पा
10. लुधियाना
11. मंडी
12. नाहन
13. नारौल
14. नई दिल्ली (I)
15. नई दिल्ली (II)
16. पठानकोट
17. रोहतक
18. शिमला

16. उड़ीसा

1. बालासोर
2. बारीपाड़ा
3. बरहामपुरा
4. भवानी पटना
5. भुवनेश्वर
6. कटक
7. ढेंकानाल
8. जेपोर
9. क्योंझर
10. फूलबनी
11. पुरी
12. सम्बलपुर

17. राजस्थान

1. अजमेर
2. अलवर
3. बाड़मेर
4. बीकानेर
5. डूंगरपुर
6. जयपुर
7. जैसलमेर
8. जोधपुर
9. कोटा
10. सवाई माधोपुर
11. सीकर
12. श्रीगंगानगर
13. उदयपुर

18. तमिलनाडु और पांडिचेरी

1. कोयम्बटूर
2. धर्मपुरी
3. मद्रास
4. मदुरै
5. पांडिचेरी
6. रामनाथपुरम्
7. सेलम
8. तंजावूर
9. तिरुचिरापल्ली
10. तिरुनेलवेलि
11. वेल्लोर

19. उत्तर प्रदेश (मध्य-पूर्व), लखनऊ

1. इलाहाबाद
2. आजमगढ़
3. बांदा
5. गोंडा
5. गोरखपुर
6. झांसी
7. कानपुर
8. लखीमपुर-खीरी
9. लखनऊ
10. मैनपुरी
11. रायबरेली
12. सुल्तानपुर
13. वाराणसी

20. उत्तर प्रदेश (उत्तर-पश्चिम), देहरादून

1. आगरा
2. अलीगढ़
3. बरेली
4. देहरादून
5. गोपेश्वर
6. मेरठ
7. मुरादाबाद
8. मुजफ्फरनगर
9. नैनीताल
10. पौड़ी
11. पिथौरागढ़
12. रानीखेत
13. उत्तरकाशी

21. पश्चिम बंगाल (उत्तर), सिलीगुड़ी

1. कूच बिहार
2. गंगटोक
3. जलपाईगुड़ी
4. जोरेथांग
5. कालिंगपोंग
6. मालदा
7. रायगंज
8. सिलीगुड़ी

22. पश्चिम बंगाल (दक्षिण), कलकत्ता

1. बांकुरा
2. बैरकपुर
3. बरहामपुर
4. बर्दवान
5. कलकत्ता
6. कार निकोबार
7. चिनसुरा
8. मेदिनीपुर
9. पोर्ट ब्लेयर
10. रानीघाट
11. कलकत्ता (एफ.डब्ल्यू)